पहले अनन्त ब्रह्माण्ड, फिर एक एक ब्रह्माण्ड में अनन्त भोग्य और अनन्त भोक्ता, एक एक भोक्ताओं के अनन्त अनन्त जन्म, एक एक जन्म के अनन्त कर्म, एक एक कर्मों के विचित्र अनेक फल, इन सबको जानना और यथा योग्य विभाजन करना, ये सभी कार्य जिसके हैं, वह 'मूल-कारण' अल्पज्ञ अल्पशक्तिमान् कैसे हो सकता है? अतः अनन्तकोटि ब्रह्मांण्ड नायक सर्वज्ञ, सर्वशक्ति सम्पन्न, स्वप्रकाश, सदानन्दघन, भगवान् ही समस्त विश्व के मूल और संचालक, पालक, संहारक हैं। विश्व एवं उनके सभी प्राणियों को उनके नियमन में रहना ही पड़ेगा। अतः उनके शासन-शास्त्र तथा तदुक्त नियमों को मानने में ही बुद्धिमानी है।
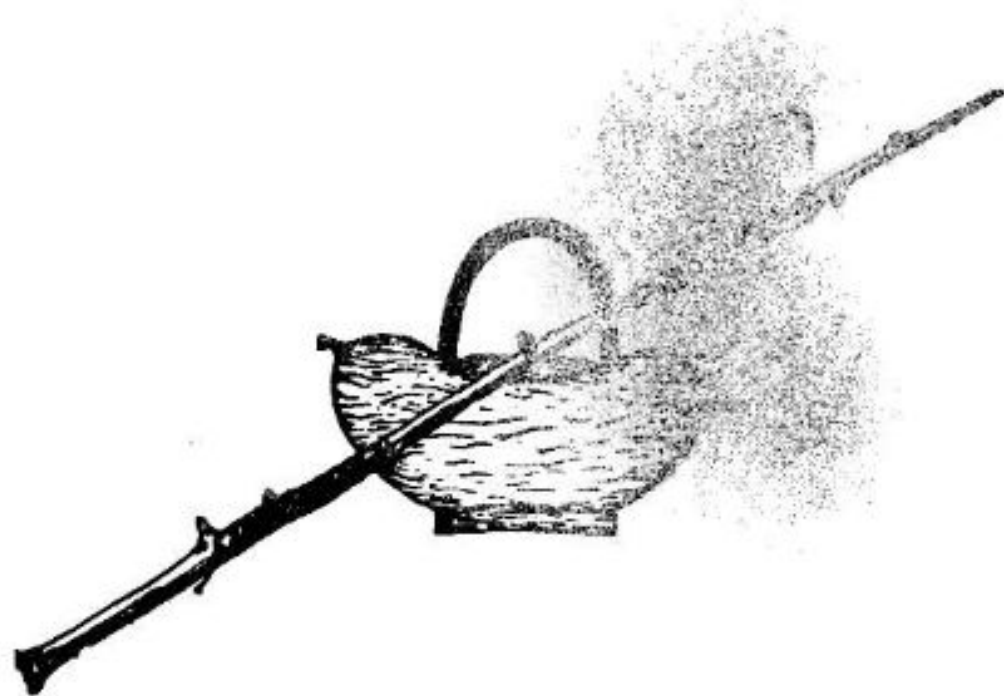
तो कभी द्रविड़ मुनेत्रकषगम जैसे विघटनकारी आन्दोलन एवं द्रविड़िस्तान का विरोध करते हुए यह महात्मा, सुप्त सनातनी धार्मिक जनता को जगाते तथा चेतना का शंखनाद फूंकते भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक धर्म-यात्राएँ करते ही रहे। इन्हीं दिनों स्वामीजी ने पाश्चात्य साहित्य का, विशेष रूप से साम्यवादी साहित्य एवं दर्शन का अध्ययन किया और 'समाजवाद एवं साम्यवाद' पर कई ग्रन्थ लिखकर उनकी भारतीय वैदिक दृष्टिकोण से समालोचना की और जनता के प्रबुद्ध वर्ग की आँखें खोलीं। इनमें सबमें प्रमुख ग्रन्थ मार्क्सवाद एवं रामराज्य' के नाम से प्रकाशित हुआ जिससे वर्तमान समाजवादी जगत् में खलबली मच गयी। सुना गया कि पं० नेहरू ने महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन को इसके खण्डन का कार्य सौंपा उन्होंने कलम उठायी परन्तु प्रमुख कांग्रेसी पत्र हिन्दू[1] का मत था 'कि राहुल जी उस पर सटीक लेखनी नहीं उठा सके। पत्र ने आगे यह भी लिखा कि देश का यह दुर्भाग्य है कि करपात्रीजी सरकार के आलोचक हैं, विरोधी हैं अन्यथा ऐसे ग्रन्थ का लेखक तो 'नोबल' पुरस्कार का पात्र होता।' स्वामी जी ने पुनः 'राहुल जी की भ्रान्ति' नामक पुस्तक लिखकर सभी शंकाओं का समाधान कर दिया।

"रामराज्य परिषद"

सन् ५७ के दूसरे आम चुनाव आये तो स्वामीजी ने रामराज्य परिषद की ओर से सैंकड़ों प्रत्याशी खड़े किये। यद्यपि चुनावी हथकण्डों के प्रति अनुभवहीनता और धन एवं प्रचार साधनों की कमी के कारण आशानुकूल सफलता नहीं मिली किन्तु फिर भी मध्य प्रदेश एवं राजस्थान में अनेक स्थानों पर परिषद की शानदार विजय हुई। इस चुनाव में स्वामीजी ने पुनः भारत भर की धर्म यात्राएँ कीं और सनातनी समाज में नवचेतना भरने का प्रयत्न किया।

"हिन्दी रक्षा"

जून १६५७ में पंजाब में 'हिन्दी रक्षा आन्दोलन' चला। स्वामीजी ने तुरन्त घोषणा की कि 'पंजाबी गुरुमुखी का हम आदर करते हैं परन्तु उसे बलात् किसी पर लादा नहीं जा सकता' और अन्ततः स्वामीजी ने ३०१ सत्याग्रहियों एवं लगभग १५०० प्रदर्शनकारियों के साथ पंजाब के सचिवालय पर सत्याग्रह किया। इनके साथ अखिल भारतीय रामराज्य परिषद के प्रधान स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज तथा अ. भा. धर्मसंघ के कार्यकारी प्रधान श्री स्वामी परमानन्दसरस्वतीजी ने भी सत्याग्रह में भाग लिया। कहते हैं कि उस दिन तक के जत्थों में वह सबसे बड़ा जत्था था। स्वामीजी ने देश भर में घूम-घूमकर हिन्दी रक्षा आन्दोलन को सफल बनाने का प्रचार किया और उससे प्रेरित

---

१. मद्रास से प्रकाशित दैनिक 'हिन्दू'

होकर सनातनी जगत् ने इस आन्दोलन में पूर्ण रूप से सहयोग दिया। हिन्दू जनता ने दलगत राजनीति से ऊपर उठकर इस आन्दोलन को सफल बनाया।

"वैदिक शाखा सम्मेलन"

नास्तिकवाद एवं बौद्धदर्शन के बढ़ते हुए सरकार द्वारा संरक्षित प्रचार को देखते हुए स्वामीजी ने वैदिक धर्म की पुनः प्रतिष्ठा के लिये एक और प्रयत्न किया। आपने कानपुर में जगद्गुरू शङ्कराचार्य श्री स्वामी कृष्ण बोधाश्रमजी महाराज ज्योतिष्पीठ की अध्यक्षता में २ नवम्बर ५७ से १० नवम्बर ५७ तक सर्व वैदिक शाखा सम्मेलन का आयोजन कराया। सनातनी, आर्य समाजों, तथा ईसाई सभी विद्वानों ने इसमें भाग लिया और शास्त्रार्थ द्वारा १६ वैदिक विषय एवं सिद्धान्तों को निर्णीत करके उनकी घोषणा की गयी। कहते हैं कि दिल्ली यज्ञ से उक्त सम्मेलन तक उपलब्ध वैदिक शाखाओं में से दो और लुप्त हो चुकी थीं। देश भर के वैदिक विद्वानों ने इसमें भाग लिया। यह सम्मेलन सचमुच ही स्वामी जी का सनातन वैदिक संस्कृति के संरक्षण की ओर किया गया एक महान् प्रयत्न था। माननीय सम्पूर्णानन्द जी भी इसमें एक दिन पधारे। स्वामीजी ने उनकी शंकाओं का समाधान भी बड़े सुन्दर ढंग से किया। सम्मेलन में जगद्गुरू शंकराचार्य श्री अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ जी महाराज, द्वारका की अध्यक्षता में विद्वानों की एक समिति बनाई गयी जो वैदिक शोध एवं इसी प्रकार के आयोजन स्थान-स्थान पर करके वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार द्वारा बढ़ते हुए नास्तिकवाद को रोकें।

—●●—
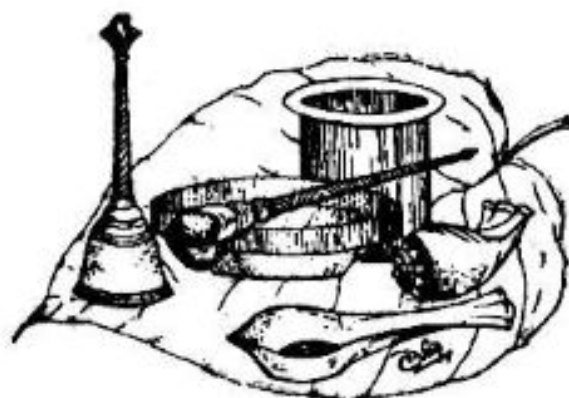
"विश्वनाथ"

वर्षों से जिसकी रक्षा करते आ रहे थे, जिसके लिये स्वामीजी तथा उनके असंख्यों अनुयाइयों ने कई बार जेल-यात्राएँ की थीं, आन्दोलन किये थे, प्रतिनिधि मण्डल भेजे थे, सरकार से उपासना पद्धति की स्वतन्त्रता की मांग की थी। आखिर १५ दिसम्बर ५७ को पुलिस एवं कानून के बल पर तथाकथित हरिजनों ने घुसकर काशी विश्वनाथ मन्दिर की अनादि मर्यादा को भ्रष्ट कर दिया। मन्दिर में चारों ओर से जंगले लगा दिये गए थे। शिवलिंग को कोई नहीं छू पाता था। काशी नरेश भी बाहर से दर्शन करते थे। मन्दिर में कोई भी जा सकता था, पर गर्भ गृह में कोई नहीं जा सकता था। हरिजनों ने कहा कि हम शिवलिंग को छूकर दर्शन करेंगे। १७ फरवरी, सन् १९५५ को रविदास जयन्ती पर १० हरिजनों का जत्था पुलिस के साथ विश्वनाथ मन्दिर गया। पण्डितों ने माला पहनाकर उनका स्वागत किया और स्वामीजी ने सुझाव दिया कि वे भी वहीं से दर्शन कर लें, जहाँ से सब करते हैं। परन्तु स्वामीजी को गिरफ्तार कर लिया गया……पुनः १५ दिसम्बर ५७ को हरिजनों ने सिटी मजिस्ट्रेट और कोतवाल के साथ बलात् घुसकर फाटक की सिकड़ी और तालाछैनी से काट दिया। और जूतों सहित अनेक व्यक्तियों ने घुसकर मन्दिर की अनादि मर्यादा को भ्रष्ट कर दिया।

स्वामीजी का कथन था कि 'जैसे अन्य सभी मतावलम्बियों को अपनी-अपनी पूजा-पद्धतियों के अनुसार पूजागृहों में उपासना करने का अधिकार है, इसी प्रकार सनातन धर्मावलम्बिों को भी अपने वेद-शास्त्रोक्त-विधानानुसार मन्दिरों में पूजा करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए'—'प्रतिमा-पूजन की परम्परागत तथा शास्त्रीय पद्धति में किसी प्रकार की बाधा न डाली जाय'—परन्तु उपर्युक्त बलात् प्रवेश पर स्वामीजी ने कहा कि 'धार्मिक अत्याचार में कांग्रेसी शासन औरंगजेबी शासन से भी भयंकर है। सरकार द्वारा संविधान में प्रदत्त धार्मिक स्वतन्त्रता तथा धर्म निरपेक्षता की घोषणा केवल उपहास मात्र रह गई हैं।'

अन्नपूर्णा मन्दिर में विद्वानों की सभा के बाद ५ जनवरी, १९५८ को ज्ञानवापी की सभा में स्वामी करपात्रीजी ने घोषित किया कि धार्मिकों के लिये शिवरात्रि के अवसर पर काशी में दूसरे विश्वनाथ मन्दिर की स्थापना होगी। ९ फरवरी १९५८ को प्रातः मीरघाट पर रामानुजाचार्य देवनायकाचार्यजी महाराज ने नए विश्वनाथ मन्दिर का शिलान्यास किया। शिवलिंग नर्मदा से निकाल कर काशी लाया गया। २१ फरवरी, १९६८ को वैदिक मन्त्रोच्चार के बीच मीरघाट स्थित मन्दिर में मूर्त्ति की वैदिक विधि विधान पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा की गयी। पुजारियों को छोड़कर शिवलिंग तक कोई भी नहीं जा सकता। यद्यपि कुछ कथित सुधारवादी इससे सन्तुष्ट नहीं हैं परन्तु स्वामीजी का कथन है कि 'हमारी सनातन वैदिक पूजा उपासना पद्धति को इस प्रकार जबरदस्ती बदलने तथा हमारी पवित्र मर्यादाओं को बलात् भ्रष्ट करने का अधिकार किसी को नहीं है। इसकी रक्षार्थ हमारा

प्रयत्न पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहेगा। हाँ, यदि पुनः शुद्धि की बात मान लें तो यह विचार स्थगित किया जा सकता है।' उन्होंने सभी विरोधियों को परस्पर मिल बैठकर सैद्धान्तिक शास्त्रार्थ की चुनौती दी परन्तु कोई माई का लाल आज तक इस 'सन्त' की चुनौती स्वीकार करने का साहस नहीं कर सका और शायद कोई ऐसा सपूत भारत में उत्पन्न ही नहीं हुआ जो वैचारिक एवं शास्त्र सिद्धान्त के आधार पर इस परम तेजस्वी, उद्भट् विद्वान, तपस्वी सन्यासी से शास्त्रार्थ करने का साहस कर सकता। जीवन भर वे सनातन-वैदिक सिद्धान्तों की रक्षार्थ प्राणपण से अहर्निश जुटे रहे। द्वादश ज्योतिर्लिंगों में परिगणित विश्वनाथ महादेव के दर्शन के उद्देश्य से काशी पधारने वाले सम्भ्रान्त, आस्तिक, वैदिक मतावलम्बी उपासक एवं काशी निवासी शंकरभक्त स्वामी श्री करपात्रीजी द्वारा स्थापित नये विश्वनाथ के दर्शन मीरघाट पर करके ही अपनी पूजा को सफल बनाते हैं।

"शास्त्रार्थ"

जैसा कि पूर्व में वर्णन किया जा चुका है कि शास्त्रीय सिद्धान्तों के विषय में स्वामीजी बड़े ही अडिग थे, कट्टर थे। उन्हें टूटना तो पसन्द था परन्तु झुकना नहीं। शास्त्रीय मामलों में समझौता-वाद के वह विरोधी थे। यद्यपि इस समय देश में वातावरण शास्त्र विरोधी है; धर्म विरोधी है; शासन धर्म निरपेक्ष है, प्रजा धर्मविमुख है; साहित्य धर्म रहित है—परन्तु स्वामीजी उसी अदम्य उत्साह के साथ शास्त्रीय सिद्धान्तों एवं वर्णाश्रम सनातन धर्म के प्रचार–प्रसार में अहर्निश लगे रहें। अपने भाषणों में शंका समाधान का पूर्ण अवसर देना उनकी अपनी विशेषता रही। न वह स्वयं हठधर्मी थे न हठधर्मिता उन्हें रुचिकर थी। तत्त्व दर्शन की जिज्ञासा से किये जाने वाले वाद-विवाद के लिये उनका द्वार सदा सर्वदा खुला रहता था, वह खुले मस्तिष्क एवं उदार दृष्टिकोण वाले महा-मनीषी थे। देश भर में धर्म यात्राएँ करते हुए, अनेकों सम्मेलनों के सभा मंचों से उन्होंने लौकिक-पार-लौकिक, सामाजिक, राजनैतिक अनेक प्रश्नों पर अपने शुद्ध-शास्त्रीय-भारतीय विचारों को विचारकों के समक्ष प्रस्तुत किया। कभी-कभी उनकी इस चुनौती से किन्हीं महानुभावों को कुछ कसमसाहट सी भी अनुभव हुई, और कई बार यह 'वाद–विवाद' 'तर्क–वितर्क' 'शंका–समाधान' का रूप धारण करके 'शास्त्रार्थ' का अवसर उपस्थित हुआ उनमें से कुछ का उल्लेख मात्र कर देना ही यहाँ उपयुक्त होगा।

सन् १६३२ में हरिद्वार अर्द्धकुम्भी के अवसर पर कोयल घाटी में सेठ गौरीशंकर गोयनका के साथ पं० मदन मोहन मालवीय स्वामीजी के दर्शनार्थ पधारे। श्रीमद्भागवतविषयक विचार-विनिमय के पश्चात् मालवीय जी कहने लगे 'कि यहाँ भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की त्रिवेणी बह रही है; इसके अवगाहन से प्राणी पाप, ताप और दैन्य सबसे छूट जाता है। हम लोगों के सौभाग्य से अभी ऐसे ज्ञानी महात्मा विद्यमान हैं जहाँ प्रत्येक प्रकार का विचार जिज्ञासुओं को मिल सकता है, वेदों और शास्त्रों के गूढ़ तत्व, जो पुराणों में बिखरे पड़े हैं, इन महात्माओं की कृपा से हम लोगों को वह

प्राप्त होते हैं।' फिर उन्होंने महात्माजी को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'महाराज इन्हीं पुराणों के बल पर मैं अन्त्यजों को भी प्रणवयुक्त मन्त्र की दीक्षा देता हूँ।' स्वामीजी ने कहा 'यह शास्त्र विरुद्ध है।' मालवीयजी ने कहा कि 'फिर तो महाराज विचार हो जाय।' स्वामीजी ने हामी भर ली। अगला दिन निश्चित हुआ। सायंकाल सभा जुटी शास्त्रार्थ का हल्ला मच गया। शास्त्रार्थ स्थल पर हरिद्वार ऋषिकेश आदि से लोग पहुँच गये। श्री गौरी शंकर गोयनका श्री ब्रह्मचारी गंगा स्वरूप जी महाराज पं० बालकराम आहिताग्नि आदि अनेक महात्मा एवं विद्वान भी पहुँच गये। पं० मालवीयजी ने अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए लम्बा व्याख्यान दिया। उस दिन सारा समय उनके भाषण में ही लग गया। अगले दिन पुनः उनका भाषण हुआ तो आँधी आ जाने से ही बीच में व्यवधान उपस्थित हो गया। परन्तु पन्द्रह मिनट में ही आँधी बन्द हो जाने पर स्वामी जी और मालवीय जी का उक्त विषय पर विचार विनिमय चला। दोनों पक्षों के वचन सभी जनता के सामने आये। अन्ततोगत्वा महात्माजी ने पूछा कि 'आपने दोनों पक्षों को सुना! तुमने क्या समझा? क्योंकि बुद्धि का स्वभाव है कि वह तत्त्वपक्षपातिनी होती है।' गोयनका जुगल ने स्वामी जी के पक्ष का समर्थन किया। मालवीय जी से निष्पक्ष बात जानने पर उन्होंने इतना ही कहा कि 'स्वामी जी के मुख से तो संस्कृत वाङ्मय–पूर्व मीमांसा–उत्तरमीमांसा की गंगा सी प्रवाहित हो रही थी, मैं तो उसमें अवगाहन कर अलौकिक आनन्दानुभव कर रहा था' मुझे कुछ कहना ही नहीं है अब! पत्रकारों से पूछने पर मालवीय जी ने कहा कि 'तुम लोग पत्रों में शास्त्रार्थ की चर्चा ही मत करो।' परन्तु ज्ञात हुआ है कि श्री गौरीशंकर गोयनका जी ने उक्त शास्त्रार्थ की एक पुस्तक 'मननीय प्रश्नोत्तर' के नाम से प्रकाशित की थी।

सन् १९४० में महामहोपाध्याय पं. हरिहरकृपालु द्विवेदीजी ने कहा कि 'एकोद्देश्य परायण समस्त जनान्तः करणत्वा परनामधेयस्वरूप ही तो संघटन है, यह तो असम्भव है, हो ही नहीं सकता।' इस पर स्वामीजी का कथन था कि 'जो काशी के पण्डित एकोद्देश्यपरायण समस्त जनान्तः करणत्वा–परनामधेयस्वरूप संघटन का लक्षण करके उसका खण्डन करते हैं, वे क्या संघटन का यह लक्षण करके उसका मण्डन नहीं कर सकते' —पण्डितजी शान्त थे।

एक अन्य अवसर पर यही महामहोपाध्याय जी 'अकामः सर्वकामो वै मोक्षकाम उदार धीः'। तीव्रेण भक्ति योगेन यजेत पुरुषं परम्।' इस श्लोक में स्वामीजी से उलझ गये। ज्ञानवापी में विचार-विनिमय होना निश्चय हुआ सारा विद्वत् समाज शास्त्रार्थ सुनने एकत्र हो गया परन्तु पण्डित जी उस सभा में आये ही नहीं और अन्त में पण्डित हरिहर कृपालु जी ने स्वामी जी को नारियल, माला, पुष्पादि अर्पित कर उनके श्री चरणों में दण्ड प्रणाम किया और उनके भक्त बन गये।

सन् १९४४ में दिल्ली महायज्ञ के अवसर पर कुछ आर्य समाजी पण्डित आये, एक दिन रामचन्द्र देहलवी भी पधारे। वाजसनेयी संहिता के उव्वट, महीधर भाष्य के ऊपर आक्षेप करते हुए

आर्य समाजी पण्डितों ने कहा कि यह वेद विरुद्ध है, क्योंकि वेद प्रतिपादित है।' इस पर स्वामी जी ने कहा कि वेदाप्रतिपादित होने मात्र से उनको वेद विरुद्ध नहीं कहा जा सकता। जैसे भोजन वेदाप्रतिपादित है—परन्तु भोजन वेदविरुद्ध नहीं है। अत: वेदाप्रतिपादित्तव हेतु—विरुद्धत्व साध्य को सिद्ध करने में समर्थ नहीं है। अत: उव्वट महीधर के भाष्य वेद विरुद्धत्व वेदाप्रतिपादितत्वात् अनुमान दोष ग्रस्त हैं और समीहित अर्थ का साधक वह नहीं बन सकता।

आर्य समाज की ओर से आये पण्डित अपना पक्ष भी संस्कृत भाषा में ठीक-ठीक उपस्थित नहीं कर सके और दो चार प्रश्नोत्तर के उपरान्त ही शास्त्रार्थ समाप्त। दूसरे दिन वे आये भी नहीं और केवल नोटिस छाप दिये—इस पर स्वामी जी ने दिल्ली यज्ञ के मंच से विद्वानों की सभा में लाखों जन समूह के बीच स्पष्ट घोषणा की कि 'कोई माई का लाल हो तो सामने आकर शास्त्रार्थ करें'—पर किसी ने साहस नहीं किया।

एक बार साप्ताहिक सिद्धान्त काशी में पूज्यपाद १०८ स्वामी रामदेव जी महाराज ने पक्ष रखा कि 'सन्यासियों को मठों आदि का संग्रह उचित नहीं है।'—इस पर स्वामी श्री करपात्री जी का कथन था कि 'सन्यास आश्रम त्याग का है, इसमें दो राय नहीं हैं। किन्तु साधारण सन्यासी और आचार्य दीक्षा सम्पन्न सन्यासी में महान् अन्तर है। स्वामी जी ने कहा कि भले ही किसी का श्रुति में मूल न मिलता हो किन्तु कोई विरोधिनी श्रुति न हो तो ऐसी भी स्मृतियों का प्रामाण्य माना है। अत: आचार्य दीक्षा-सम्पन्न सन्यासी के लिये मठादि संग्रह शास्त्रानुमत हैं—शास्त्र निषिद्ध नहीं है।

इस प्रकार के तो एक नहीं अनेकों महत्वपूर्ण शास्त्रीय प्रश्नों पर स्वामी जी महाराज के शंका-समाधान के रूप में विचार अनेक पत्रों में समय समय पर प्रकाशित होते रहे हैं, जिनका संबंध केवल बुद्धिमानों की वुद्धि एवं मनीषियों की मनीषा से ही है।

इसी प्रकार का एक लेखबद्ध शास्त्रार्थ 'समुद्रयात्रा' के सम्बन्ध में शास्त्रार्थ महारथी पं० माधवाचार्य एवं स्वामी श्री करपात्री जी के बीच कई वर्षों तक संस्कृत में लिपिबद्ध अनवरत चला जो सिद्धान्त पत्र में धारावाहिक रूप से प्रकाशित भी हुआ—सर्वसाधारण एवं वर्तमानयुग के भारतीयों को इस प्रकार का वाद-विवाद भले ही कुछ विचित्र सा लगता हो परन्तु जैसा कि हमने पहले भी कहा है कि स्वामी जी सत्युगीविभूति थे। उनके विचार भले ही समय से मेल न खाते हों, वह तो बस शास्त्रीय, एकमात्र शास्त्रीयपक्ष-उपस्थापन-प्रतिष्ठापन एवं परिपालन के पक्षपाती थे इस संसार में, फिर चाहे बहुमत किधर भी हो। शास्त्रमत के सामने वैदिक सिद्धान्तों के विषय में, उन्हें बहुमत से झुकाया नहीं जा सका। शास्त्रार्थ महारथी अन्त समय तक समुद्र यात्रा पर स्वयं न जाकर-शास्त्रार्थ में ही उलझे रहे—इस मर्यादा को बांधने वाला एक ही व्यक्ति इस समय संसार में दीखता था स्वामी करपात्री जी के रूप में।

सन् १९६५। हरिद्वार-गोघाट के निकट गंगापार। श्री मन्माध्व सम्प्रदायाचार्य भण्डार केरि-मठाधीश्वर श्री विद्यामान्य तीर्थ स्वामी जी उडुपीकेरल से पधारे तो उन्होंने अद्वैतसिद्धान्त

मत को आसुरमत बताकर शास्त्रार्थ का आह्वान किया। हारने पर ५०००) देने की भी घोषणा की अपने नोटिस में। उनकी चुनौती स्वामी करपात्री जी ने स्वीकार की। मध्यस्थ, स्थान, शर्तनामा सब कुछ लिखित रूप में तय हो गया। ४, ५ जुलाई ६५ में दो दिन शास्त्रार्थ चला। परन्तु प्रतिवादी स्वामी विद्यामान्य तीर्थ जी महाराज ने अपना पक्ष निर्बल पड़ता जान लिखित शर्तनामे की धारा के विरुद्ध एक स्थान पर अपने ही आचार्य श्रीमत्–मध्वाचार्य द्वारा कृत श्रीमद्भगवद्गीता के भाष्य के विरुद्ध भाषण कर दिया। शर्तनामे की शर्त के अनुसार अपने ही आचार्य के विरुद्ध बोलने वाला पराजित माना जायगा। इस पर उभयपक्ष एवं मध्यस्थ तीनों के हस्ताक्षर थे। अतः उन्हें पराजित घोषित किया गया तो वह बीच में से ही उठकर चले गये। पूज्य करपात्री जी को इस शास्त्रार्थ में भी विजयी घोषित किया गया। जब उनकी विजय-शोभा यात्रा निकालने का प्रस्ताव किया गया तो स्वामी जी ने कहा कि ऐसा करना उचित नहीं है। शास्त्रार्थ तत्वनिर्णय के लिये है किसी के पराभव के लिये नहीं—तत्वनिर्णय हो गया अब वाद-विवाद समाप्त हो गया।

इस प्रकार एक नहीं अनेक अवसर वाद-विवाद के उपस्थित हुए इस महात्मा के सामने और तत्वबोध की दृष्टि से सदा स्वामी जी ने उसमें भाग लिया और सनातन वैदिक धर्म के सिद्धांतों की रक्षा की।

कायाकल्प :

'अनन्तावैवेदाः' की ११३१ शाखाओं में से आज केवल पांच-सात शाखाएं ही उपलब्ध हैं। उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम चारों दिशाओं में प्राप्य-मान्य प्रमाणिक संस्कृत शास्त्रीय सद्ग्रन्थों को ढूंढ-ढूंढ कर अध्ययन करना एवं शास्त्रानुमोदित वास्तविक पक्ष का प्रतिपादन करना स्वामी जी के जीवन का लक्ष्य बन गया। वेदों की अनेकों लुप्त प्राय शाखाओं को प्रगट करने का महान् प्रयास आपने किया। इसी सन्दर्भ में आपको 'ज्योतिष्मतीकल्प' के विषय में 'आनन्दकन्द' नामक दक्षिण भारतीय ग्रन्थ से आवश्यक जानकारी मिली कि इस कल्प के करने से अनुपलब्ध एवं अश्रुतग्रन्थों की उपलब्धि साधक को होने लगती है। स्वामी जी ने स्वयं इस कल्पानुष्ठान को करने का संकल्प किया। पूज्यपाद जगद्गुरू शंकराचार्य श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज मध्यप्रदेश से ज्योतिष्मती एकत्र करने स्वयं गये। विधिवत् पूजन के उपरान्त बीस दिन तक इसका संग्रह किया गया फिर काशी में अन्नराशि में रखा गया। मीरघाट काशी में 'त्रीगर्भा' कुटी का निर्माण किया गया। वैद्यों का सम्मेलन बुलाकर विचार-विमर्श किया गया। जड़ी-बूटियों से कुटी का आलेपनादि द्वारा संस्कार किया गया। श्यामा गौ को पूजनादि के अनन्तर निर्धारित नियमित तृण-शाकपत्रादि का भोजन दिया गया। वर्ष १९७२ के चातुर्मास्य के अवसर पर महाराज ने विरेचन क्रिया के पश्चात् कुटी में प्रवेश किया जिसकी लागत लगभग ८५ हजार रुपये थी। चालीस दिन तक महाराज ने कल्पवास किया। औषधि सेवन से इतनी व्यग्रता बढ़ी कि असहनीय हो गयी, परन्तु इस महान् योगी का धैर्य उस समय देखते ही बनता था। कुटी में सेवक एवं चिकित्सक के अतिरिक्त प्रवेश वर्जित था। प्रकाश

के नाम पर गोघृत का दीपक मात्र। बाहर से कोई सम्बन्ध नहीं था। प्रायः स्वामी जी कुटी में ध्यानावस्थित रहते थे। जगद्गुरू स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज से वेदान्त श्रवण करते थे। बीच-बीच में आध्यात्मिक विषयों पर संस्कृत में वार्त्तालाप मात्र। परन्तु वर्षा, आर्द्रता, प्रतिकूल मौसम के कारण कल्प में व्यवधान पड़ता जान चिकित्सकों ने महाराज को कल्पस्थगन का प्रस्ताव किया जिसे चालीस दिन बाद महाराज ने स्वीकार करके बाहर भक्तों को दर्शन देकर कृतार्थ किया। पत्रकारों से प्रश्नोत्तर हुए। भार लिया गया, स्वास्थ्य अच्छा हो गया था। बाल काले होने लगे थे। कई पौण्ड वजन बढ़ गया था। परन्तु स्वामी जी ने कहा कि 'हमें यह कुछ अभीष्ट नहीं था। यह तो उसके गौण फल हैं मुख्यफल तो अश्रुतग्रन्थों की उपस्थिति थी उनका बुद्धि में अवतरण था जो अभीष्ट था—वह अभी दूर है अभी तो दशमास में से केवल चालीस दिन ही कल्प के व्यतीत हुए हैं। यदि भगवत्कृपा हुई तो नगर से बाहर कहीं हिमालय के निर्जन स्थान में इसका पुनः अनुष्ठान सम्भव हो सकेगा। इस अल्पकाल में भी अनुपम अनुभूतियां हुई हैं।' देखने में महाराज की आयु पच्चीस वर्ष कम लगने लगी।

वर्तमान समय में स्वामी जी द्वारा किये गये कल्पवास की घटना का महत्व इसलिये और भी बढ़ जाता है कि उसका लक्ष्य कोई व्यक्तिगत स्वार्थ या केवल शारीरिक स्वास्थ्य लाभ नहीं था अपितु अश्रुत-अनुपलब्ध वैदिक शाखाओं की उपलब्धि मात्र था। विश्वकल्याण एवं वेदोद्धार के लिये कृत-संकल्प इस महान् योगी संत के श्री चरणों में कोटि-कोटि नमन।

सम्मान :

स्वामी जी के विचारों को यद्यपि आज के शुष्क राजनीतिज्ञ प्रतिक्रियावादी, प्रतिगामी अथवा समय के प्रतिकूल बताकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं; परन्तु वर्तमान समय में संत तुलसीदास जी के पश्चात् ऐसा विद्वान् तपस्वी मनस्वी महापुरुष दूसरा शायद नहीं हुआ जिनकी वेद, पुराण, दर्शन, साहित्य, षड्ङ्गवेद और धर्मशास्त्र में इतनी गहरी पैठ हो। भाषण एवं लेखन दोनों में आपका समान अधिकार था। यों तो गत पचास वर्षों में स्वामी जी के सैकड़ों प्रवचन एवं लेख प्रकाशित हो चुके हैं और न्यूनाधिक चालीस पुस्तकों की संरचना से आपने संस्कृत एवं हिन्दी भाषा के साहित्य में अभिवृद्धि कर महान् कार्य किया है। फिर भी 'भक्तिरसार्णव', 'श्रीविद्यारत्नाकर', 'वेदस्वरूपविमर्श', चातुर्वर्ण्यसंस्कृतिविमर्श', 'वेद का स्वरूप और प्रामाण्य', 'श्री भगवत्तत्व', 'संकीर्तन-मीमांसा और वर्णाश्रम मर्यादा', 'शाङ्करसिद्धान्तों पर किये आक्षेपों का समाधान', 'मार्क्सवाद और रामराज्य', 'भक्तिसुधा', 'विचार पीयूष' 'रामायणमीमांसा' 'वेदार्थपारिजात' आदि कुछ ऐसे ग्रन्थ हैं जिन्हें पढ़कर बुद्धिमानों की बुद्धि एवं मनीषियों की मनीषा चमत्कृत हो उठती है। स्वामी जी ने आजीवन संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य की जो महत्त्वपूर्ण एवं निःस्वार्थ सेवा की है और निष्ठापूर्वक अहर्निश सुरभारती के प्रति अपना त्यागपूर्ण जीवन समर्पित करके विद्वानों के सामने एक आदर्श उप-

स्थित किया है उत्तर प्रदेश शासन ने सन् १९७४ में 'भक्ति रसार्णव' ग्रन्थ की रचना पर तथा पुनः सन् १९८५ में (मरणोपरान्त) वेदार्थपारिजात ग्रन्थ पर आपको विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित कर अपने को गौरवान्वित किया। यद्यपि आपने अपने स्वभावानुसार इसे ग्रहण करने से मनाकर दिया परन्तु जब राज्यपाल महोदय ने स्वयं काशी जाकर दुशाला एवं पंचसहस्र मुद्राएँ समर्पित करनी चाही तो महाराज ने एक ब्राह्मण को सुपात्र समझ यह सब दिलवा दिया। उत्तर प्रदेश शासन शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित 'राज्यसाहित्यिक पुरस्कार–१९७४' में स्वामी जी के प्रति व्यक्त भावना की भाषा इस प्रकार है—'संस्कृत विद्या के केन्द्र काशी की उच्च विद्वत्ता की परम्परा को आप आज भी अक्षुण्ण रखे हुए हैं और अपने विशिष्ट वैदुष्य, प्रकाण्ड पांडित्य तथा गंभीर चिन्तन के कारण आपकी अप्रतिम प्रतिभा की ख्याति सारे देश में फैली हुई है। आप उच्च कोटि के विद्वान ही नहीं, प्रत्युत मौलिक चिन्तक भी हैं और संस्कृत विद्वानों की सम्मति में आप शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, श्री हर्ष, मधुसूदनसरस्वती, अप्पयदीक्षित, पण्डितराज जगन्नाथ आदि विद्वानों की गौरवमयी परम्परा की इस युग में एक अपूर्व कड़ी हैं। आपकी संख्याति, सर्वांगीण एवं बहुमुखी है। वेद, पुराण, दर्शन, साहित्य, षडङ्ग और धर्मशास्त्र में आपकी तलस्पर्शी विद्वत्ता और प्रतिभा को संस्कृत जगत् ने गर्व के साथ स्वीकार किया है। लेखन और प्रवचन में आप समान रूप से निष्णात् हैं............। 'विश्वनाथ की नगरी काशी में पाडित्य के सर्वोच्च सिंहासन पर विराजित इस निष्काम साहित्यसेवी, निःस्पृह संत एवं उद्भट्-विद्वान् तपस्वी सन्यासी के श्री चरणों में कोटिश नमन हैं।'

वाचस्पति

१ जनवरी ७९ को सायंकाल चार बजे श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की ओर से विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य पण्डित बद्रीनाथ शुक्ल द्वारा 'वाचस्पति' की उच्चतम मानद उपाधि स्वामी जी को प्रदान की गयी। वृन्दावन बिहारी भवन, लक्सारोड, वाराणसी में आयोजित सादा समारोह में काशी का पण्डित समाज विश्वविद्यालय के उच्चाधिकारी, प्राचार्य, प्राध्यापक एवं अन्य उपस्थित धार्मिक वर्ग ने इस सर्वथा वीतराग महापुरुष को कुलपति द्वारा सर्वोच्च उपाधि प्रदान करते हुए, धर्मसम्राट की जय-जयकार पूर्वक अपना सम्मान व्यक्त किया। इस अवसर पर कुलपति जी ने कहा कि 'समस्त भारत की जनता अपने धार्मिक एवं आध्यात्मिक हितों के संरक्षण के लिये आपकी ओर देख रही है। वैदिक संस्कृति, शास्त्र परम्परा तथा समस्त भारतीयता आपसे ही सुरक्षित हैं। धर्म, राजनीतिक सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में आपके निर्देशन एवं योगदान से भारतीय जनता अपने को कृतकृत्य समझ रही है। भारतीय संस्कृति के महान् उन्नायक के रूप में आपकी महती ख्याति है। विश्व विद्यालय ने अपनी सर्वोत्तम उपाधि प्रदान करने का निर्णय कर अपने पावन कर्तव्य का पालन किया। इस उपाधि की सार्थकता भी आपके श्री चरणों में ही है। यदि विश्वविद्यालय ने ऐसा नहीं किया होता तो यह उसकी भयंकर उत्तरदायित्व विहीनता होती। आपके निर्देशन एवं सन्निधि में विश्व के सभी प्राणियों को कल्याण का मार्ग मिलता रहे यही हमारी आपके चरणों में प्रार्थना है।
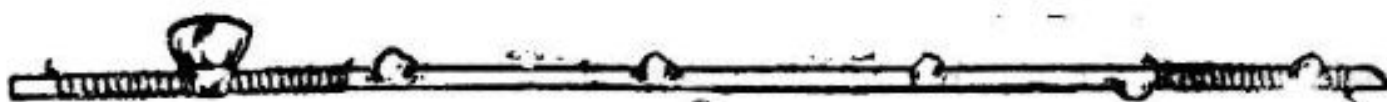
स्वामी जी ने अपने संक्षिप्त भाषण में कहा कि 'जिसके द्वारा धर्म एवं ब्रह्म बुद्धि हो वही विद्या है। यही विद्या अपार संसार में भटकते हुए प्राणियों को मार्ग दिखाती है। अविद्या, अविद्यामय कार्य तथा सर्व प्रपंच की निवृत्ति इसी से होती है। अतः सबसे बड़ा प्रयास इस विद्या की प्रगति के लिये होना चाहिये। त्याग की संसार में बड़ी महिमा है। जो जितना ही त्याग करता है वह उतना ही संसार को नन्दन वन, उस विद्या के बल पर होता है। विद्वानों को इसी विद्या को अपने तथा अपने अनुयायियों को सम्पादित करना चाहिये। इसी में सर्वथा कल्याण सम्भव है।'

"विश्व विद्यामन्दिर"

विश्ववन्द्य स्वामी करपात्रीजी महाराज के आध्यात्मिक आदर्शों एवं भारतीय संस्कृति के विश्व-व्यापी प्रचार-प्रसार हेतु 'भारतीय शिक्षा परिषद' द्वारा स्वामीजी की जन्मस्थली के समीप कुण्डा प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश में श्री स्वामी करपात्री 'विश्व विद्यामन्दिर' का शिलान्यास सुप्रसिद्ध दार्शनिक सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के कुलपति आचार्य प्रवर पण्डित बद्रीनाथ शुक्ल के कर कमलों द्वारा १० मई १९७९ को प्रातः ७.३० बजे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता अ० भा० रामराज्य परिषद, उत्तर प्रदेश के महामन्त्री श्री रामजी मिश्र ने की। माननीय कुलपति जी ने विद्यामन्दिर का शिलान्यास करते हुए कहा कि 'स्वामी श्री करपात्री जी महाराज विश्व की महनीय विभूति हैं भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म उनको पाकर कृतकृत्य हो गया है उनके आदर्शों के पालन करने हेतु ही इस विद्यामन्दिर की स्थापना की जा रही है। आशा है इसमें से विद्या प्राप्त कर निकलने वाले स्नातक भारतीय संस्कृति के रक्षक सनातन धर्म के उन्नायक एवं धर्मनिष्ठ होंगे।' विद्यामन्दिर के प्रबन्धक, प्रयाग विश्व विद्यालय में दर्शन विभाग के प्रवक्ता छोटे लाल त्रिपाठी ने कुलपति महोदय का स्वागत करते हुए विद्यामन्दिर की रूप-रेखा पर प्रकाश डाला। एक वक्तव्य में कहा 'इस विद्या मन्दिर में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की व्यवस्था रहेगी। साथ ही औद्योगिक, प्राविधिक एवं तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्र भी संचालित किये जायेंगे। प्राचीन भारतीय विद्याओं की उन्नति हेतु संस्कृत एवं आयुर्वेद के अध्ययन का भी समुचित प्रबन्ध रहेगा।' अध्यक्षीय भाषण में श्री रामजी मिश्र ने स्वामीजी एवं विद्यामन्दिर के सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हुए विद्यामन्दिर की उन्नति की कामना की। अन्य वक्ताओं एवं उपस्थित महानुभावों में उत्तर प्रदेश संस्कृत पाठशालाओं के निरीक्षक श्री उमाशंकर मिश्र, विधायक श्री राम किशोर शुक्ल, श्री उमराव पाण्डेय उमापति आदि का नाम उल्लेखनीय था।

"वेदोद्धार"

गत अर्द्धशताब्दी में अनेक ग्रन्थों का प्रणयन करके भी स्वामीजी को सन्तोष नहीं हुआ। ७३ वर्ष की आयु में भी विद्यार्थियों की भांति नित्य दश–दश घण्टों तक निरन्तर ग्रन्थावलोकन एवं लेखन कार्य में सरस्वती का यह वरद पुत्र अनवरत लगा रहा। सन् १९३७ में 'शाङ्कर सिद्धान्त-

समाधान,' (पृष्ठ १६२), 'संकीर्तन और वर्णाश्रम मर्यादा' (पृष्ठ १२२) १६४० में 'श्री भगवत्तत्व' (पृष्ठ ७२२), १६५८ में 'मार्क्सवाद और रामराज्य' (पृष्ठ ८०४), १६५६ में 'वेद का स्वरूप और प्रामाण्य' (प्रथम खण्ड—पृ० २७६) (द्वितीय खण्ड पृष्ठ ४३५), १६६१ में 'वेद प्रामाण्य मीमांसा' (पृष्ठ ७८), १६६२ में 'अहमर्थ और परमार्थ सार' (पृष्ठ २७०), १६६८ में 'भक्तिरसार्णव' (पृष्ठ २४६), १६६६ में 'वेदस्वरूप विमर्श' (पृष्ठ ४४७), १६७२ में 'चातुर्वर्ण्यसंस्कृति विमर्श' (पृष्ठ ३२५) १६७२ में श्री विद्यारत्नाकर' (४७० पृष्ठ), १६७५ में 'विचारपीयूष' (६६० पृष्ठ) १६७६ में 'क्या सम्भोग से समाधि' (१०५ पृष्ठ), 'पूंजीवाद–समाजवाद–रामराज्य' (२७० पृष्ठ), १६७७ में 'रामायण मीमांसा' (१६३२ पृष्ठ) आदि अनेक खोजपूर्ण एवं पाण्डित्यपूर्ण महान ग्रन्थों की संरचना कोई साधारण काम नहीं है। परन्तु सर्ववेद शाखा सम्मेलनों के आयोजन कर्त्ता इस ऋषि की तृप्ति नहीं हुई। आपने केदारघाट काशी में महाराज कुमार विजयानगरम का गंगातट स्थित भवन संस्था के धन से खरीदकर और उसका एक छोटा सा न्यास बनाकर उसमें 'वेदानुसन्धान संस्थान' की स्थापना की। यह स्थान काशी खण्ड में वर्णित प्रसिद्ध श्री केदारेश्वर महादेव मन्दिर से मिला हुआ केदारघाट गंगा तट पर स्थित है, जिसमें श्री स्वामीजी ने श्री राम कृपेश्वर मन्दिर की भी स्थापना की। इसी 'वेद-शास्त्रानुसन्धान-संस्थान' के अन्तर्गत वेदों-शास्त्रों पर स्वतन्त्र रूप से अनुसन्धान कार्य किया जा रहा है। स्वामीजी ने वेदों पर आज तक किये गये भाष्यों का गहन गम्भीर अध्ययन किया और वेदभाष्य लेखन के महत्त्वपूर्ण कार्य में वे लगे रहे वेदभाष्य भूमिका के लगभग २३०० पृष्ठ दो खण्डों में विद्वानों के मध्य आ चुके हैं। इस भूमिका से स्वामीजी ने महान वैचारिक क्रान्ति का सूत्र-पात किया है। यजुर्वेद–ऋग्वेद पर भाष्यपूर्ण हो चुके हैं यह प्रेस में हैं। अथर्व, साम पर भी भाष्य की रचना की। ६ अप्रैल १६७६ को 'वेदार्थ पारिजात' का प्रकाशनोद्घाटन भूतपूर्व काशी नरेश डाक्टर विभूति नारायण सिंह जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति पं० बद्रीनाथ शुक्लजी ने अध्यक्षता की। विश्वविद्यालय के प्रांगण में प्रारम्भ लगभग २५ वैदिक ब्राह्मणों द्वारा वेद मन्त्रों से वेदभगवान का पूजन किया गया। वेद-स्तवन के अनन्तर वैदिकों का पूजन एवं उद्घाटन कर्त्ता महाराजा काशी एवं कुलपति जी का सम्मान ग्रन्थ के प्रकाशक श्री हनुमान प्रसाद धानुका द्वारा अक्षत-चन्दन एवं माल्यार्पण से किया गया।

अपने उद्घाटन भाषण में काशी नरेश ने कहा कि 'वेदार्थ पारिजात' जैसा ग्रन्थ लिखकर पूज्य चरण श्री स्वामी श्री करपात्री जी ने आज की सबसे बड़ी आवश्यकता की पूर्ति कर एक ऐसा महान् कार्य किया है जो महाराज जी जैसे तपस्वी, मनस्वी और सरस्वती के अवतार से ही सम्भव है। वेद ही हमारी संस्कृति के मूल स्रोत हैं। केवल भारत के लिये ही नहीं वरन् समस्त विश्व और मानव-मात्र के लिये कल्याणप्रद हैं। इनका समुचित अध्ययन, मनन और अनुशीलन होने से ही मनुष्य–त्राण हो सकता है। आज वेद की रक्षा ही धर्म है। पूज्य स्वामीजी ने सनातन धर्म की रक्षार्थ अपना जीवन ही न्यौछावर कर रखा है। वे सामर्थ्यवान हैं। 'वेदों के बारे में अनेक प्रकार के आक्षेपों

का उचित निराकरण न होने से विद्वानों और वेदों में आस्था रखने वालों में अनेक भ्रान्तियाँ फैल गई थीं। यह आवश्यक था कि इन आक्षेपों का समुचित निराकरण किया जाय और वेद-मन्त्रों का सही स्पष्ट अर्थ प्रतिष्ठित किया जाय ताकि धर्म की रक्षा हो और वेदों के प्रति आस्था सुदृढ़ हो। यह कार्य बहुत कठिन था। इसे पूज्य चरण स्वामीजी जैसे सरस्वती के वरद्पुत्र ही कर सकते हैं। प्रसन्नता की बात है कि स्वामीजी ने इसे महसूस किया और 'वेदार्थ पारिजात' लिखकर एक कठिन कार्य को सम्पन्न किया। इससे वेद के अध्येताओं को बड़ा बल मिलेगा।' पर्याप्त अस्वस्थ होते हुए भी स्वामी जी ने स्वयं उपस्थित होकर समारोह को गौरव प्रदान किया। अपने आशीर्वचन के रूप में कहा कि 'वेदों के बारे में लोगों ने अनेक विवाद और वाद उत्पन्न कर रखे थे, उनका शमन और निराकरण बहुत जरूरी था। कुछ लोग केवल मन्त्रों को ही वेद मानते हैं किन्तु यह सही नहीं है। 'मन्त्र और ब्राह्मण' दोनों वेद हैं। इस प्रकार के अनेक वाद और आक्षेप हैं जिनका निराकरण करने के लिये मुझे 'वेदार्थ पारिजात' की रचना की ओर उन्मुख होना पड़ा।' उदाहरण देते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि 'वेदों के बारे में एक दृष्टि यह है कि उसका प्रतिपाद्य विषय ब्रह्म नहीं कर्मकाण्ड है। दूसरी दृष्टि यह है कि वेदों का प्रतिपाद्य विषय परात्पर ब्रह्म है कर्म काण्ड नहीं। लेकिन ऐसा नहीं है। वेद के जितने मन्त्र विनियुक्त हैं, उनका सम्बन्ध कर्मकाण्ड से है लेकिन जो मन्त्र विनियुक्त नहीं है उनका सम्बन्ध परब्रह्म की प्रतिष्ठा से है।' स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि 'आज वेद और धर्म की रक्षा के इस महान् कार्य में जो लोग लगे हैं उनके उत्साह और विश्वास में वृद्धि हो यही मेरी शुभ-कामना है।'

वर्तमान जगत् में जब संसार भौतिकता में आकण्ठ निमग्न है। नास्तिकता का वातावरण है। वेद-शास्त्रों की उपेक्षा हो रही है। स्वामीजी ने वेद्धोद्धार के जिस महान् कार्य को उठाया आने वाली पीढ़ियां शताब्दियों तक 'करपात्री-स्वामी' के पवित्र नाम का स्मरण करती रहेंगी। ईमानदार एवं निष्पक्ष विचारक, देश, धर्म एवं वेद के प्रति किये गये इनके भीष्मप्रयास की स्मृतिपूर्वक कृतज्ञता ज्ञापन करके धन्य होती रहेंगी।

स्वामीजी का कथन है कि 'वेद-मन्त्रों तथा उपनिषदों में इतिहास, रामायण महाभारत और पुराणों का उल्लेख है। अतएव मन्त्र, ब्राह्मण, उपनिषद, व्याकरण, षडंग, पूर्वोत्तर-मीमांसा, इतिहास, पुराण, धर्म-शास्त्र आदि का समन्वय करके ही जो वेदार्थ का निर्धारण किया जाता है, वही वेदार्थ का सम्यक् निर्धारण है, मनमाने ढंग से नहीं।'

ऐसे परमपूज्य परिव्राजक, यतिश्रेष्ठ, धर्म सम्राट, वेदोद्धारक, गो-ब्राह्मण-प्रतिपालक, तपस्वी, मनस्वी, सरस्वती पुत्र, दण्डी सन्यासी, वीतराग-महात्मा, परमहंसस्वरूप वाचस्पति अभिनवशङ्कर स्वामी श्रीकरपात्री जी महाराज के श्री चरणों में राष्ट्र की ओर ये प्रणामाञ्जलि समर्पित है। अभागे हैं वे लोग जो उनसे अपरिचित रहे, धन्य हैं वे लोग जिन्होंने इन महात्मा के दर्शन किये हैं। ●

अभिनवशङ्कर स्वामी श्री करपात्री जी महाराज

प्रथम खण्ड

ब्रह्मनिर्वाण एवं श्रद्धांजलियां

(उत्तरार्द्ध—ब्रह्मनिर्वाण भाग)

"स्वामी श्री करपात्री जी में अनन्त गुण हैं—उनका अवदातयश है, उत्तमहोन्चल कुलाभिजन हैं, जो गोरखपुर मण्डल में सरयूतट पर 'ओझोली' नाम से प्रसिद्ध हैं। उनमें बड़े विद्वान् हो गये हैं, जिन लोगों का सम्बन्ध वहाँ के सभी ऊँचे कुल के प्रसिद्ध लोगों में हैं। ओझा लोगों की प्रतिष्ठा को हमारे देश में आदर के साथ स्मरण किया जाता है। वहीं से कुछ सम्बन्ध विशेष से, प्रतापगढ़ में कुछ लोग आ बसे हैं। यहीं पर थे श्री स्वामी करपात्री जी, जो विद्या, तप, व्रत, वाग्मिता, प्रभाव, प्रतिभादि अनन्त गुणों से विभूषित हैं, इनके बल पर आज का सनातनधर्मी जगत निरातंक सो रहा है। कोई भी बिपक्षी इस धर्म पर आक्षेप करके, बिना समाधान राशि से सन्तुष्ट भये, नहीं जा सका है। स्वामी जी ने घोषणा कर दी थी कि 'समाज को बुलाकर पं० जवाहर लाल अपनी बातों को समझावें और हम भी समझावें, जनता जिसे स्वीकार करे, उसे सभी लोगों का मत माना जाये।'—इस पर दिल्ली में वृहत सभा हुयी जिसमें पं० अनन्तशयनम् आयंगार, डा० पट्टाभिसीतारमैया, श्रीमन्नारायण कांग्रेस की ओर से पधारे थे। इन्हें व्याख्यान का पूरा समय दिया गया था। —स्वामी जी ने अपने तर्कों एवं दृष्टान्तों से सभी को निरुत्तर कर दिया था। इसी प्रकार कानपुर की सभा में एक विदेशी विद्वान् अंग्रेज आया था। बड़ा शोर हुआ। भारी भीड़ एकत्र हो गई। उसने स्वामी जी से अनेक प्रश्न किये। स्वामी जी ने क्षणमात्र में उत्तर देकर उसका समाधान कर दिया—वह बड़ा संतुष्ट हुआ और प्रसन्न होकर स्वामी जी के चरणों में सिर रखकर चला गया। हिन्दू जाति का सिर कितना ऊँचा हुआ था उस दिन। उन्होंने कार्लमार्क्स के समाजवाद का खण्डन किया है, वेद का अपौरुषेयत्व विशिष्ट तर्कों से सिद्ध किया है। उनमें अनन्त गुण हैं; जिनको हम सभी सभाओं और शास्त्रार्थों में देख चुके हैं।' काशीस्थ विद्वानों में पूज्य स्वामी जी की अद्वितीय प्रतिभा का, कल्पना पाण्डित्य, सबकी चर्चा विशेष रूप से महा-महोपाध्याय जी से शास्त्रार्थ की बड़ी धूमधाम होने पर तथा पण्डित सभापति जी के वेदान्त के बहुत से सन्देह उनके द्वारा दूर करने पर हुई। उस समय स्वामी जी ने 'विकल्पोनिर्विकल्पस्य सविकल्पस्य वा भवेत्'—इस पंचदशी के श्लोक की विस्तृत व्याख्या कर सभापति जी को चमत्कृत कर दिया था। इसी तरह उन्होंने एक विद्वान् के इस भ्रम को दूर किया था कि यज्ञ में बलि होती थी। इसपर विचार के समय स्वामी जी ने अपने मीमांसा के पाण्डित्य का ऐसा चमत्कार दिखाया कि काशी के विद्वानों तथा छात्रों के हृदय में विश्वनाथ की भांति स्वामी जी का आदर सदा के लिये अमिट हो गया है।"

पण्डितराज कालीप्रसाद मिश्रा
भू० पू० प्राचार्य सं० वि० काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी।

(स्वामी जी के जीवनकाल में प्रकट उद्‌गार)

ब्रह्मनिर्वाण

भारतीय शास्त्रों के अनुसार यद्यपि यह विश्व अनादि है अर्थात् इसका कोई पता नहीं बता सकता कि यह कब से बना। इस ब्रह्माण्ड में एक दो नहीं, असंख्य, अनन्तानन्त लोक-लोकान्तर, नक्षत्रमण्डल इसी प्रकार स्थित हैं जिस प्रकार गूलर के फल के अन्तर्गत असंख्य बीज। मोटे तौर पर भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यः—यह सात ऊपर की ओर अवस्थित हैं और महातल, रसातल, अतल, सुतल, वितल, तलातल और पाताल—यह क्रमशः नीचे की ओर अवस्थित हैं। मध्य में है यह भूमण्डल जिसमें प्रमुख कर्मभूमि है भारतवर्ष। यह एक ब्रह्माण्ड की स्थिति है इस प्रकार के अनेक ही नहीं अपितु अनन्तानन्त ब्रह्माण्डों की स्थिति है जिसे 'भ्रामयन सर्वं भूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया।' वह अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म-परमात्मा प्रतिक्षण धारण किये हुए है। विश्वविराट् के हृदय प्रदेश में अवस्थित है यह पवित्र भारत देश जिसके प्रांगण में वह सर्वशक्तिमान परमात्मा समय-समय पर अवतरित होकर धर्म की रक्षा करते हैं। उनका उद्‌घोष है कि 'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्'। अवतारवाद भारतीय धर्म की विशेषता है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता, विश्व की सभ्यता-संस्कृतियों की जननी है। परन्तु जब कालक्रम प्रभाव से इनका ह्रास होने लगता है तो वे अकारणकरुणकरुणावरुणालय भगवान् इन भारतीय-वैदिक-तत्वों के संरक्षण के लिये किसी महान विभूति को भेजते हैं। यह सनातन-मान्यता है, शाश्वत-परम्परा है इस देश की। वैदिकों की मान्यता के अनुसार वर्तमानकाल पतन का काल है, उन्नति का या प्रगति का नहीं। सत्युग, त्रेता, द्वापर, कलियुग इस युगक्रमानुसार विचार करने पर यही तथ्य सुस्थापित होता है कि धर्म के चार चरणों में से कलियुग में एक ही चरण शेष रह जाता है। परन्तु मूलसंरक्षण की सदा से चिन्ता वे प्रभु स्वयं ही करते हैं। अधिक प्राचीनकाल में न जाकर अबसे ढाई हजार वर्ष पूर्व का जब स्मरण करते हैं तो देखते हैं कि सनातनवैदिक धर्म के शाश्वत सिद्धान्तों का पूर्णतया अपलाप करके अवैदिक, बाममार्गी, अघोरपन्थी, नास्तिक, क्लीव, पाखण्डी मत-मतान्तरों का जब इस पवित्र देश में प्रचार-प्रसार हुआ तब आद्य श्री शंङ्कराचार्य के रूप में भगवान् स्वयं पधारे और वेदान्त सिद्धान्त की पुनः प्रतिष्ठापना की। वर्णाश्रम धर्म इस पुरातन सनातन देश एवं जाति की रीढ़ है। इसके अस्तित्व का यह मूलाधार है। इस राष्ट्र के अतिरिक्त कहीं भी वर्णाश्रम धर्म की पूर्णतः स्थापना नहीं है।

मन्त्रब्राह्मणात्मक वेद, श्रुति-स्मृतिमूलक धर्म, गो, ब्राह्मण, यज्ञ आदि के मूल संरक्षण का जब-जब भी प्रश्न उत्पन्न हुआ है तब ही वे किसी न किसी विभूति को किसी भी लोक से यहाँ कुछ समय के लिये भेज देते हैं जो अपना कार्य सम्पन्न करके पुनः निजलोक को प्रयाण कर जाते हैं। इसी

परम्परा में आता है वह पवित्र नाम जिसके आविर्भाव एवं कार्यकलापों का वर्णन गत पृष्ठों में आपने संक्षेपतः पढ़ा। जो सम्पूर्ण भारतवर्ष में लगभग साठ वर्षों तक छाये रहे। धर्म के सर्वोच्च सिंहासन पर आरूढ़ होकर 'धर्मसम्राट' कहलाये, 'वेदार्थपारिजात' एवं वेदभाष्यों की रचना करके 'वेदोद्धारक' कहलाये; अनेकों शतमुखकोटिहोमात्मक जैसे महायज्ञों का अनुष्ठान सम्पन्न कराने वाले 'यज्ञयुग-प्रवर्तक' कहलाये; वैदिक-सनातन-हिन्दू धर्म शास्त्रों के विपरीत बनाये जाने वाले काले कानूनों (हिन्दू कोड आदि) का प्राण-पण से व्यापक सक्रिय विरोध करने वाले **'धर्मात्मा वेदपुरुष'** कहलाये; गोहत्याबन्दी, अखण्ड भारत, धार्मिक-मर्यादा-संरक्षण के लिये कठोर यातनाएँ सहन करने वाले 'कर्मठ-सन्यासी-कारकपुरुष' कहलाये; राष्ट्रभाषा हिन्दी, देववाणीसंस्कृत के अजस्र भण्डार को अपनी प्रौढ़-सशक्त शास्त्रीय शब्दावली से सुपुष्ट करने वाले 'सारस्वतपुत्र' कहलाये; कथा, उपदेश, व्याख्यान एवं गूढ़ातिगूढ़ वैदिक-धार्मिक तत्वों का सरल, सुबोध, सुगम भाषा में विवेचन करके 'व्याख्यान वाचस्पति' कहलाये; अनेकों आक्षेपों का परिहार करते हुए वैदिकमत-स्थापन कर अनेकों शास्त्रार्थों में विपक्षियों को पराभूत करने वाले 'शास्त्रार्थमहारथी' कहलाये। कठिन से कठिन वैदिक-व्रतानुष्ठानादि पूर्वक एक कृच्छ्र-तपोमय जीवन व्यतीत करने वाले 'तपस्वीसन्त' कहलाये; धर्म संरक्षण हेतु लोकसंग्रह करते हुए भी कमलवत् उससे निर्लेप रहने वाले 'वीतराग-सन्यासी' कहलाये; पाश्चात्य-पूर्णतः भौतिकवाद पर आधारित धर्म विहीन राजनीति के विकल्प के रूप में धर्मसापेक्ष, पक्षपात-विहीन, लोकतान्त्रिक, अध्यात्मवाद पर आधारित आदर्शतम राजनीतिदर्शन 'रामराज्य' के प्रस्तोता महान राजनीतिज्ञ-'राष्ट्रपुरुष' कहलाये; महान दार्शनिक, अर्थशास्त्री, महामनीषी, मनस्वी, तपस्वी, ब्रह्मवर्चस्वी, धर्म की जय के घोष के उद्गाता 'धर्मात्मा-करपात्री' कहलाये। इसी प्रकार अपनी सर्वतोमुखीप्रतिभा को इस राष्ट्र में विकीर्ण करके, सनातन धर्म के सनातन-शाश्वत सिद्धान्तों का पुनर्जागरण करके लगभग साठ वर्षों तक सनातन-धार्मिक जगत के एकछत्र निर्विवाद नेता के रूप में सर्वोच्च सिंहासन पर सिंहासनस्थ रहकर सनातन धर्म की विजय का डंका बजाते रहे।

परन्तु निर्धारित कार्य पूर्ण कर लेने के अनन्तर उन्होंने स्वलीलासंवरण कार्य भी प्रारम्भ कर दिया। प्रस्तुत पंक्तियों में उसी कारुणिक प्रसंग पर दृष्टिपात करने का प्रयास किया गया है जिसमें महाराज श्री के देवतुल्य पवित्र-पार्थिव शरीर को दस मास की अवधि में तपस्या-साधनारत रहना पड़ा। बात हमारी लौकिक-सीमित बुद्धि के अनुसार ऐसी प्रतीत होती है कि २६ जून सन् १९६७ में जो तिहाड़ जेल में उनपर कातिलाना हमला किया गया था उसमें उनके शिरोभाग में मर्मान्तिक आघात लगा था, आँख की ज्योति चली गई थी, जो कालान्तर में औषधोपचार से आंशिक रूप से ठीक तो हो गई थी परन्तु स्यात् अपना कुप्रभाव कहीं मस्तिष्क के सम्वेदनशील सूक्ष्म भाग के किसी कोष में छोड़ गई जिसके परिणाम-स्वरूप इन परम तपस्वी, मनस्वी, महामनीषी एवं विचारक महात्मा को समय समय पर रोगाक्रान्त होना पड़ता रहता। सन् १९८१ में ५ अप्रैल से प्रारम्भ होने वाले नवरात्र में रासपचांध्यायी पर महाराज की कथा प्रवचन का आयोजन परेटमैदान कानपुर में

श्रीरामलीला कमेटी' द्वारा किया गया था। महाराज पूर्णस्वस्थ थे परन्तु पांचवें दिन अर्थात् ६ अप्रैल १६८१ को नित्य की भाँति पूजनादि सम्पन्न कर लिया और सायंकाल ५ बजे भिक्षा करने के उपरांत सायं ६ से ८ बजे तक उक्त प्रवचन का कार्यक्रम था। साढ़े चार बजे महाराज ने पूजन आरम्भ किया। पटबन्द थे। पांच बजे के स्थान पर साढ़े पांच बज गये परन्तु पूजनोपरान्त नित्य की भाँति महाराज द्वारा की जाने वाली शंख-ध्वनि आज अभी क्यों नहीं हुई? देखने पर ब्रह्मचारी जी ने पाया कि महाराज तकिये के सहारे लेटे-लेटे ठाकुर जी के पूजा-पात्र वस्त्र से पूछ रहे थे। ब्रह्मचारी को आया देखकर तुरन्त बोले 'वायुरोग का पुनः आक्रमण हो गया है, शिर व गर्दन में पीड़ा है, तुरन्त काशी ले चलो, सब कार्यक्रम रद्द कर दो।' कार द्वारा कानपुर से काशी चल पड़े तुरन्त। ब्रह्मचारी को निर्देशित किया कि 'मार्ग भर राम नाम संकीर्तन करते चलो उच्चस्वर से'—इस प्रकार रात्रि में एक बजे काशी पहुँचे। प्रातः ५ बजे काशी में उन्होंने समाधि लगा ली। नेत्र बन्द, मन में परब्रह्म का चिन्तन, निज स्वरूपानुसन्धाननिरत, वाह्यदृष्टि से अचेतन से अस्वस्थावस्था में २१ दिन तक इसी ब्रह्मावस्था में स्थित रहे। सम्पूर्ण देश में अस्वस्थता का समाचार फैल गया। भक्त, ब्रह्मचारी, सन्यासी सभी चिन्तातुर होकर काशी पहुँचने लगे। सर्वत्र प्रार्थनाएँ एवं धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न होने लगे। चिकित्सा वैद्यराज पं० व्रजमोहन दीक्षित जी की चल रही थी।—नेत्र खोलने पर बोले—'हमें भगवान् की कथा-वार्त्ता सुनाओ, उसी से हमें स्वास्थ्यलाभ होगा।' उन्होंने सम्पूर्ण वाह्य-व्यवहारों को समेट लिया। अपनी चित्त-वृत्तियों को अन्तर्मुखी करके अहर्निश ब्रह्म-चिन्तन में संलग्न रहते। कभी नेत्र खोलकर कहते कि 'कीर्तन करो, रामायण सुनाओ, विष्णुसहस्रनाम का पाठ करो, चण्डी पाठ सुनाओ, श्रीमद्भागवत का पाठ करो' आदि-२। उनकी आज्ञानुसार प्रातःकाल से रात्रि तक विभिन्न धर्म ग्रन्थों की कथाएँ, पाठ आदि महाराज श्री को विभिन्न विद्वानों, महात्माओं द्वारा श्रवण कराया जा रहा था। भक्ति के प्रसंग आने पर उनका हृदय द्रवीभूत हो जाता, नेत्रों से अजस्रगति से अश्रु-धारा प्रवाहित होती रहती। बीच बीच में पूछते कि 'ठाकुर जी का भोग कैसा लगा है, आरती, पूजा, अर्चा आदि ठीक ठीक हो रहा है न?' उन्होंने सम्पूर्ण लोक-व्यवहार से अपने को पृथक कर लिया। इस सबके दृष्टा बने निर्लेपभाव से इन सभी कृत्यों एवं धार्मिक गतिविधियों को निहारते रहते तथा बीच बीच में निर्देशन देते रहते। इस सम्पूर्ण काल में वे प्रायः भक्ति की उस उच्चावस्था में लीन रहते जिसका वर्णन शब्दों से हो ही नहीं सकता। भावविभोर होकर, गद्गदकण्ठ से अस्फुट नामोच्चारण करते, कभी शरीर में रोमांच हो आता, कभी स्वेद छलकने लगता, कीर्तन, भजन एवं भगवद्कथामृत पान करते करते प्रभु मिलन के लिये छटपटाने लगते, खूब जोर जोर से रोने लगते। बार-बार अपने ठाकुर जी का पूजन करने, संकीर्तन करने, आरती करने, भोग लगाने प्रसाद वितरण आदि के बारे में पूछते रहते—इस प्रकार भक्ति की अलौकिक आध्यात्मिक स्थिति में महाराज श्री सतत् निरत रहते हुए ब्रह्म-चिन्तन में लीन रहते। परन्तु 'धर्म', और 'ब्रह्म' के बारे में कोई भी शंका करता तो पूर्ण सावधानीपूर्वक उसका शास्त्रीय समाधान तुरन्त करते, उस समय ऐसा प्रतीत होने लगता कि

महाराज पूर्णस्वस्थ हैं । परन्तु फिर वही अन्तर्मुखी स्थिति को प्राप्त हो जाते । इस प्रकार अपना नित्यकर्म, पाठ, पूजन, देवोपासन, योगासन आदि भी पूर्ववत कर रहे थे । एक दिन बोले 'अब मैं बाजार समेट रहा हूँ, चलने की तैय्यारी में हूँ, हमको जो कुछ करना था कर चुके ।'—इस प्रकार अपने संकल्प का कई बार उन्होंने संकेत किया परन्तु भक्तगणों ने कभी भी यह नहीं समझा कि महाराज जी अपनी इहलोकलीला संवरण करने पर दृढ़प्रतिज्ञ हैं ।

यद्यपि रुग्णावस्था के कारण शारीरिक रूप से आप दुर्बल हो गये थे परन्तु मानसिक दृष्टि से वे पूर्णतः स्वस्थ थे । इसी स्थिति में पुनः जोर शोर से भजन, पूजन, योगाभ्यास, प्रवचन, वेदभाष्य लेखन आदि के कार्य में लग गये । स्वामीजी ने जो कुछ किया, जो कुछ कहा तथा जो कुछ वे कहना चाहते थे उसे अनेकों ग्रन्थों में अक्षर ब्रह्म के रूप में लिपिबद्ध करके अपना कार्य सम्पन्न हुआ जान उन्होंने शरीर त्याग का दृढ़ निश्चय कर लिया और प्रतिज्ञा की कि अब काशी से बाहर नहीं जायेंगे, प्रातः काल घूमने भी जाते तो भी तुलसी, शालग्राम, गंगाजल साथ रखते कि न जाने कब, कहाँ इस नश्वर शरीर को छोड़ना पड़ जाय । इसी बीच जगद्गुरुशङ्कराचार्य श्री स्वामी स्वरूपा-नन्द सरस्वती जी महाराज ने कहा कि 'महाराज ऐसा संकल्प अभी न करें, अभी तो आपकी देश-धर्म को महती आवश्यकता है'—बोले 'बस अब हमें कुछ करना शेष नहीं है जो कुछ हमें करना था कर चुके, कहना था कह चुके, जो विचार थे उन्हें लिख चुके, तुम लोगों को जब कभी अपेक्षा हो तो इन ग्रन्थों से जान लेना; हमें तो अब जाना ही है' । इतना ही नहीं जो भी अचल सम्पत्ति धर्म कार्यों के संचालन हेतु लोक संग्रह के रूप में संगृहीत हो गयी थी–सबका विसर्जन कर दिया—निस्तारण कर दिया, ट्रस्ट बना दिया । अब उन्हें न प्रेस से लगाव था न विभिन्न भवनों से । सम्पूर्ण बाह्य-चेष्टाओं को अन्तर्मुखी करके प्रतिक्षण ब्रह्मचिन्तन में रत रहने लगे । अहर्निश कथाश्रवण, भगवन्नामसंकीर्तन, पूजन, अर्चनादि में रत रहने लगे—भगवच्चरितामृत पान करते करते प्रभु मिलन के लिये तड़प उठते, मचल जाते और भावविभोर होकर रुदन करने लगते । इस काल में उन्होंने सम्पूर्ण धार्मिक, राज-नीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, गतिविधियों का हृदय से परित्याग कर दिया और प्रतिक्षण निज-स्वरूप में स्थित रहते हुए ब्रह्मचिन्तन में लीन रहने लगे । इस समय की उनकी अवस्था उच्च कोटि के परमहंसों के समान हो गयी थी सीधे सरल भोले निश्छल बालकों की तरह । निज शुद्ध, बुद्ध, मुक्त भावापन्न दशा में वह दिव्य विभूति इस नश्वर शरीर के त्यागने हेतु निश्चित तिथि की प्रतीक्षा रत रही–इस समय पूजन, भजन, आराधन भी चलता रहा पर स्पष्टतः वे सर्वथा असंग हो गये थे, इच्छा, द्वेष, राग, मोह सभी कुछ का मन से परित्याग करके वे सहज स्वरूप में रहकर आत्मानन्द में विभोर रहने लगे ।

इसी अवस्था में एक दिन निर्देशित किया कि 'उनके इस पार्थिव शरीर को केदार खण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत केदारघाट स्थित श्री गंगामहारानी की पावन गोद में ही जल समाधि दी जाय, किसी भी दशा में उनका कोई भी पार्थिव अंश जल में बहकर भी केदार खण्ड क्षेत्र से बाहर न जाय । यदि
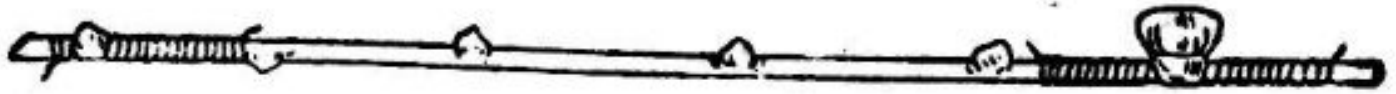
ऐसा सम्भव न हो तो केदारखण्ड स्थित उनके वेदानुसन्धानसंस्थानभवन के प्रांगण में ही उनके शरीर को समाधिस्थ कर दिया जाय' ।—इस प्रकार की दृढ़धारणाओं को सुनकर भक्तों में चिन्ता व्याप्त हो गई । सर्वत्र अनुष्ठान बैठा दिये गये उनके दीर्घजीवन की मंगलकामना के संकल्प से । जगद्गुरुशङ्कराचार्य श्री स्वामी निरज्जनदेवतीर्थ जी महाराज जब काशी पहुँचे तब अस्वस्थ से होते हुए भी साधारणतः ठीक थे आँख में पीड़ा थी । औषधि भी वैद्यराज श्री ब्रजमोहन दीक्षित जी की ही ले रहे थे परन्तु कोई लाभ विशेष नहीं हो रहा था क्योंकि उनका संकल्प ही कुछ अन्यथा था ।

महाप्रयाण से तीन चार दिन पूर्व जब उनकी सेवा में स्वामी श्री जगन्नाथानन्द जी, श्री सर्वेश्वर ब्रह्मचारी एवं अलखनिरंजन ब्रह्मचारी प्रभृति केदार खण्ड के तीसरे खण्ड पर उपस्थित थे तो स्वामी जी बोले—'जो कुछ कार्य हमसे कराना चाहो सो अभी करालो' ।—परन्तु उनके संकेत को उस समय कोई नहीं समझा । महाराज श्री के नेत्र में पीड़ा थी, शिर दर्द था । एकादशी को उसी दशा में स्वयं पाठ कर रहे थे कि एकदम तीव्र पीड़ा हुई नेत्र में तो वहीं तखत पर लेट गये । बोले—'त्रिअक्षरी' मन्त्र (ॐ ऐं० ह्रीं० श्रीं०) का जाप करो । सर्वेश्वर ब्रह्मचारी ने जाप किया । फिर बोले थोड़ा सेक दो, रुई गर्म करके सेका गया । फिर अलख ब्रह्मचारी राजवैद्य ब्रजमोहन दीक्षित जी को बुलाने चले गये । श्री सर्वेश्वर ब्रह्मचारी दुर्गा सप्तशती का पाठ सुना रहे थे । इसी बीच श्रीअलख ब्रह्मचारी भी वापिस आये तो नेत्र चिकित्सक डाक्टर की व्यवस्था की गई । डाक्टर ने नेत्र में 'ग्लूकोमा' बताया और महाराज को नासिका में डालने की औषधि दी । महाराज ने तुरन्त यह कह-कर मना कर दिया कि 'आज एकादशी है, निर्जलव्रत है, कहीं औषधि का अंश मुख में चला गया अन्दर ही अन्दर तो व्रत भंग हो जायगा' अतः औषधि नहीं डाली । फिर आपरेशन का प्रश्न आया तो ज्ञात हुआ कि वाराणसी के बड़े नेत्र चिकित्सक कहीं बाहर गये हुए है, मंगलवार को वापिस आयेंगे अतः उनके आने तक आपरेशन स्थगित रखा गया । एक बार महाराज बोले 'जब हमारी ही चिकित्सा की समय पर समुचित व्यवस्था नहीं हो पायी तब फिर इस देश के गरीब लोग तो बेचारे इसी तरह उपचार के अभाव में मर ही जाते होंगे ?—

इस रुग्णावस्था में भी महाराज श्री पूर्ववत् पूजन, भजन, अर्चन नित्य की भांति करते रहे । सर्वेश्वर ब्रह्मचारी से अकस्मात महाराज ने पूछा कि पाठ अपने लिये करते हो कि हमारे लिये सर्वेश्वर ने निवेदन किया 'महाराज आजकल तो जो कुछ भी करता हूँ सब आपको ही समर्पित है, आपके शीघ्र स्वास्थ्यलाभ के संकल्प से ही करता हूँ ।'

इसी मध्य उन्होंने अपने प्रिय शिष्य मार्कण्डेय ब्रह्मचारी जी को बुलाकर कहा कि 'जो भी कार्य हमारा अपूर्ण रह गया है उसे अब तुम पूरा करना ।' जिस प्रकार सद्गृहस्थ पिता अपने पुत्र को दायित्व सौंपकर निश्चिन्त होकर प्रयाण करता है उसी प्रकार सन्यासी अपने शिष्य को अधूरे कार्यों को पूरा करने का निर्देश देकर इस लोक से प्रयाण करते हैं । —इस कर्म को 'सम्पत्ति-कर्म' की संज्ञा दी गई है । निःसन्देह रूप से महाराज श्री ने सम्पत्ति कर्म करने के लिये पूज्य श्री मार्कण्डेय जी
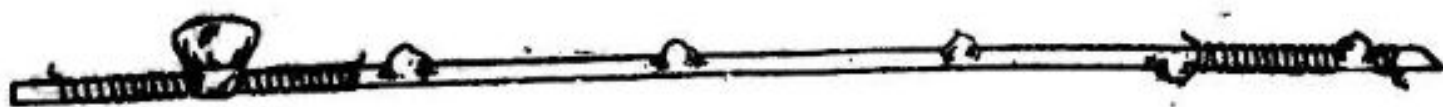
ब्रह्मचारी को आदेशित किया। महाराज श्री ने यह भी निर्देशित किया कि 'जब इस शरीर का अन्तिम समय उपस्थित हो तब हमारे ठाकुरजी हमारे वक्ष पर पधरा देना, गङ्गाजल, तुलसीदल मुख में डाल देना।' उनके द्वारा दिये गये उक्त निर्देशों को सुनकर सर्वत्र चिन्ता व्याप्त हो गई। सभी सन्त, महात्मा, सद्गृहस्थ, भक्त आदि काशी पहुँचने लगे। पुरी के जगद्गुरू शंकराचार्य श्री स्वामी निरञ्जन देवतीर्थजी महाराज जब माघ शुक्ला द्वादशी संवत् २०३८ (५ फरवरी १९८२) को काशी पहुँचे तो धर्म सम्राट से कहने लगे कि 'उन्हें उरई जाना है धर्मयात्रा पर आज्ञा हो तो हो आये।' तुरन्त धर्म सम्राट बोले 'हाँ—हाँ अवश्य जाओ पर देखो सोमवार ८ फरवरी को काशी अवश्य लौट आना।' उनकी इस बात से भी यद्यपि स्पष्टतः यह प्रगट था कि उन्होंने ८ फरवरी से पूर्व ही शरीर त्यागने का संकल्प ले लिया है परन्तु प्रत्यक्षतः किसी ने उसे समझा नहीं और पुरी पीठाधिपति अपनी धर्म यात्रा पर उरई चले गये।

एकादशी को ही श्री महाराज ने ब्रह्मचैतन्य ब्रह्मचारी से कहा कि 'चतुर्दशी आ रही है, रविवार का दिन है, प्रातः सवा नौ बजे पुष्य नक्षत्र में सर्व सिद्धि योग है, सावधान रहना ब्रह्मा, हमें जाना है।' त्रयोदशी को महाराज स्वस्थ थे। चतुर्दशी को ब्रह्म चैतन्य ब्रह्मचारी पूजा के लिये प्रातः पुष्प लेकर आये, महाराज स्नान करने गये परन्तु यह क्या ? आज बिना दण्ड कमण्डलु के क्यों ? ऊपर कक्ष में अनेक व्यक्ति पाठ, पूजा सम्पन्न कर चुके थे। श्री स्वामी जगन्नाथानन्द सरस्वती भी उस समय कहीं अन्यत्र गये थे। सर्वेश्वर ब्रह्मचारी दुर्गा सप्तशती का पाठ सुना रहे थे। श्री अलख ब्रह्मचारी वैद्यजी को बुलाने गये थे। महाराज उस समय एकाकी थे। बस पुष्प लेकर आने वाले ब्रह्म चैतन्य ब्रह्मचारी उस क्षण वहाँ पहुँचे। महाराज बोले—'श्री जी की किवाड़ी बन्द कर दो।' किवाड़ बन्द होने पर धर्म सम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ने ब्रह्मलीन जगद्गुरू शंकराचार्य श्री स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जी महाराज का स्मरण किया और कहने लगे 'वे हमारे अनन्य सहयोगी थे, उन्हें ब्रह्मलीन हुये एक अरसा हो गया, पुरी के शंकराचार्य परसों आये थे, उरई गये हैं, कल तक आ जायेंगे, तुम लोग उनका सम्मान करना।' फिर उपदेश देते हुए कहने लगे—'जब भगवान् श्रीकृष्ण प्रयाण करने लगे तो उद्धव जी ने प्रार्थना की कि महाराज हमारा क्या होगा ?' भगवान् ने उत्तर दिया था कि 'हम ज्ञान, वैराग्य का उपदेश दे चुके हैं, इसी में तुम्हारा यश, कीर्ति बढ़ेगी।' –फिर कुछ रूककर ठेठ बनारसी बोली में महाराज ब्रह्म-चैतन्य ब्रह्मचारी से बोले—'ताना देल्ली बाना देल्ली जन्तर देल्ली मन्तर देल्ली—हमारा शुभाशीर्वाद हइहै और तुम्हें क्या चाहिए ? बोलो !' –इसके बाद महाराज श्री ने श्रीसूक्त के सोलह मन्त्रों का जोर से पाठ किया। ऊपर जो श्री विद्या का चित्र (यंत्र) लगा था उस पर अपनी दृष्टि केन्द्रित कर ली, त्राटक लगा लिया। सर्वेश्वर ब्रह्मचारी को ब्रह्मचैतन्य ने पुकारा तथा गङ्गाजल, तुलसीदल, महाराज के मुख में डाला उन्होंने पूर्ण सावधानी के साथ उसे ग्रहण कर लिया। फिर उनके लिये निर्देशानुसार उनके ठाकुर जी व तुलसी जी को उनके वक्षस्थल पर पधरा दिया। और बस अब ७ फरवरी १९८१ रविवार चतुर्दशी का वह पुष्य नक्षत्र आ गया

प्रातः ९ बजकर १७ मिनट पर जब उस देवपुरूष ने तीन बार 'शिव, शिव, शिव' का उच्चारण कर इहलीला संवरण कर ली। धर्म का वह प्रचण्ड जाज्वल्यमान मार्तण्ड अस्त हो गया। तत्काल स्वामी श्री भास्करानन्दजी, ब्रह्मचारी गङ्गाचेतनजी, ब्रह्मचारी सर्वेश्वर जी, श्री गोयनका जी, श्री गोविन्द पण्डित आदि लोगों ने महाराज के पार्थिव शरीर को पद्मासन की मुद्रा में आसीन कर दिया। कानपुर दूरभाष करके उरई में स्थित दोनों शङ्कराचार्यों पुरी पीठाधीश्वर एवं ज्योतिष्पीठाधीश्वर महाराज को श्री कैलास द्विवेदी द्वारा सूचित किया गया। अर्द्धकुम्भ मेले प्रयाग में फोन करके धर्म संघ पण्डाल में पूज्य स्वामी श्री नन्द नन्दनानन्द सरस्वतीजी, श्री स्वामी सदानन्द सरस्वती (वेदान्ती स्वामी जी) महाराज आदि को सूचित कर दिया गया। मेरठ भी लाइटनिंग कॉल भेज कर सूचना दी गयी। तत्काल ही स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती, श्री स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती, श्री वैद्य पं० श्याम सुन्दर वाजपेयी, पं प्रेम नाथ शर्मा, पं० काली चरण पौराणिक आदि मेरठ से काशी पहुँच गये। सभी भक्तगण, महात्मागण काशी पहुँच गये अस्तंगत मार्तण्ड के अन्तिम दर्शन के लिये।

दिव्य भौतिक-देह गङ्गा की गोद में—

धर्म सम्राट कहा करते थे—

'ब्राह्मण्स्य हि देहोऽयं क्षुद्रकामाय नेष्यते।
कृच्छाय तपसे चेह प्रेत्यानन्त सुखाय च ।।'

सुख से सुख नहीं मिलता। विशेषतः ब्राह्मण का शरीर क्षुद्र काम के लिये नहीं अपितु घोर तपस्या और कष्ट सहन के लिये ही होता है।' —इसी विचारधारा को उन्होंने इस सुखोपभोग में अहर्निश डूबे समाज में सिद्धान्त का रूप देने का भीष्म प्रयास किया। अनेक शास्त्रीय अनुष्ठानों का, परिब्राजक-सन्यासी होते हुए भी स्वयं अनुष्ठान कर घोर साधना एवं तपस्यारत रहकर क्षुद्र मानव देह को भी दिव्य-देह में परिवर्तित कर दिया। आप कहा करते थे कि 'तप में भी अनशन की बड़ी महिमा है —'तपोनानशनात् परम'— अनशन से बढ़कर कोई तप नहीं है। स्वामीजी ने एक दो वर्ष तक नहीं तीस-चालीस वर्षों तक अन्न-ग्रहण नहीं किया, मीठा नहीं खाया, नमक का सर्वथा परित्याग कर दिया। निर्जल एकादशी व्रत से लेकर बारह दिवसीय पराक्-व्रत एवं कृच्छ-चांद्रायण व्रतों तक का अनुष्ठान किया। महामानव मनु महाराज की इस उक्ति को—'महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः'— उन्होंने चरितार्थ कर दिखाया कि यज्ञों के द्वारा, महायज्ञों के द्वारा साधक की देह ब्रह्मप्राप्ति के योग्य बनती है। अपने जीवन-काल में स्वामी जी ने छोटे बड़े शताधिक यज्ञों-महायज्ञों के अनुष्ठान पूर्ण वैदिक विधि विधानपूर्वक सम्पन्न कराये। इन सभी यज्ञों में उनको कोई व्यक्तिगत लाभ अभीष्ट, नहीं था अपितु 'धर्मग्लान्यधर्माभ्युत्थाननिवृत्तिपूर्वकं धर्म संस्थापनार्थं' एवं विश्व कल्याणकामना से ही उन्होंने इन्हें सम्पन्न कराया। पवित्रब्राह्मण-कुलोत्पन्न इस वैदिक-ऋषि ने अपने त्याग तपस्या अनुष्ठानादि से यह सिद्ध कर दिया कि—'ब्राह्मणो जन्मना श्रेयान्सर्वेषां प्राणिनामिह। विद्यया तपसा-

तुष्ट्या किमुमतकलया युतः।'

(समस्त प्राणियों में ब्राह्मण जन्म से ही श्रेष्ठ है, फिर विद्या, तपस्या, सन्तोषरूपमेरी (भगवान की) कलाओं से युक्त ब्राह्मण के विषय में तो कहना ही क्या है ?) ।

स्वामी जी अपने प्रवचनों में ऋग्वेद के इस मन्त्र का विशेष उल्लेख किया करते थे— 'अतप्ततनुर्नतदासोश्नुते दिवम्' इसका विवेचन करते हुए वे कहा करते थे कि 'यद्यपि भिन्न-भिन्न महानुभावों ने इस मन्त्र की अनेक प्रकार से व्याख्याएँ की हैं परन्तु हमारी दृष्टि में इसका अर्थ यह है कि भगवद्विरहजन्य तीव्रताप से जो तनु तप्त नहीं हुआ है, भगवान के वियोग का जिसको सन्ताप नहीं है–वह अतप्ततनु है, कच्चा है, उसे भगवद्प्रेमतत्त्व का अनुभव नहीं हो सकता'। स्वामी जी ने अपने मन, हृदय, अन्तरात्मा के साथ साथ इस लौकिक पाँच भौतिक-क्षणभंगुर शरीर को भी भगवद्-विरहजन्य तीव्रताप से खूब तपा लिया था। उनका वही दिव्य तप्ततनु आज विश्वनाथ बाबा की नगरी काशी में लाखों नर-नारियों के देखते-देखते साक्षात् ब्रह्मद्रवरूपी गंगाजल में समाधिस्थ होने जा रहा था। अपार जनसमूह उस पवित्र देह के अन्तिम दर्शन कर नेत्र लाभ कर रहा था।

गंगातट स्थित केदारखण्ड में उन महापुरुष का वह अलौकिक दिव्यदेह पद्मासन मुद्रा में भक्तों के दर्शनार्थ रखा गया था। परन्तु बनारस की गली में स्थित उक्त स्थान अपार जनसमूह को अपने में समा पाने में समर्थ नहीं था अतः एक भव्य पुष्पसज्जित मंच पर महाराज श्री के पवित्र देह को समाधि की मुद्रा में टाऊनहाल के खुले मैदान में ८ फरवरी की प्रातः आठ बजे जनता के दर्शनों के लिये समासीन कर दिया गया। केदारघाट से सफेद कार में दो शङ्कराचार्यों के बीच पार्थिव शरीर को लाने वाला कार चालक टाऊन हाल पहुँचते ही फूट फूट कर रो पड़ा। कार से सुसज्जित मंच तक इस ब्रह्मरूप पार्थिवदेह को स्वामी जी के शिष्यगणों ने अपने कन्धों पर ले जाकर मंच पर पधराया। 'हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे' के पावन उद्घोष सर्वत्र गूंज रहे थे। भजन, कीर्तन, पाठ आदि चहुँ ओर चल रहे थे। बीच बीच में स्वामी जी द्वारा राष्ट्र को दिये गये पावन जयकारे लगाये जा रहे थे—'धर्म की जय हो', 'अधर्म का नाश हो', 'प्राणियों में सद्भावना हो', विश्व का कल्याण हो,' 'गोमाता की जय हो,' 'गो हत्या बन्द हो,' 'पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी की जय हो',—हर हर महादेव'। राष्ट्र भर से आबाल वृद्ध नरनारी अपने धर्म सम्राट की दिव्य देह के अन्तिम दर्शन के लिये उमड़े पड़ रहे थे। टाउन हाल में मंच पर दर्शन लाभ के पश्चात् श्रद्धाञ्जलियों का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सभी धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, व्यापारिक, नागरिक संस्थाओं संगठनों के प्रतिनिधियों, बाहर से पधारे धर्मगुरुओं, साधुसंतों, एवं वाराणसी के प्रशासनिक अधिकारियों ने श्रद्धाञ्जलियाँ एवं पुष्पमालाएँ समर्पित कीं।

सर्व प्रथम गोवर्धनपीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री स्वामी निरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज एवं ज्योतिष्पीठ के जगद्गुरुशङ्कराचार्य श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज ने धर्म

सम्राट को पुष्पांजलियाँ समर्पित कीं तदनन्तर श्रद्धाञ्जलियों पुष्पाञ्जलियों का तांता लग गया। कुछ प्रमुख महानुभावों में थे सन्मार्ग के सम्पादक श्री स्वामी नन्दनन्दनानन्द सरस्वती जी महाराज, संकट-मोचन मन्दिर के महन्त पं० वीरभद्र मिश्र, परमहंसीगंगा आश्रम की ओर से पं० राजेन्द्रप्रसाद शास्त्री, कविराज वैद्य ब्रजमोहन दीक्षित, समाजवादी नेता श्री राजनारायण, भूतपूर्व मन्त्री श्री राज-बली तिवारी, भू० पू० विधायक श्री शतरुद्रप्रकाश, सम्पूर्णानन्दविश्वविद्यालय के भू० पू० वाइस चांसलर आचार्य श्री बद्रीनाथ शुक्ल, जहाजरानी बोर्ड के अध्यक्ष डा० रघुनाथ सिंह, कल्याण गीता प्रेस की ओर से श्री राधेश्याम खेमका, श्री प्रभुनारायण सिंह, श्री विश्वनाथ वसिष्ठ, काशी व्यापार-मण्डल के श्री राजकृष्णदास, रोटरी क्लब के अध्यक्ष श्री शशिकान्त दीक्षित 'गाण्डीव' दैनिक के रमेश-दत्तदूबे, पं० लक्ष्मीकान्त रामाचार्य, महर्षि पायलट बाबा, संसद सदस्य श्री सुधाकर पाण्डेय, श्री जग-जीवनराम की ओर से श्रीघनश्याम मिश्र, श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, कांग्रेस की ओर से डा० वेद-प्रकाश मिश्र, धीरेन्द्र नाथ राय, भू० पू० सांसद श्री चन्द्रशेखर सिंह, श्याममोहन अग्रवाल, विजय कुमार अग्रवाल, बालकृष्ण कपूरिया, महेश प्रसाद यादव, सन्मार्ग के श्री हरिशंकर पाण्डेय, जनवार्ता के श्री ईश्वरदेव मिश्र, दैनिक जागरण के श्री लक्ष्मी शङ्कर सण्ड, जयदेश के सम्पादक आनन्द बहादुर सिंह, रामराज्य परिषद की श्रीमती रत्नादेवी, इंका नेता श्री सागर सिंह, अयोध्या के सुप्रसिद्ध संत सीतारामशरणदास, मण्डलायुक्त श्री शैवाल कुमार मुखर्जी, पुलिस उपमहा-निरीक्षक श्री बलबीर सिंह बेदी, नगरमहापालिका प्रशासक श्रीदेवीदयाल, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री त्रिनाथ मिश्र, विकास प्राधिकरण के सचिव श्री जे० एन० द्विवेदी, श्री रमेन्द्र त्रिपाठी नगर पुलिस अधीक्षक श्री सी० डी० शर्मा नगराधिकारी वाराणसी·······आदि।

शिक्षण संस्थाओं में तो कोई ऐसी संस्था हो नहीं रही जिसने काशी की इस महानविभूति एवं पाण्डित्य के सर्वोच्च सिंहासन पर प्रतिष्ठित सरस्वती के वरदपुत्र को अपने श्रद्धा के सुमन अर्पित न किये हों। बल्लभराम शालिग्राम सांगवेद विद्यालय, आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, गोस्वामी तुलसी-दास संस्कृत महाविद्यालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय, धर्मसंघ शिक्षामण्डल आदि सहित काशी के समस्त संस्कृत विद्यालयों की ओर से पुष्पाञ्जलियाँ अर्पित की गयीं।

इनके अतिरिक्त स्वामी जी के तीर्थपुरोहित, तीर्थपुरोहित सभा मंच, द्रविड़ पुरोहित संस्था, नूतनबालक गणेशोत्सव, समाजसेवा मण्डल, संकटमोचन कमेटी, औरेया गान्धी आश्रम सर्वोदय मण्डल, हनुमानप्रसाद पोद्दार, अन्ध विद्यालय, धर्मसंघ, धर्मसंघ शिक्षा मण्डल, रामराज्यपरिषद, काशी सेवा समिति, अन्नपूर्णा मन्दिर, काशी विश्वनाथ मन्दिर, काशी पत्रकार संघ आदि अनेकों संस्थाओं की ओर से इन पुनीत आत्मा के प्रति हार्दिक एवं भावभीनी श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित की गयीं।

मैदागिन टाऊनहाल के विशाल प्रांगण में एक ऊँचे सुसज्जित मंच पर समाधि मुद्रा में बैठे स्वामी जी के पार्थिव शरीर को पुष्पाञ्जलियाँ समर्पित की जा रही थीं उस समय लाखों की संख्या में जन समूह उमड़ा पड़ रहा था। धर्म की जय एवं धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी की जय के निनाद

से वातावरण निनादित हो उठता था। मंच के पार्श्व में ब्राह्मणों द्वारा वैदिकमन्त्रोच्चार हो रहा था। श्रद्धालु भक्त जन भावविभोर होकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से भावाञ्जलियाँ समर्पित कर रहे थे। काशी का सारा वातावरण उस राममय सिद्ध सन्त के ब्रह्मीभूत होने से उस समय ब्रह्ममय हो रहा था, राममय हो रहा था—इस प्रकार ग्यारह बज गये वर्तमान युग की इस महानविभूति की दिव्यदेह के अन्तिम दर्शन करने के लिये सम्पूर्ण भारत वर्ष से नर-नारी काशी पहुँच रहे थे। इस प्रकार देश भर के वैदिक विद्वानों, साहित्यकारों, पत्रकारों, बुद्धिजीवियों, धर्माचार्यों, विभिन्न संगठनों, समाजसेवियों, शिक्षासंस्थाओं, राजनैतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने वर्तमान युग के धर्म सम्राट की उपाधि से विभूषित होने वाले त्याग-तपस्या की साक्षात् मूर्ति के दिव्य पार्थिव शरीर पर पुष्पाञ्जलियाँ अर्पित की, श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित कीं। उधर टाऊन हाल में यह कार्यक्रम चलते चलते तीन घण्टे हो गये, लोगों का तांता लगा था। सम्पूर्ण काशी नगरी शोकाकुल थी। अनेक वयोवृद्ध लोगों ने बताया कि ऐसा शोकयुक्त उत्साह एवं श्रद्धासिक्तवातावरण वाराणसी के इतिहास में नया था, अभूतपूर्व था, अनुपम था, अनोखा था।

दिनांक नौ फरवरी सन् १९८२ ई० को प्रातः ग्यारह बजे काशी की ही नहीं अपितु विश्व की उस महान विभूति के दिव्य शरीर की शोभायात्रा टाउनहाल से प्रारम्भ हुई तो धर्मसम्राट, स्वामी करपात्री जी महाराज के जय जयकार से दिगदिगन्त गूंज उठा। उनके उस पावन देह को एक सजी सजायी शिविका पर जिसे ट्रक पर सजाया गया था, पधरा दिया गया, प्रतिष्ठापित कर दिया गया। सबसे अग्रिम पंक्ति में पुलिस की गाड़ियाँ चल रहीं थीं, पुलिस बैण्ड रामधुन बजा रहा था, घुड़सवार पुलिस सम्मान प्रदर्शित करते हुए धीरे धीरे चल रहे थे। उसके पीछे धर्मपथगामिनी जीप, दण्डी स्वामियों का विद्वानों का समूह रामधुन गान करते हुये चल रहा था सुसज्जित सिंहासन पर महाराज के श्रीविग्रह के पास पुरीपीठ एवं ज्योतिष्पीठ के जगद्गुरुशङ्कराचार्य स्वयं बैठे थे। अन्य प्रमुख महानुभावों में थे पूज्य श्री स्वामी नन्द नन्दनानन्द सरस्वती, नैमिषारण्य के स्वामी श्री नारदानन्द जी, स्वामी श्री जगन्नाथानन्द जी सरस्वती, श्री स्वामी सदानन्द सरस्वती वेदान्तीजी, श्री ब्रह्मचारी अलख निरञ्जन प्रभृति भी सज्जित ट्रक पर ही बैठे हुए थे। चँवर ढुला रहे थे। ट्रक पर वह दिव्य शरीर पीठासीन समाधि मुद्रा में विराज रहा था। उनके तेजस्वी मुखमण्डल पर सदा की भांति शान्ति विराज रही थी। वही केशर-मिश्रित चन्दन चर्चित त्रिपुण्ड के मध्य कुंकुम बिन्दु शोभित थी। बस अन्तर यही था कि उनके वह करुणरस से परिपूर्ण, दिव्य-भव्य विशालनेत्र आज बन्द थे। वाराणसी भर में आज अन्यत्र पूजनादि के लिए पुष्पमालाएँ शेष शायद ही बची होंगी। अपार जनपारावार उमड़ रहा था। स्थान-स्थान पर रोक-रोक कर काशी की अनेक संस्थाओं की ओर से उनके प्रधान महन्त एवं विशिष्ट नेतागण पुष्पमालाएँ, रुद्राक्षमालाएँ अर्पित कर रहे थे, आरती उतार रहे थे। कोई दुकान, गवाक्ष, छत, बरामदा, छज्जा, अटारी ऐसी नहीं दिखाई पड़ती थी जहां पर भक्त आबाल वृद्ध नर-नारी खड़े होकर अपने प्रिय महात्मा के अन्तिम दर्शन कर पुष्पमालाएँ चढ़ाकर

पुष्पों की वृष्टि कर जय जयकार न कर रहे हो। महिलाएँ स्थान स्थान पर सामूहिक रूप में भजन गा रही थी अट्टालिकाओं से जिस समय पुष्पों की वर्षा होती थी उस समय धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज अमर रहें, गो हत्या बन्द हो, हर हर महादेव के नारों की तुमुलध्वनि से वातावरण गूंज उठता था। इतनी भीड़ थी कि मैदागिन से चौक तक जाते जाते ही एक घण्टा से भी अधिक समय लग गया। इस अपार जन समूह से युक्त इस महायात्रा में, साधु-सन्यासी, विद्वान नेता, श्रमिक, व्यवसायी, पत्रकार, साहित्यकार, शिक्षक, विद्यार्थी, महिलाएँ समान रूप से सम्मिलित होकर जय जयकार करते हुए चल रहे थे। ढोल मंजीरे बजाते हुए संकीर्तन कर रहे थे। सम्पूर्ण मार्ग भर पुष्प वर्षण के साथ-साथ पैसों की, सिक्कों की, नये नोटों की वर्षा की गयी। इस प्रकारमहाराज श्री के पार्थिव शरीर की यह महायात्रा मैदागिन, बुलानाला, नीचीबाग, बांसफाटक, गोदोलिया होता हुआ दशाश्वमेघघाट की ओर मन्थर गति से बढ़ रही थी। अन्नपूर्णा मन्दिर के महन्त श्री त्रिभुवनपुरी एवं सुभाषपुरीजी ने बांस-फाटक पर स्वामी जी का पूजन अर्चन किया चादर उढ़ाई। महाराज शिष्य के विद्वान शिष्य जज स्वामी श्री विपिन चन्द्रानन्द सरस्वती जी ने भी यहाँ महाराज को माल्यार्पण किया और महायात्रा में सम्मिलित हुए। अखाड़े, की ओर से राजा भैय्या एवं श्री शिवप्रसाद ने माला पहनाई। इस प्रकार तीन किलोमीटर का मार्ग लगभग तीन घण्टों में तय करके महायात्रा जैसे ही दशाश्वमेध घाट पहुँचा, सुगन्धित पुष्पमालाओं से आच्छादित महाराज श्री के उस पावन देह को ट्रक की शिबिका से उतार कर पहले से ही सजे सजाये बजड़े पर पधरा दिया गया। बजड़े को मोटर बोट से बांधकर केदार-घाट ले जाया गया हजारों की संख्या में लोग दशाश्व मेधघाट से केदारघाट तक की अन्तिम महायात्रा में सम्मिलित होने के लिये सैकड़ों नावों बजड़ों आदि में घण्टों पूर्व से ही बैठे हुए प्रतीक्षारत थे। जिससे जैसे भी बना इस महामानव के महाप्रयाण में सम्मिलित होने के लिये अब सैकड़ों नावों, बजड़ों आदि पर आरुढ़ होकर जय जयकार कर रहा था। काशी-वाराणसी की पतित पावनी माँ गंगा का वह विस्तृत फैलाव, केदारघाट से रामनगर के दुर्ग तक मीलों लम्बा गंगा का वह फाट और उस पर यह रंग-बिरंगे बजड़े जिन पर भगवन्नाम संकीर्तन, एवं धर्मसंघ के जय जयकार गूंज रहे थे—विश्वनाथ की इस पावन नगरी काशी को एक अद्भुत गरिमा प्रदान करती हुयी यह अन्तिम यात्रा बजड़ों पर शनैः शनैः सरकती डा० राजेन्द्र प्रसाद घाट दशाश्वमेध घाट होती हुयी जैसे ही शीतलाघाट पहुँची—वहाँ एकदम रूक गयी। शीतला मन्दिर के घण्टे, शंख, नगाड़े आदि बज उठे अपने अभिनवशङ्कर के अन्तिम स्वागत में। चहुँ ओर भक्तों की अपार भीड़ उमड़ रही थी। जहां तक दृष्टि जाती भक्तों की श्रद्धावनत अपार भीड़ फूल बरसाती जय जयकार करती दिखाई पड़ रही थी। कलकत्ता, दिल्ली, जयपुर, बम्बई, मेरठ आदि स्थानों से स्वामी जी के अनेक भक्तगण वायुयान द्वारा पधारे, कार द्वारा अथवा रेल द्वारा पधारे, जिसे जहाँ स्थान मिल सका वहीं रुक गया। काशी बन्द थी, बाजार बन्द थे, सिनेमा बन्द थे, विद्यालय बन्द थे, मुसलमानों तक की दूकानें बन्द थीं-विचित्र सा वातावरण हो गया था उस दिन विश्वनाथ की इस त्रैलोक्यपावन नगरी काशी का।

उस समय शोकाकुल-समुदाय, धर्मभावनाओं से ओत-प्रोत था, श्रद्धासमन्वित होकर जैसे भी बन पड़ता अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर रहा था। अन्तिम दर्शन लाभ कर अभिनव शङ्कर के उस पावन दिव्य यज्ञ-पूत दिव्य-देह की झांकी को हृदय में बसाने के लिये उतावला हो रहा था जिसकी समानता में दूसरा व्यक्तित्व शताब्दियों से दृष्टि में नहीं आ रहा था। वह पावन देह अब जा रही थी सदा सदा के लिये ओझल होने के लिये। सब लोग चल रहे थे, चलना चाह रहे थे, उड़कर जाना चाह रहे थे उनके निकट दर्शन के लिये परन्तु स्तब्ध थे, विवश थे, असहाय थे, कारण बीच में अपार जलराशि, असंख्य नाव-बजड़े, अनन्त जनसमूह बाधक जो बन रहे थे; व्यवधान डाल रहे थे। जो जहाँ था वहीं से उसने अपनी मनोभावनाओं को दृष्टि के माध्यम से गंगा के मध्य में अवस्थित विशाल सुसज्जित बजड़े पर प्रतिष्ठित धर्मसम्राट पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी के उस पवित्र शरीर पर केन्द्रित कर रक्खा था मानों यन्त्रजटित से होकर स्वयं जड़ता को प्राप्त हो गये हों। भक्तों की इस भावावस्था में जब गगनभेदी-धर्म के जय जयकार गूंजते, हर हर महादेव शम्भो, काशी विश्वनाथ गंगे की पावन ध्वनि श्रवणेन्द्रिय से जाकर टकराती—तब सम्पूर्ण मानव समाज में एक हलचल सी मच जाती। शब्दों में उस अलौकिक, अद्भुत करुणरससिक्त, शोकपूर्ण परन्तु आध्यात्मिक विचित्र वातावरण को प्रगट करने, बाँधने की सामर्थ्य नहीं है, जिन्होंने स्वयं उस वातावरण में निमग्न रहकर अवभृथ स्नान किया है वे ही महाभाग उसकी अनुभूति कर सकते हैं। युगपुरुष, राष्ट्रपुरुष, रामराज्य दर्शन का सशक्त प्रस्तोता महान नीतिविशारद, यज्ञपुरुष, वेदपुरुष, धर्मात्मा, महात्मा, आधुनिक भौतिकवाद में आकण्ठ निमग्न वर्तमान धर्मविहीन उच्छृङ्खलसमाज में त्याग, तपस्या, तितिक्षा का मानबिन्दु–'करपात्री,' अखण्डराष्ट्र, गोरक्षा, शास्त्रीय संविधान, वैदिक मर्यादा रक्षण हेतु आजीवन संघर्षशील, कर्मठ-सन्यासी कारक पुरुष जेलयात्री, महानदार्शनिक, परमज्ञानी, उद्भट्विद्वान, परमशैव, परमवैष्णव, परमशाक्त, राम ही थे इष्टदेव जिनके, श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द श्यामसुन्दर मदनमोहन एवं वृषभानु नन्दिनी राधारानी के लीला निकुंज में वर्षों तक स्वयं निवास कर श्रीमद्-भागवत के हृदयरूपी रासपंचाध्यायी में अवगाहन करने वाले परमभक्त स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती जी महाराज का पार्थिव शरीर आज माँ गंगा की गोद में प्रविलीन होने जा रहा है, सबके देखते-देखते यह अलौकिक दिव्य देह उनके संकल्पानुसार केदारखण्ड में सदा-सदा के लिये समा जाने के लिये जब गंगा की अगमजलधारा के मध्य केदारघाट पहुँचा तो अपनी पारम्परिक वेशभूषा में काशी के डोमराजा श्री कैलाश भी अपने बजड़े पर उपस्थित हुए और अपने बजड़े को आगे निकालकर उसमें बिछी कुर्सी पर बैठे श्वेतवस्त्रधारी डोमराज ने आकर याचना की कि 'महाराज हमें यहाँ का कर दीजियेगा।' नियमानुसार एवं परम्परानुसार मृतक की वस्तुओं को निकाल लिया जाता है जो हमारा होता है, परन्तु यह महात्मा कोई साधारण विभूति नहीं थे अतः मैं उक्त नियम तोड़ते हुए याचना करता हूँ कि महाराज की कोई भी वस्तु कर के रूप में हमें प्रदान की जाय।' पुरी पीठाधीश्वर महा-

भगवान् भूत-भावन विश्वनाथ की नगरी काशी केदार खण्ड गङ्गातट पर वेदानुसन्धान कक्ष में स्नान, ध्यान, पूजन, अर्चनादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर मस्तक पर त्रिपुण्ड, मुख में तुलसीदल-ब्रह्मद्रव-गङ्गाजल, वक्षस्थल पर तुलसी-रुद्राक्षमालाएं धारण कर स्वाराधित शालग्राम एवं नर्मदेश्वर को हृदय प्रदेश पर विराजमान किये, नेत्रोन्मीलन कर 'शिव', 'शिव', 'शिव' का उच्चारण करते हुए वे अभिनव शङ्कर माघ शुक्ल चतुर्दशी विक्रम संवत् २०३८ (७–२-१९८२ ई०) को ब्रह्मलीन हो गये।

जब तक वेद, शास्त्र, गीता, गंगा, गायत्री, गो, ब्राह्मण, राम, कृष्ण वर्णाश्रम धर्म और इनके मूल स्थान विश्वविराट् के हृदय प्रदेश इस अखण्ड भारत राष्ट्र का अस्तित्व रहेगा इन पवित्रात्मा श्री करपात्री स्वामी की वाणी इस राष्ट्र के भक्तों को धर्म कार्यों में प्रवृत्त होने की प्रेरणा देती रहेगी।

राज ने धर्मसम्राट के दैनिक प्रयोग में आने वाली अनेक महत्वपूर्ण वस्तुएँ, सिंहासन, वस्त्र, कालीन आदि कर के रूप में डोमराजा को दिलवायीं। तब बजड़ा आगे बढ़ा।

इस सम्पूर्ण महायात्रा का संचालन पं० बटुकनाथ शर्मा ने किया। महाराज श्री की इच्छा थी कि 'उनका नश्वर शरीर केदारखण्ड में ही छूटे और उनके पंच भौतिक शरीर को केदारघाट पर ही जल समाधि दी जाय' उन्होंने यह भी निर्दिष्ट किया था कि—'किसी भी प्रकार उनके शरीर का कोई भी अवयव बहकर भी केदारघाट (केदारखण्ड) क्षेत्र से बाहर न जाने पाये; यदि यह सम्भव न हो तो उनके शरीर को केदारखण्ड स्थित रामकृपेश्वर मन्दिर के प्रांगण में भूमि में समाधिस्थ कर दिया जाय'—उनकी इस अन्तिम इच्छा की पूर्त्ति का वह अवसर अब उपस्थित था। केदारघाट पहुँचने पर स्वामीजी की देह के समीप बैठे हुए भक्तों और शिष्यों में विचार विमर्श हुआ, मन्त्रणा की गयी और तत्पश्चात् पुरी पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वामी निरञ्जनदेव तीर्थ ने घोषणा की कि—'मुझे सभी लोगों ने सर्वसम्मति से श्री स्वामी करपात्रीजी महाराज का अन्तिम संस्कार करने के लिये अधिकृत घोषित किया है। अत: मैं स्नान कर क्रियाकर्म करने जा रहा हूँ।' —इस घोषणा के बाद जगद्गुरुजी ने गङ्गा में स्नान किया। फिर आचार्य पं० जोषणराम अग्निहोत्रीजी द्वारा षोडषोपचार पूजन कराया गया। सर्व प्रथम स्वामी करपात्री जी महाराज की उस परम पवित्र दिव्य पार्थिव देह को गङ्गाजल से स्नान कराया गया इसके बाद क्रमश: नियमानुसार दुग्ध, दधि, घृत, शहद, एवं शर्करा स्नान कराया गया पुन: शुद्धोदक स्नानोपरान्त नये वस्त्र धारण कराये गये। दिव्य गन्धानुपेलन किया गया। मस्तक पर वही कुंकुम बिन्दु से युक्तत्रिपुण्ड शोभित हो रहा था। गले में स्फटिक की मालाएँ पड़ी थीं, रूद्राक्ष की मालाएँ झूल रही थीं, तुलसी की मालाएँ सुशोभित हो रही थीं। बाहु में उनका वही आराधित स्वर्णमण्डित नवरत्नयुक्त अनन्त शोभायमान था। वास्तव में उस दिव्यात्मा का वह दिव्य शरीर आज बड़ा ही शोभायुक्त लग रहा था, एक विलक्षण आभा–प्रभा–कांति से सम्पन्न दीख रहा था। उस भौतिक, लौकिक, मायिक प्राकृत शरीर में अभौतिकता, अलौकिकता, अमायिकता एवं अप्राकृतता स्पष्टत: दृष्टिगत थी। अपार जनसमूह इस पावन देह के दर्शन कर उस स्वरूप को हृदय में समा रहे थे, चित्रकार कैमरे में उतार रहे थे। असंख्य जन समूह के हृदयों की धड़कन बढ़ती जा रही थी, श्वास–प्रश्वास दीर्घ हो रहे थे, शरीर रोमांचित हो रहे थे, हाथ जुड़ रहे थे। अब वह अवसर आया जब परम्परानुसार शङ्ख से कपालछेदन करना था। परन्तु स्वामी निरञ्जन देव तीर्थजी ने कहा कि—'मैं स्वामीजी जैसे महान सन्त के कपाल में छेदन नहीं कर सकता और यह कहते-कहते वे बिलख पड़े। उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। बस उन्होंने पवित्र गङ्गाजल से भरे शङ्ख को स्वामीजी के कपाल से स्पर्श कराके ही कपाल क्रिया सम्पन्न की। ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो उस समय भाव-विह्वल होकर गलश्रुधार न हुआ हो। स्वामीजी के पार्थिव शरीर को षोडशोपचार पूजन के अनन्तर पत्थर के बने एक अत्यन्त सुदृढ़ समाधिपात्र में रख दिया गया। पूजन में नित्य प्रयुक्त होने वाली मालाएँ आदि यथावत स्वामीजी ने धारण कर रखी थीं। इन अमूल्य वस्तुओं को स्मृति के रूप में सुरक्षित रखने के किसी भक्त के प्रस्ताव पर पूज्य जगद्गुरुजी ने स्पष्टत:

एवं दृढ़ शब्दों में उन्हें उतारने से मना कर दिया और लोहे के मजबूत तारों से चारों ओर से भली प्रकार जड़कर उस विशाल प्रस्तर समाधिपेटिका को बजड़े के कोने से केदारखण्ड क्षेत्र में बीसों फीट गहरी गङ्गा की अगम जलधारा के मध्य में समाधिस्थ करने के लिये जैसे ही संकल्प व्यक्त किया गया तो जो जन समूह स्तब्ध खड़ा था, दम रोके, सहसा बिलख पड़ा। कोई रो रहा था, कोई भजन गा रहा था। कोई जय-जयकार कर रहा था। वेद-मन्त्रोच्चार हो रहा था। रामधुन चल रही थी—हर हर महादेव के तुमुल जयघोष, स्वामी करपात्रीजी अमर रहें; 'सनातन धर्म की जय' 'काशी विश्व-नाथ गंगे हर-हर महादेव शम्भो' आदि की ध्वनियों के मध्य जैसे ही अपराह्न के साढ़े तीन बजे पेटिका को पुण्य सलिला मां गङ्गा की गोद में उतारा गया कि अनेक दण्डी सन्यासीगण भी स्नान/आचमन हेतु गङ्गा में कूद पड़े। भक्त भावुकों की भाव समाधि लग गयी, अनेक भक्तगण बेहोश हो गये। उस समय एक महान आश्चर्य हुआ। सवेरे से ही तेज धूप निकली थी परन्तु अन्तिम प्रयाण की इस शोकाकुल बेला में भगवान भुवनभास्कर भी इस कारूणिक दृश्य को न देख सके और अकस्मात् मेघ खण्डों के ऊपर जाकर छिप गये, ओझल हो गये। टनों भार की प्रस्तर पेटिका जल में विसर्जित होते ही अपार जलराशि पचासों फीट ऊँचाई तक उछलकर ब्रह्मविद्‌वरिष्ठ की ब्रह्मरूप दिव्य देह को गोद में लेने को मचल उठी। उछलते जल की ऊँचाई मानो मेघमण्डल को स्पर्श करने को आतुर हो उठी हो। उधर भाव समाधि में लीन भक्तों ने देखा कि सूर्यमण्डल को भेदन करके वह दिव्यात्मा सीधे ब्रह्मलोक प्रयाण की ओर जैसे ही अग्रसर हुई कि ब्रह्मलोक की अनेक दिव्यात्माएँ अपने सूक्ष्म चिन्मय-स्वरूप में मेघों की आड़ लेकर प्रसन्न मन होकर पंक्तिबद्ध खड़े हुये इस दिव्य महापुरुष का स्वागत कर रही थीं। यहाँ के लौकिक वाद्ययन्त्र अपनी शोकधुन बजाकर शान्त हो चुके थे उधर ब्रह्मलोक में हर्ष की दुंदुभियाँ बज रही थीं इस प्रकार श्रावण शुक्ल द्वितीया, रविवारसम्वत् १९६४ को आविर्भूत होकर उन्होंने माघ पूर्णिमा, रविवार, सम्वत् २०३८ विक्रमी को रविवार के उसी पवित्र दिन जिस दिन वे आये थे, स्नान, ध्यान, पूजनादि से निवृत्त होकर प्रातःकाल की बेला में शुभ पुष्य नक्षत्र में इस शरीर का परित्याग कर दिया।

उनकी स्मृति को पत्रकार पन्नों पर उतार रहे थे, चित्रकार कैमरों में बन्द कर रहे थे, पर्यटक जल समाधि की उस अपूर्व झाँकी को स्मृति पटल पर संजो रहे थे और भक्त भावुकगण उनके स्वरूप को, उनके उपदेश को उनके आदेश को हृदयङ्गम कर रहे थे। उसी की किंचिमात्र झलक यहाँ दर्शाने का प्रयास किया गया है। गङ्गा तट पर खड़े एक भक्त के मुख से प्रस्फुटित भगवान आद्य शङ्कराचार्य का यह श्लोक आज भी हमारे कानों में गूंज रहा है:—

मातः शाम्भवि शम्भुसङ्गमिलिते, मौलौ निधायाञ्जलिं,
त्वत्तीरे वपुषोऽवसानसमये नारायणाङ्घ्रि द्वयम्।
सानन्दं स्मरतो भविष्यति मम प्राण प्रयाणोत्सवे,
भूयाद् भक्तिरविच्युता हरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती॥

"भगवद्विमुखता ही प्राणियों के पतन का प्रधान हेतु है और भगवदुन्मुखता ही सर्वानन्द का साधन है। जो पुरुष भगवान् से विमुख है; जो नामरूपक्रियात्मक प्रपंच में ही आसक्त हैं उसे ही भगवान् की माया से मोहित होने के कारण भगवद्विस्मृति हुआ करती है। स्वरूप विस्मृति के पश्चात् विभ्रम होता है; जो असंग आत्मा में संग की; अकर्त्ता में कर्तृत्व की और एक में अनेकत्व की, भ्रान्ति करा देती है। उस विभ्रम से द्वैत बुद्धि होती है; द्वैतबुद्धि से ही भय होता है। अतः बुद्धिमान पुरुष को चाहिये कि अनन्यबुद्धि से उस पूर्ण-परमब्रह्म परमात्मा का ही भजन करे। इससे माया इस प्रकार भाग जाती है जैसे क्रुद्ध तपोधनों के सामने से वेश्या।"
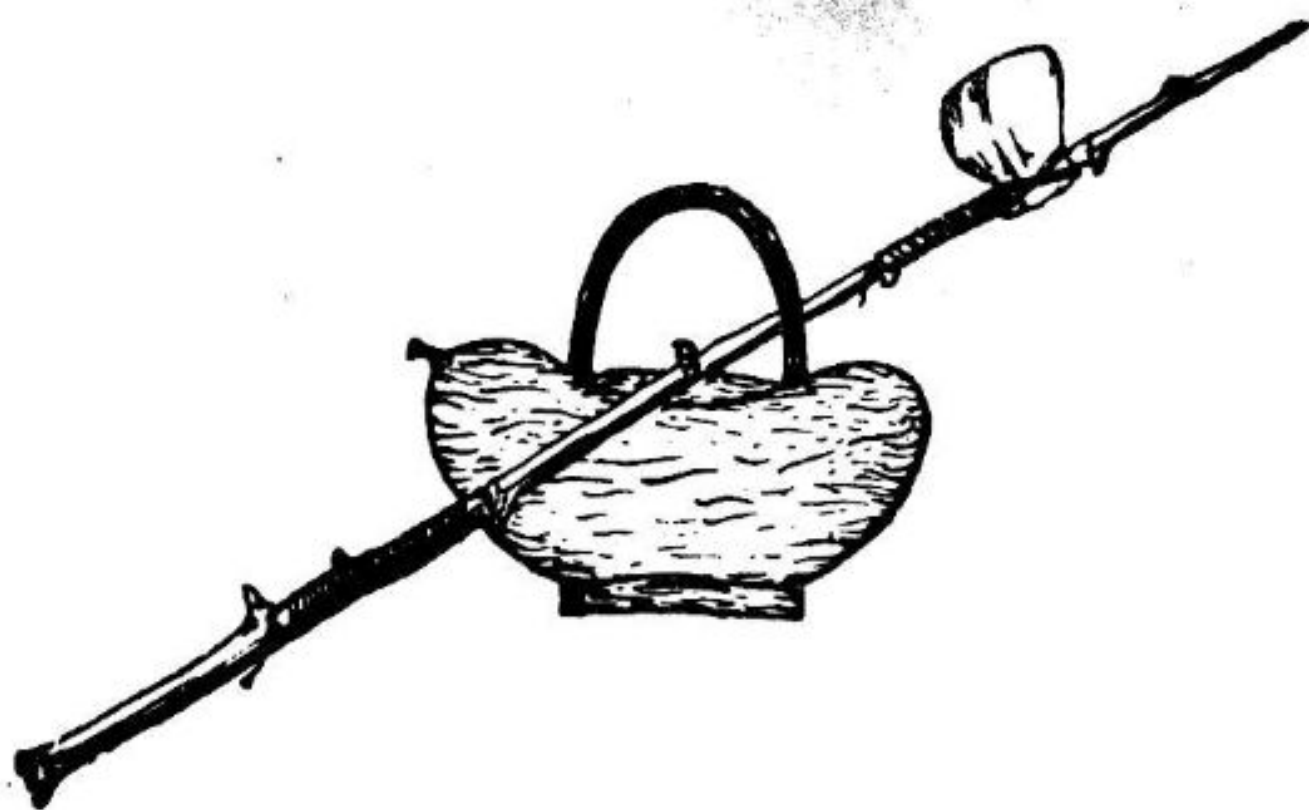
: श्रद्धाञ्जलियाँ :

'पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ब्रह्मविद् थे और ब्रह्मविद् ब्रह्म ही होता है। तात्पर्य यह है कि स्वामी जी नहीं रहे यह हम कैसे कह सकते हैं ? पचास वर्ष के पहले देश में इतने धर्मानुरागी नहीं थे जितने आज उनकी तपस्या से हैं। उन्होंने उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक धार्मिक पुनर्जागरण का काम किया है। धर्म के तो वे पर्याय ही थे। ऐसे महात्मा यदि कुछ दिन और हम लोगों के बीच रहते तो हम लोगों का काम आगे बढ़ जाता'।

—शृङ्गेरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री अभिनव विद्यातीर्थ जी महाराज, दक्षिणाम्नायः श्रृंगेरी ।

卐 卐 卐 卐

'उन्हें पूर्वाश्रम के पिताजी ने महाराज श्री के सुपुर्द किया जिसका निर्वाह पूज्य श्री ने अंत तक किया। पूज्यश्री के अन्तिम सन्देश सनातनधर्म के विरोधियों से लोहा लेने, वर्णाश्रम मर्यादा की रक्षा करने एवं गोमाता की हत्या रोकने के प्रयास करने के लिये पूरी तरह डटे रहना, आग लगे, ओला पड़े, जरुरत पड़े तो फांसी के तख्ते पर झूल जाना। अतः इस कार्य में जीवन उत्सर्ग भी हो जाय तो हमें खेद नहीं होगा। पूज्य श्री द्वारा स्थापित संस्थाएं पूज्य श्री कायश शरीर हैं यहां झाड़ू देने में भी मैं अपने को गौरवान्वित समझूंगा। पूज्य श्री ने वेदों पर जो काम किया है उसे पूरा कर प्रकाशित किया जायेगा। जिस प्रकार सूरदास को राह पर लाने के बाद श्री कृष्ण ने उन्हें छोड़ दिया उसी प्रकार पूज्य श्री हमें राह पर लगाकर छोड़ गये हैं। उनके अन्तिम सन्देश का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है'।

—गोवर्धनपीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीस्वामी निरंजन देव तीर्थ जी महाराज, पूर्वाम्नायः, जगन्नाथपुरी ।

卐 卐 卐 卐

वर्तमान शताब्दी में भगवान आद्य श्री शङ्कराचार्य जी महाराज द्वारा प्रतिष्ठापित अद्वैत सिद्धान्त को आगे बढ़ाने के कार्य में श्री स्वामी करपात्री जी महाराज ने बड़ा कार्य किया है। जगद्गुरु भगवान् श्री शङ्कराचार्य जी द्वारा स्थापित चारों पीठ देश की चारों दिशाओं में गत ढ़ाई हजार वर्षों से वेदान्तमत के प्रचार प्रसार में निरत रही हैं। वर्तमान समय में धर्म-सम्राट स्वामी श्री करपात्री जी ने सनातन धर्म की इन धर्मपीठों को अखिल भारतवर्षीय धर्म-

संघ आदि के माध्यम से सुगठित रूप से आध्यात्मिक जगत में प्रतिष्ठित किया । अनेक यज्ञों के अनुष्ठान पूर्ण वैदिक विधिविधान से सम्पन्न कराए तथा सर्व वैदिक शाखा सम्मेलनों के आयोजन कराके सनातन धर्म की महत सेवा की । उन्होंने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन कराया तथा सुप्त सनातनी समाज को गोरक्षा, धर्मरक्षा की ओर प्रेरणा देकर जन-आन्दोलनों का संचालन किया । वे बड़े कर्मनिष्ठ, सामर्थ्यवान वेदान्तनिष्ठ महापुरुष थे ।

—श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीमदभिनव सच्चिदानन्दतीर्थ जी महाराज,
पश्चिमाम्नायः द्वारका—शारदापीठ, द्वारका ।

卐 卐 卐 卐

'अनन्त श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन हो जाने से देश की एक ऐसी अपूरणीय क्षति हुयी है जिसे पूरा नहीं किया जा सकता । वे इस युग की एक महान विभूति थे। उन्होंने धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान दिया और अपना सम्पूर्ण जीवन धर्म के प्रचार-प्रसार तथा लोक-कल्याण के लिये अर्पित कर दिया । स्वामी जी ऐसे समय में पैदा हुए जब भौतिक विज्ञान और आधुनिकता के कारण संसार में अन्याय, अत्याचार और अनैतिकता का बोलबाला हो रहा था तथा लोगों का धर्म और अपने प्राचीन वेद-शास्त्रों पर से विश्वास उठ गया था, लेकिन स्वामी करपात्री जी ने अपनी लेखनी और उपदेशों के द्वारा लोगों को धर्म और सत्य का सन्मार्ग दिखाया और निर्भय रहते हुए अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया ।

मैंने पूज्य श्री के साथ रहकर अध्ययन किया तथा श्रीविद्या की दीक्षा ली । पूज्य श्री का प्रादुर्भाव भारत में भौतिकवाद के चरण जब बढ़ रहे थे, तब हुआ । वे शास्त्रीय प्रमाणों को उपस्थित कर धर्मशास्त्रों से विचलित हुयी श्रद्धा को पुनः बनाये रखने में समर्थ हुए। महाराज श्री बराबर एक श्लोक कहा करते थे—

'मतयो यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति वानराः ।
शास्त्राणि यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति ते नराः॥

'प्रत्यक्षानुमानादि मूलक बुद्धि जहाँ तक जाती है वहाँ तक ही जाने वाले 'वानर' आदि पशु होते हैं । परन्तु प्रत्यक्षानुमान एवं शास्त्र जहाँ तक चलते हैं, वहाँ तक चलने वाला प्राणी ही 'नर' होता है' । जीवन, ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, योग, धर्म आदि का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था, जिसमें उनकी गहरी पहुँच नहीं थी । महाराज श्री साक्षात् ब्रह्मस्वरूप थे । स्वयं में मुक्त थे। उन्होंने भीष्म की तरह उत्तरायण होने पर ही प्राणों का परित्याग किया । यह केवल संयोग

नहीं माना जा सकता कि महाराज श्री ने माघ में काशी केदारखण्ड में चतुर्दशी के दिन शरीर त्यागा और उनकी षोडसी महाशिवरात्रि के शुभ दिन पड़ी। हम प्रार्थना करते हैं कि वे अपने पदचिह्नों पर चलने की हमें प्रेरणा प्रदान करें।'

—ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज, उत्तराम्नाय:, बद्रिकाश्रम।

卐 卐 卐 卐

'पूज्यपाद द्वारा गोवध बन्दी आन्दोलन, अखण्ड-भारत, शास्त्रीयशासन विधान, मन्दिरों की मर्यादा सुरक्षित रहने, धर्म में हस्तक्षेप न किये जाने के लिये किये गये संकल्प, आन्दोलन एवं बिभिन्न प्रयास ही उनके कीर्तिस्तम्भ हैं। जिस दिन सम्पूर्ण भारत में पूर्णतया गोवंशवध बन्दी हो जायगी उसी दिन पूज्यपाद के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी'।

—काशी सुमेरुपीठाधीश्वर जगद्गुरुशङ्कराचार्य श्री स्वामी शंकरानन्द सरस्वती जी महाराज, सुमेरुपीठ, काशी।

卐 卐 卐 卐

'अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री करपात्री जी महाराज का चरित्र लोकोत्तर एवं पावनतम आदर्श था। उनके द्वारा प्रतिष्ठापित धर्मसंघ, रामराज्यपरिषद जैसी परमहितकारी संस्थाओं तथा गोहत्यानिरोध आन्दोलन आदि के द्वारा पूज्य स्वामी जी ने विश्वकल्याण के लिये और सनातन धर्म जगत के लिये महत कार्य सम्पादन किया।'

—अनन्त श्री जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद।

'पूज्य स्वामी जी महाराज, मूर्तिमानवेद थे, धर्मावतार थे। उन्होंने वेद, शास्त्र, गो, धर्म आदि की रक्षार्थ विविध संस्थाओं के माध्यम से बहुमुखी कार्य सम्पादन कर महान आदर्श प्रस्तुत किया है। उनके श्रीचरणों में हम श्रद्धासुमन समर्पित करते है।

—पूज्यपाद जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्री गोपालदत्तशास्त्री, वृन्दावन।

卐 卐 卐 卐

'पूज्यपाद श्री स्वामी जी मूर्धन्यविद्वान्, महानसन्त, एवं साधक थे। स्वामी श्री करपात्री जी महाराज न केवल धर्मप्रेमी भक्तजनों के श्रद्धास्पद थे अपितु हिन्दू धर्मशास्त्रों के

गम्भीर विवेचक एवं भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक थे। उनके तिरोधान से धार्मिक जगत को बड़ा आघात लगा है। स्वामी जी के स्थान की पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नहीं है।

—गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवैद्यनाथ जी महाराज गोरखपुर।

卐 卐 卐 卐

'महाराज श्री की वह मूर्त्ति हमारे ध्यान में आती है। जिस समय महाराज श्री की आसेतु हिमालय धर्मजागरण यात्राओं में पैरों में बिवाईयाँ फटी थीं। पेड़ के नीचे विश्राम था और एक ओर लकड़ियाँ बटोरकर ब्रह्मचारी द्वारा भिक्षा बन रही थी। ....दूसरी मूर्त्ति वह ध्यान में आती है—देश आजाद हुआ, रोशनी हुयी तब महाराज श्री ने भारत माता को खण्डित होते देखकर आंखों में आँसू भरकर कहा था कि आज हज़ारों मन्दिरों में दीपक तक नहीं जला होगा। नोआखालीकाण्ड के समय नोआखाली यात्रा में बराबर रोते रहे हिन्दु धर्म के प्रति उनके हृदय में बड़ी वेदना थी। हमने हिन्दुओं का इतना बड़ा हितैषी अपने जीवनकाल में नहीं देखा वे ही आशा की किरण थे जिनके कारण ही आज देश में धर्म शेष हैं। महाराज श्री करपात्री जी ने सनातन धर्म की नीव उखाड़ने वाले यूरोप के बड़े-बड़े विद्वानों को सही उत्तर दिया। उन्होंने 'रामायण-मीमांसा' लिखकर भगवान श्रीराम एवं उनके चरित्रों की आलोचना करने वालों को सटीक उत्तर दिया। आज हिन्दुओं की माँ, बहन, बेटियों की लाज सुरक्षित नहीं है, उन्होंने जनता का सनातन धर्म एवं हिन्दु जाति को जीवित रखने का आह्वान किया था। वर्तमान समय में सनातन धर्म के उन्नायक, वैदिक व्याख्याता, हिन्दु-धर्म, संस्कृति, सभ्यता एवं गोरक्षक, हिन्दुजाति के सच्चे हितैषी, विश्वकल्याणकामी, साक्षात् धर्मस्वरूप उन महापुरुष को सदा सदा स्मरण किया जाता रहेगा। उनके द्वारा बताए मार्ग पर चलने का व्रत लेकर ही हम उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि समर्पित कर सकते हैं।'

—पूज्यपाद स्वामी श्री नन्दनन्दनानन्द सरस्वती (श्री शास्त्री स्वामी) (भू०पू० संसद सदस्य) प्रधान सम्पादक, सन्मार्ग, काशी।

卐 卐 卐 卐

श्री स्वामी करपात्री जी महाराज की प्रतिभा लौकिक नहीं, सर्वथा अलौकिक-दैवी थी। धर्म और ब्रह्म में उनकी अबाध गति थी, धर्म और ब्रह्म के वे अद्वितीय जानकार थे। मेरी उनमें गुरुबुद्धि वर्षों से रही है, और आज भी अडिग है।..........वे कारक कोटि के महापुरुष थे, उनके बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि वह राजनीति में सक्रिय भाग लेकर कुछ अनुचित करते रहे। उनके जैसा धर्म और ब्रह्म का मर्मज्ञ मेरी दृष्टि में दूसरा नहीं था।

—सुप्रसिद्ध संत महाभागवत १००८ श्री स्वामी अखण्डानन्दसरस्वती जी महाराज, वृन्दावन।

卐 卐 卐 卐
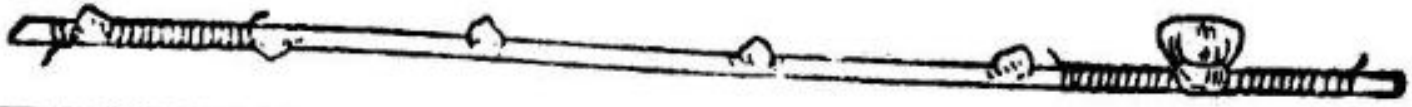
हमें धर्म और दर्शन की जटिल समस्याओं के सम्बन्ध में उलझने की क्या आवश्यकता ? हम तो आद्य श्री शङ्कराचार्य के समान उनमें श्रद्धा रखते रहे। वे जो निर्णय देते थे उसको परमप्रमाण मानते थे। श्री गान्धी और मालवीय जी के समय में बड़े बड़े सनातनी भी न जाने कब के और कितने भटक गये होते, परन्तु धर्म की वास्तविक मीमांसा करके उन सबको बचा लिया श्री स्वामी करपात्री जी महाराज ने। आज जो हम ब्राह्मणों और दण्डी स्वामियों में कुछ चेतना पाते हैं, समाज में धार्मिक भावना का जागरण देखते हैं, यह सब इन महापुरुष की ही देन हैं।

—१००८ पूज्य श्री स्वामी विष्णुआश्रम जी महाराज, शुकताल–बिहारघाट।

卐 卐 卐 卐

'आज हम सभी सनातन धर्मावलम्बी सन्त-प्रेमी उनके श्रीचरणों में नतमस्तक होकर कोटि-कोटि श्रद्धाञ्जलियाँ समर्पित करते हैं। वस्तुतः हमारी ये श्रद्धाञ्जलियाँ तभी सार्थक सिद्ध होंगी जबकि उनके विचारों, सिद्धान्तों एवं आदर्शों का प्रचार-प्रसार जन जन में रामचरितमानस की भाँति हो'—

—पूज्य १००८ श्री स्वामी रामाश्रम जी महाराज, लुधियाना।

卐 卐 卐 卐

'पूज्यपाद धर्मावतार धर्म सम्राट् स्वामी श्री करपात्री जी महाराज वर्तमान युग में धर्मजागृति के प्रतीक थे। उन्होंने भगवान के अंशावतार रूप में अवतीर्ण होकर वैदिक सनातन धर्म का उद्धार किया और यह पवित्र सन्देश दिया कि हमें अपनी सभ्यता, संस्कृति, धर्म तथा वेद शास्त्रों की रक्षा में तत्पर रहते हुए सनातन वैदिक मार्ग पर चलते हुए धर्ममय पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहिये। वे धर्मविहीन अन्धकारमय वातावरण में प्रचण्ड प्रकाशस्तम्म के रूप में विराजते हुए इस देश का मण्डन करते थे। उनके अभाव में आज राष्ट्र श्रीहीन सा हो गया है।

—पूज्यपाद १०८ श्री स्वामी दामोदरानन्द तीर्थजी महाराज, पक्काघाट, बागपत (मेरठ)

卐 卐 卐 卐

गत पचास वर्षों से स्वयं त्याग तपस्या-पूर्ण सादा जीवन व्यतीत करते हुए, अहर्निश सनातन वैदिक धर्म की रक्षा में निरत रहते हुए सनातनी जनता में प्राण संचार करने वाले उन महान तपस्वी सन्त के श्रीचरणों में हम श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं।

—श्री १०८ स्वामी श्री भूमानन्द तीर्थ जी महाराज, भूमानिकेतन, सप्तसरोवर हरिद्वार।

धर्मसम्राट पूज्य श्री स्वामी करपात्री जी महाराज और ब्रह्मलीन जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री स्वामी कृष्णबोध आश्रम जी महाराज की प्रेरणा से इस सनातन पुरातन धर्म प्राण देश में सर्वत्र धर्म और ब्रह्म का डंका बजता रहा। अनेक अभूतपूर्व महायज्ञों का आयोजन इन्हीं महापुरुष के द्वारा सम्भव हो सका। हमने पूज्य श्री करपात्री जी महाराज के सम्बन्ध में बहुत दिन हुए उनके जन्म स्थान-क्षेत्र में जाकर कतिपय जानकारी प्राप्त की थी। वे वास्तव में अलौकिक शक्ति सम्पन्न महापुरुष थे। देश भर के संन्यासीगण, विद्वान एवं पण्डित समाज उनसे प्रेरणा प्राप्त करता था।

—श्री १०८ स्वामी लक्ष्येश्वराश्रम, भूमानिकेतन, सप्तसरोवर हरिद्वार।

卐 卐 卐 卐

'महाराज श्री मूर्तिमान धर्म, मूर्त्तिमानविद्या, मूर्तिमान ज्ञान, मूर्तिमान उपासना तथा सत्कर्म व करुणा के विग्रह थे। महाराज श्री युगावतार तथा ईश्वर तुल्य धर्माश्रय थे। उनकी क्षतिपूर्ति होनी असम्भव प्रतीत होती है फिर भी श्री भगवान से प्रार्थना हैं कि जगद्गुरुजी उन्हीं के अनुसार हम सबको स्नेह व मार्गदर्शन प्रदान कर कल्याण पथ पर अग्रसर करें।'

—श्री १००८ 'जजस्वामी' विपिन चन्द्रानन्द सरस्वती जी महाराज वाराणसी।

卐 卐 卐 卐

"पच्चीस सौ वर्षों बाद हिन्दुओं को सही मार्ग दिखलाने के लिये भारत को पूज्य स्वामीजी के रूप में एक महान तपस्वी एवं धर्मात्मा नेता मिला था। यह हिन्दुओं का दुर्भाग्य है कि वे उसे पहचान न पाये। मैंने साम्यवादियों को यह कहते सुना है कि यदि महाराज श्री करपात्रीजी की तरह का नेता उन्हें मिला होता तो वे विश्वभर में साम्यवाद फैला देते। महाराज श्री विलक्षण प्रतिभासम्पन्न महात्मा थे। धर्म और ब्रह्म के चिन्तन के साथ साथ लोककल्याण में वे सदा निरत रहे। उन्होंने आज के भौतिकवाद में आकण्ठ निमग्न राष्ट्र को अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थ देकर महान उपकार किया है। धर्म, राजनीति, दर्शन, समाजवाद, पूंजीवाद, साम्यवाद आदि सभी विषयों पर उन्होंने अधिकार पूर्वक लेखनी उठाकर विश्व के निष्पक्ष विचारकों के समक्ष भारतीय वैदिक शुद्ध सनातन, शाश्वत सिद्धान्तों का साङ्गोपांग निरूपण प्रस्तुत कर वेदों के परमप्रमाणत्व को प्रस्थापित किया है। महाराज श्री द्वारा प्रणीत ग्रन्थों के पठन-पाठन पूर्वक हम आज समाज का सच्चा हित सम्पादन कर सकते हैं।"

—अभिनव शुकदेव १०८ पूज्य स्वामी श्री माधवाश्रम जी महाराज, लुधियाना,

卐 卐 卐 卐

पूज्यपाद धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज राष्ट्र की महान विभूति थे। धार्मिक क्षेत्र में भारी कमी हुई है। उनके श्री चरणों में श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं।

—श्री स्वामी रामकिशोर, अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामसनेही सम्प्रदाय, भीलवाड़ा राज०,
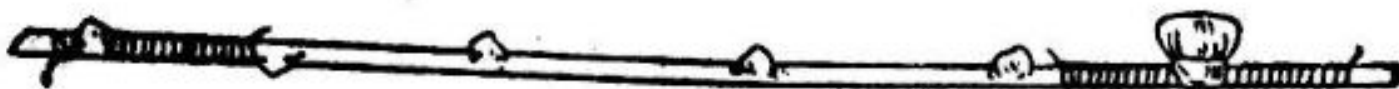
श्री वृन्दावन धाम में संन्यासियों को हेय-दृष्टि से देखा जाता था। परन्तु श्री महाराज जी के भक्ति भाव परिपूर्ण श्रीमद्‌भागवत, श्री राधा-सुधानिधि आदि ग्रन्थों के व्याख्यान सुनकर तथा परम-वैष्णवोचित जीवन का दर्शन कर सभी नतमस्तक हो गये। —'ये तो शुकदेव हैं' —'ये तो हमारे हैं' —आदि सद्‌भावों से उनका हृदय भर आया। वृन्दावन के श्री राधा-बल्लभादि गोस्वामियों के हृदय में उन वीतराग, परम वैष्णव, गोभक्त, यमुनाप्रेमी, लीलास्थल के उपासक, परम विद्वान् सन्यासी श्री स्वामी करपात्री जी के प्रति अत्यन्त सम्मान का भाव उछलने लगा। और वास्तविकता यह है कि पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज जैसे महान भगवद्‌भक्त, भक्ति-ज्ञान और वैराग्य के मूर्तिमान प्रतीक के वृन्दावन निवास से सन्यासी महात्माओं का दर्शन, प्रवचनादि श्री वृन्दावन धाम में भी सुलभ हो गया। श्री दण्डी आश्रम, श्री उड़िया बाबा आश्रम, श्री स्वामी अखण्डानन्द आश्रम, श्री हरि बाबा आश्रम, श्री परम हंस आश्रम, श्रौत मुनि आदि स्थलों में कथा, कीर्तन, लीला आदि का जो नियमित क्रम चलता है उन सबका श्रेय इन्हीं महापुरुष को सहज में ही दिया जा सकता है।

जितना प्रेम उन्हें पवित्र वृन्दावन धाम से था उतना ही काशी से था, तो अयोध्या आदि से भी कम नहीं था। श्रीराम नवमी के अवसर पर अयोध्या में, होली के अवसर पर श्री वृन्दावन धाम में, सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र में, श्री गंगा दशहरा पर हरिद्वार में स्वामी जी का समान निष्ठा पूर्वक निवास रहता था। कुम्भ के अवसर पर प्रयाग, नासिक, उज्जैन, हरिद्वार में तीर्थ स्नान हेतु धर्म यात्रा उनकी धर्म-निष्ठा एवं तीर्थ-निष्ठा की प्रत्यक्ष प्रतीक हैं।

काशी विश्वनाथ धाम काशी तो उन्हें अत्यन्त प्रिय रही। काशीखण्ड केदारखण्ड के माध्यम से काशी की महिमा व्यक्त करते हुए कभी नहीं अघाते थे। काशी मरण से मुक्ति लाभ का प्रतिपादन समारोह पूर्वक करते थे। काशी महात्म्य ही वर्णन करते हों ऐसी बात नहीं ज्यों ही राजस्थान में, कानपुर में या अन्यत्र कहीं स्वास्थ्य खराब हुआ तुरन्त शीघ्रातिशीघ्र काशी पहुँचने की भावना उनके हृदय में जाग जाती और वे काशी पहुँचकर ही शान्त, प्रसन्न एवं सन्तुष्ट होते—भगवान शिव के समान उन्हें भी काशी नगरी विशेष प्रिय थी।

यहाँ अधिक न कहकर इतना ही सार रूप से कह सकते हैं कि पूज्य स्वामी श्री करपात्री श्री महाराज मूर्तिमान सनातन धर्म थे, उनके महा-निर्वाण से वर्तमान समय में आध्यात्मिक क्षेत्र में जो रिक्तता आ गयी है उसकी पूर्ति असम्भव है। हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम दृढ़ निष्ठा पूर्वक उनके द्वारा बताए गये शास्त्रीय मार्ग पर चलकर जीवन को सफल बनाएँ।

—श्री स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती, वृन्दावन

—श्री स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती, वृन्दावन

卐 卐 卐 卐

'धर्म सम्राट पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ने जिस कार्य का बीजारोपण किया था वह उनका अपने लिये नहीं था। वे देश, धर्म एवं जन कल्याण के लिये जिए और जीवन के अन्तिम क्षणों तक उसी में संलग्न रहे। वे जिम्मेदारी छोड़ गये हैं सभी धर्माचार्यों, मठाधीशों, मण्डलेश्वरों, धर्मोपदेशकों कथावाचकों एवं सभी समझदार सभ्यजनों पर। अब इन्हें संगठित होकर एक जगह मिल बैठकर विचारपूर्वक निर्णयात्मक ढंग से उस कार्य को पूरा करना है। यदि धर्म और हिन्दुत्व को जीवित रखना है तो हमें बिना और समय गवांये प्राण-पण से उनके कार्य को आगे बढ़ाने में लग जाना ही चाहिए।

—श्री १०८ स्वामी भास्करानन्द सरस्वती जी महाराज, शुक्लागंज, (उन्नाव) कानपुर।

卐 卐 卐 卐

'स्वामी जी जैसी विभूति का प्रादुर्भाव सहस्राब्दियों के बाद होता है। उनके ब्रह्मलीन होने से भारत का प्रकाशपुंज तिरोहित हो गया।'

—पण्डितराज निरीक्षण पति मिश्र, अध्यक्ष व पं० रमापति त्रिपाठी महामन्त्री, श्री काशी विद्वत परिषद् वाराणसी।

卐 卐 卐 卐

'स्वामी जी के शिव-सायुज्य से धर्मशास्त्र और सनातन-धर्मी आचार निष्ठा का एक ऐसा ज्योति स्तम्भ महाकाल के शाश्वत सागर में विलीन हो गया जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं लगती। आदि शंकराचार्य के बाद ज्ञात इतिहास में दुनिया श्री करपात्री जी महाराज को ही जानती है, जिन्होंने सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति की उपासना में अपना जीवन समर्पित किया। उनकी स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।

—पं० करुणापति त्रिपाठी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश संस्कृत ऐकेडैमी, वाराणसी।

卐 卐 卐 卐

पूज्य श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के चले जाने से जो क्षति सम्पूर्ण धार्मिक जगत, धर्मसंघ, रामराज्य परिषद तथा इस धर्म-प्राण देश भारत की हुई है, उसकी पूर्ति असम्भव है। उनके द्वारा जलाया गया दीपक, धर्मसंघ और रामराज्य परिषद को सदैव प्रज्ज्वलित रखना ही महाराज जी के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

श्री स्वामी विष्णुदेव वानप्रस्थी।

卐 卐 卐 卐

'पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज के उनके वास्तविक स्वरूप में समाहित होने से वेद-शास्त्रों का यथार्थ व्याख्याता, सच्चे अर्थों में मानवता का उद्धारक-महापुरुष उठ गया। उनके शरीरावसान से उत्पन्न शून्यता अपूरणीय है। कर्म, ज्ञान और भक्ति के सामन्तीय की जीवित मूर्त्ति संसार के पटल से तिरोहित हो गयी।'

—आचार्य पण्डित बद्रीनाथ शुक्ल वाइस चांसलर संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

卐 卐 卐 卐

'पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज स्थित प्रज्ञ: तथा महान योगी थे। इधर संसार की अधार्मिक प्रवृत्तियों से ऊब गये थे। और अनेक बार कहा था कि अब रहने की इच्छा नहीं है जाना चाहिये। स्वामी जी स्वेच्छया ब्रह्मीभूत हुए। एक सप्ताह पहले जब उनकी स्वास्थ्य परीक्षा की गयी थी तो वे पूर्ण स्वस्थ थे कोई रोग नहीं था। सहसा आँख में दर्द हुआ। डाक्टरों ने परीक्षा कर ग्लैकोमा बताया। कोई यह घातक रोग नहीं है। उनकी हृदयगति सहसा बन्द हो गयी यह एक बहाना मात्र है। महाप्रयाण का कोई न कोई बहाना होता है। बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न इतना बड़ा विद्वान, लेखक, वक्ता, तपस्वी तथा धर्म-रक्षक इस शताब्दी में कोई नहीं हुआ।'

—सुप्रसिद्ध वैद्य पं० ब्रजमोहन दीक्षित, महाराज श्री के चिकित्सक, वाराणसी।

☼ ☼ ☼ ☼

'धर्मतत्वान्वेषी तथा ज्ञानावतार स्वामी करपात्री जी महाराज यावज्जीवन धर्म-ध्वजा लेकर इस धरा पर रामराज्यावतरण के उद्देश्य के लिये प्रयत्नशील रहे जिसके माध्यम से वे अखिल विश्व का कल्याण चाहते थे। स्वामी जी विश्व के सभी प्रमुख धर्म-ग्रन्थों के अधिकारी ज्ञाता तथा वक्ता थे। तुलसी साहित्य, वेद वाङ्मय के तो वे अभूतपूर्व तथा अश्रुत-पूर्व चिन्तक थे। विद्या तथा विद्वत्ता उनके व्यक्तित्व में समाहित होकर बहुत अधिक गौरवान्वित व मर्यादित हुयी। आज जब वे स्थूल रूप से हमारे मध्य नहीं हैं हम सब अपने को धर्म की जय, अधर्म की पराजय, विश्व के कल्याण और मानव-मानव में सद्भावना के बीजारोपण के लिये समर्पित कर सकें तो यही उस अनुपस्थित विभूति के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी'।

—आचार्य श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, काशी।

卐 卐 卐 卐
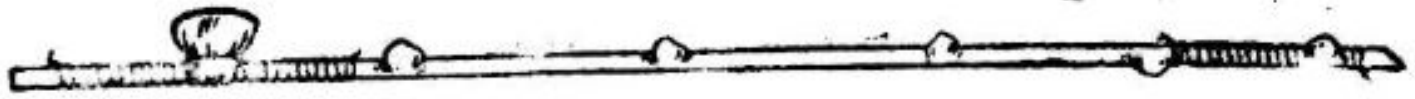
'अखिल भारतीय रामराज्य परिषद के संस्थापक धर्म सम्राट करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन होने से रामराज्य परिवार को वज्राघात हुआ जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती। हमारी वास्तविक श्रद्धाञ्जलि तभी सार्थक है जबकि महाराज श्री के रामराज्य सिद्धांत एवं सन्देश जन-जन में प्रचलित हों और जनता रामराज्य परिषद के सिद्धांतों को पूर्णरूप से माने तदनुसार आचरण करें।'

"महाराज श्री शिव-शक्ति-स्वरूपा थे। उन्होंने श्री विद्या, जो उत्तर भारत में प्राय: लोप हो गयी थी, लोक कल्याण के लिये उसे प्रकट किया। महाराज श्री गोरक्षा को भारत के कल्याण का मार्ग बताते थे। हमारी श्रद्धांजलियाँ तभी सार्थक हैं जबकि महाराज श्री द्वारा प्रतिपादित धार्मिक, गोरक्षा एवं रामराज्य सम्बन्धी विचार एवं सिद्धांत भारत के जन-जन में फैले उनका व्यापक प्रचार एवं प्रसार किया जाये।"

—**श्री रामावतार कौशिक,** सहमहामन्त्री, 'रामराज्य परिषद' दिल्ली।

☼ ☼ ☼ ☼

'जगदाराध्य सन्तसत्तम स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन हो जाने से सनातनधर्म तो अनाथ ही हो गया। सहस्राब्दियों के पश्चात् ऐसे महापुरुष का आविर्भाव इस धराधाम पर होता है। शताब्दियों में भी पूरा न हो सकने वाला महान कार्य वह पचास वर्ष में ही कर गए। शेष के लिए अग्निरेखा जैसा मार्गदर्शन करा गये। पाण्डित्य, तपश्चर्या, लेखन, प्रवचन, संगठन, आन्दोलन, सम्मेलन सभी कुछ अलौकिक था उनमें। शङ्करस्वरूप उन दिव्यात्मा के चरणों में सश्रद्ध कोटिश: ससुमन नमन।

—**पं फूलचन्द पाण्डेय शास्त्री,** एम० ए०, शाहदरा, दिल्ली।

☼ ☼ ☼ ☼

'काशी की महान विभूति स्वामी श्री करपात्री जी के अवसान पर शोक प्रकट करते हुए हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।'

महन्त श्री जमुनादास जी, श्री सतुआ बाबा आश्रम, मणिकर्णिका घाट काशी।

☼ ☼ ☼ ☼

'गौ, ब्राह्मण, देवता, सन्त, और वर्णाश्रम धर्म की रक्षा के लिये समय-समय पर भगवान, भगवती तथा भगवद्विभूतियों का अवतार होता रहता है। वे अपना कार्य पूरा करके अपनी लीला का संवरण भी कर लेते हैं। यही बात ब्रह्मलीन धर्मसम्राट, विश्ववन्द्य स्वामी करपात्री जी महाराज के सम्बन्ध में है। उनका दिव्य जीवन, अलौकिक वैदिक कार्य कलाप, अनुपम त्याग,

तपस्या, उनके अवतार कार्य में होने के लिए प्रत्यक्ष हैं। हमें उनके बताये सन्मार्ग पर आरूढ़ रहते हुए स्वधर्म पालन एवं विश्व कल्याण में रत रहना चाहिए।'

—**श्री गणेशस्वरूप,** वानप्रस्थी, बाँदा (उ० प्र०)।

✻ ✻ ✻ ✻

'महाराज श्री करपात्री जी वर्तमान समय में धर्म रक्षा के लिये अवतरित हुए थे। उनका अवतार कार्य पूरा हुआ वह चले गए। हमें उनके बताये धर्ममार्ग का अनुसरण करना चाहिये। तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिये कि वह धर्म कार्यों में दृढ़तापूर्वक लगे रहने की हमें क्षमता प्रदान करे। महाराज श्री तो पहले भी ब्रह्मरूप थे अब भी ब्रह्मरूप में सर्वत्र व्याप्त हैं हमें आशा है वे अन्तर्यामी रूप से हमें धर्म कार्यों के लिये प्रेरित करते रहेंगे और जब भी पुनः आवश्यकता होगी वे धर्म कार्यों को पूर्ण करने के लिए पुनः अवतरित होंगे।'

—**श्रीयुत ह० भ० प० पाण्डे 'गुरुजी',** अमरावती।

✻ ✻ ✻ ✻

''अनन्त श्री विभूषित स्वामी करपात्री जी महाराज का इस धराधाम पर आविर्भाव धर्म संरक्षणार्थ हुआ था। उसी कार्य में आप युवावस्था से ही बड़ी तत्परता, मुस्तैदी के साथ सुदृढ़ व अडिग संकल्प के साथ भिक्षुक के रूप में नहीं, वरन् विरक्त के रूप में अग्रसर हुए। आप ने देश, धर्म समाज और जन-हित में जो कुछ किया उसे इतिहास आकाश के उच्चतम शिखर से सूर्य की भाँति संसार को अनन्तकाल तक दिखाता रहेगा। पूज्य श्री यद्यपि माघ शुक्ल २०६४ वि० को ब्रह्मलीन हो गये परन्तु वे अपने द्वारा संस्थापित संस्थाओं एवं कार्यों का उत्तरदायित्व अपने विचारों के अनुसार कुछ अच्छे हाथों में सौंप गये हैं। ······ वे सर्वद्रष्टा सर्वेश्वर पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की भाँति सदैव सब कुछ का निरीक्षण करेंगे और समय-समय पर अन्तःप्रेरणा भी करेंगे। आप का पार्थिव शरीर पंचभूतों में विलीन हो गया जिसके लिये शोक होना स्वाभाविक ही है। अब उत्तरदायी जनो को दृढ़ता, स्वस्थता और सत्य संकल्प के साथ उनके अधूरे कार्यों को पूरा करके देश धर्म और समाज के पुनरुत्थान की ओर अग्रसर होना चाहिये।

—**पं० राजेन्द्र मोहन कटारा,** सम्पादक, 'निरावरण', हाथरस, अलीगढ़ (उ० प्र०)।

✻ ✻ ✻ ✻

'पूज्यपाद गुरुदेव महाराज स्वामी श्री करपात्री जी से बिछुड़ने पर हम शिष्यों को महान कष्ट एवं दुःख है। हम उनके विचारों को आगे बढ़ाने के लिये 'वेदार्थपारिजात' और 'भक्ति सुधा'

भागवत् सुधा एवं राधा सुधा ग्रंथों के समान महाराज श्री के अन्य वेदों पर भाष्य भी शीघ्र अपनी संस्था द्वारा प्रकाशित करायेंगे।

—सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्रेष्ठ श्री हनुमान जी धानुका,
श्री राधाकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान, कलकत्ता।

❂ ❂ ❂ ❂

'स्वामी करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन होने से सम्पूर्ण आस्तिक जगत की महान क्षति हुई है। महाराज श्री हमारे कुलगुरु थे। हमारे पिता जी अन्तिम समय महाराज श्री के चित्र के सामने ही प्राण त्यागकर स्वर्गवासी हुए। हमारा जयपुरिया परिवार महाराज के श्री चरणों में नतमस्तक रहेगा।'

—सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्रेष्ठ श्री चुन्नीलाल जयपुरिया, महावीर प्रसाद जयपुरिया एवं समस्त जयपुरिया परिवार, दिल्ली।

❂ ❂ ❂ ❂

'पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज त्याग, तपस्या की मूर्ति थे तथा ज्ञान, भक्ति एवं योग की त्रिवेणी ही थे। स्वामी जी विश्व के लोगों के लिये प्रेरणा स्रोत थे। समस्त विश्व का कल्याण स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित शास्त्रीय परम्परा के पालन में ही है। वे भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत भाषा के अन्यतम पुजारी थे। सनातन धर्म एवं शास्त्रीय मर्यादा के सबल संरक्षक थे। हम लोगों को महाराज श्री के दिव्य जीवन से प्रेरणा लेकर उनके बताये मार्ग पर चलकर कृतार्थ होने के लिए प्रयत्नशील होना ही चाहिये।

—श्री मंगल नाथ पाठक, प्रधानाचार्य, असरगंज।

❂ ❂ ❂ ❂

'स्वामी जी का सम्पूर्ण जीवन धर्म की रक्षा के लिये सर्मापित था। उन्होंने जीवन पर्यन्त मानव समुदाय को पवित्र एवं संस्कारित जीवन जीने की प्रेरणा दी। उनके भौतिक व्यक्तित्व की शून्यता हिन्दू धर्म में शताब्दियों तक अपूरित रहेगी।

श्री भाऊ राव देवरस, केन्द्रीय नेता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ।

❂ ❂ ❂ ❂

'स्वामी जी राजसत्ता एवं भौतिकवाद के समक्ष कभी नतमस्तक नहीं हुए तथा वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे।'

—मेवाड़ महामण्डलेश्वर महन्त श्री मुरली मनोहर शास्त्री, काशी।

❂ ❂ ❂ ❂

'करपात्री जी जो हिन्दू धर्म की साकारमूर्ति थे वे जीवन के अन्तिम क्षणों तक गो माता की रक्षा के लिये प्रयास रत रहे। जनता ने उन्हें धर्म सम्राट की उपाधि दी।

श्री राधाकृष्ण बजाज, महासचिव, अखिल भारतीय गो सेवा संघ।

✲ ✲ ✲ ✲

श्री करपात्री जी महाराज के निधन से धर्म जगत का एक महान विद्वान एवं तपस्वी तिरोहित हो गया है। वे धर्म ग्रंथों के प्रकाण्ड पण्डित, न्यायमूर्ति एवं सच्चे जनसेवी थे।'

—**श्री गोस्वामी गिरधारी लाल,** महासचिव,
अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा, दिल्ली।

✲ ✲ ✲ ✲

लगभग दो हजार वर्ष से अनेक दार्शनिक, भक्त, वेदांती, ज्ञानी, तपस्वी हुए हैं पर एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जिसमें सारे गुण रहे हों। किंतु स्वामी श्री करपात्री जी महाराज एक मात्र ऐसे थे जो महान दार्शनिक, वेदांती, यागी, तपस्वी, ज्ञानी, भक्त एवं राजनीतिज्ञ थे। हिन्दू धर्म के सभी सम्प्रदायों के दुर्लभ ग्रंथों का गम्भीर अध्ययन कर और स्वयं अनेक ग्रंथों की रचना कर उन्हें पोषित किया तथा विश्व की सभी विचारधाराओं पर समीक्षा ग्रंथ लिखकर प्रबुद्ध वर्ग के समक्ष वैचारिक क्रांति प्रस्तुत की।

पूज्य स्वामी करपात्री जी संघर्षशील एवं तेजस्वी सन्यासी थे। वे सर्वप्रथम धर्मगुरु थे जिन्होंने भारत विभाजन के आत्मघाती निर्णय के विरोध में आन्दोलन शुरू किया और जेल गये। वे गोरक्षा आन्दोलन के भी प्रवर्तक थे।'

प्रो० रामसिंह, भू० पू० अध्यक्ष अ० भा० हिन्दू महासभा, दिल्ली।

✲ ✲ ✲ ✲

'श्री स्वामी करपात्री जी महाराज समाज में आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना करने के लिये आजीवन प्रयासरत रहे।'

— **श्री सागर सिंह,** वरिष्ठ अधिवक्ता, वाराणसी।

✲ ✲ ✲ ✲

'पूज्यपाद अनन्त श्री विभूषित स्वामी करपात्री जी महाराज में अनेक दैवी गुण थे। आप की वाणी में वाग्देवता का निवास था और आप के करों में भगवती दुर्गा शक्ति के रूप में अवतरित थी। यही कारण है कि पद्मा सदा आप के गुणों से आकृष्ट होकर आप के पदकमलों में विराजमान रही है। इसके अतिरिक्त आप में जिन मानवीय गुणों की गरिमा थी उसका आज हम अन्यत्र सर्वत्र अभाव पाते हैं। एक ओर जहाँ अपने सिद्धांतों के परिपालन में वे हिमालय के समान अडिग और वज्र से भी कठोर थे ठीक दूसरी ओर स्वामी जी परदुख कातरता करुणा

वरुणालय के सच्चे स्वरूप थे। हमारे विचार से आज दुनिया में एक ऐसा इन्सान उठ गया है जिसने सिद्धांतों के लिये टूट जाना तो स्वीकार किया परन्तु बड़ी से बड़ी शक्ति के सामने झुकना कभी पसन्द नहीं किया। आचार्य प्रवर स्वामी जी की आज बड़ी आवश्यकता थी, क्योंकि इस समय संस्कृत, संस्कृति, संस्कार सभी कुछ संकट में है। अस्तु प्रभु इच्छा बलीयसी।'

—**डा० रामरंग शर्मा**, काशी।

☼ ☼ ☼ ☼

'विश्वविख्यात भारतीय वाङ्मय के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी श्री करपात्री जी के ब्रह्मलीन होने से देश की अपूरणीय क्षति हुई है।'

—**श्री आनन्देश्वर प्रसाद सिंह**, सदस्य विधान परिषद।

☼ ☼ ☼ ☼

'श्री स्वामी करपात्री जी हिन्दूधर्म के प्रेरणा स्रोत तथा सनातनधर्म के रक्षकों में अग्रगण्य थे हिन्दू समाज आज एक महान विभूति से वंचित हो गया।'

—**युवराज डॉ० कर्णसिंह**, अध्यक्ष, विराट हिन्दू समाज।

☼ ☼ ☼ ☼

'स्वामी करपात्री जी महाराज जैसे संत शताब्दियों में पैदा होते हैं। वे ज्ञान के विपुल भण्डार थे उनके अवसान से धार्मिक जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।'

—**श्री सुधाकर पाण्डेय**, संसद सदस्य (इंका), वाराणसी।

☼ ☼ ☼ ☼

'स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के निधन से भारतीय संस्कृति का स्तम्भ अब नहीं रहा। यह भारत के लिए सबसे बुरा दिन तथा भारतीय संस्कृति की अपूरणीय क्षति है। श्री स्वामी जी इस विश्व के एकमात्र विद्वान थे जिनका सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय पर पूर्णतया अधिकार था तथा संस्कृति के वे सजग प्रहरी थे। उनके ब्रह्मीभूत होने के समाचार से हम स्तब्ध रह गये।'

—**पं० कमलापति त्रिपाठी**, दिल्ली।

☼ ☼ ☼ ☼

'पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के निधन से काशी का ज्ञानदीप ही बुझ गया। भविष्य में ऐसी प्रतिभा की पूर्ति असम्भव है। वाराणसी के लिए यह अत्यन्त दुःख की घड़ी है।'

—**श्रीमती चन्द्रा त्रिपाठी**, अध्यक्षा, जिला कांग्रेस कमेटी, वाराणसी।

☼ ☼ ☼ ☼

'स्वामी जी के निधन से भारतीय संस्कृति तथा विश्व का ख्याति प्राप्त विद्वान इस धरातल से उठ गया। श्री स्वामी जी हमारे काशी के देवता थे।'

—**श्री कैलाश टण्डन,** विधायक, वाराणसी (दक्षिण क्षेत्र)।

❋ ❋ ❋ ❋

'स्वामी जी का निधन अपूरणीय क्षति है उनके अवसान से देश ने एक महान आध्यात्मिक अगुआ और मूर्धन्य विद्वान खो दिया है।'

—**श्री रामेश्वर सिंह,** संसद सदस्य, लोकदल, दिल्ली।

❋ ❋ ❋ ❋

'महाराज श्री द्वारा दिये गये पवित्र एवं मङ्गलकारी धर्मजयघोष, धर्म-संघ के जयकारे सदा सर्वदा भारतीय जनता को सत्कर्मों एवं सद्धर्म में प्रेरित करते रहेंगे, धर्म-जयकारो के उदगाता धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी के ब्रह्मीभूत होने पर धार्मिक जनता शोक प्रकट करती है।'

—**श्री प्रभुदयाल पटेल,** भू० पू० कृषि मन्त्री की अध्यक्षता में आयोजित काशी विश्वनाथ मन्दिर, बड़ौदा की जनसभा में।

'पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज सनातन जगत के निर्विवाद नेता व प्रेरणादायक सन्त थे। आपके महाप्रयाण से हिन्दू जगत को अपूरणीय क्षति हुयी है।

—**श्री आद्या प्रसाद मिश्र,** व्यवस्थापक, दैनिक सन्मार्ग, माशो।

❋ ❋ ❋ ❋

'धर्म सम्राट अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मलान स्वामी करपात्री जी महाराज के सम्बन्ध में कुछ कहना दिवाकर को दीपक से प्रकाशित करना है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, स्वामी जी का अधिकांश समय राजनैतिक और धार्मिक विषयों पर लिखने तथा बोलने में व्यतीत होता था। इन विषयों में जनता को निर्भीकता पूर्वक आगे ले चलने अर्थात अग्रसारित करने वाले अपने समकाल के महर्षियों में इस धरातल पर स्वामी जी अद्वितीय थे। उनके विचार राजनैतिक हों या धार्मिक किन्तु उनका एक ही दृष्टि कोण रहा करता था और वह था भारतीय संस्कृति का समुत्थान तथा मानव जीवन को पवित्र करना, जिनकी दृढ़सेतु थी गो रक्षा। इसी गोरक्षा के लिये हा तो उन्होंने अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर रखा था।

महाभारत कालीन इतिहास में भगवान श्री कृष्णचन्द्र ने गो सेवा कर्म को ही अपना प्रधान ध्येय मानकर अपने गोपाल नाम को सार्थक किया था। उसी प्रकार आधुनिक युग में

ब्रह्मलीन स्वामी करपात्री जी महाराज भी 'भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए गो रक्षा ही महान कर्त्तव्य है—धर्म है कहकर जनता को मार्ग प्रदर्शित करते रहते थे। अतएव उनके अनुयायियों का यह परम कर्त्तव्य है कि वे गोरक्षा के सम्बन्ध में विशाल रूप से भारतीय जनता को जागृत करने के लिए घर-घर में इसकी महानता के विभिन्न पहलुओं को समझाकर सरकार को गो रक्षा के लिये प्रेरित करें।

भारतीय संस्कृति में कर्त्तव्य परायणता तथा कृतज्ञता का सर्वश्रेष्ठ स्थान है और इनके द्वारा ही मानव जीवन का उद्धार हो सकता है। अस्तु, गोरक्षा कृतज्ञता का मात्र संकेत ही नहीं बल्कि यह परमावश्यक और अनिवार्य है क्योंकि आर्थिक समुन्नति और राष्ट्रहित भी इसी में निहित है। अतएव इसी गोरक्षा के पुनीत संकल्प द्वारा ही हम स्वामी करपात्री जी तथा भगवान श्री कृष्ण के आदेश और आदर्श की रक्षा कर सकते हैं।

—श्री ताराचन्द सर्राफ।

❋ ❋ ❋ ❋

'धर्म सम्राट पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज देश के तपः पूत, महान् प्रकाण्ड विद्वान तथा तेजस्वी सन्त थे। उन्होंने सनातन धर्म, संस्कृत तथा पत्रकारिता की जो सेवा की उसे कभा भुलाया नहीं जा सकता। पूज्य स्वामी जी ने 'सन्मार्ग', 'सिद्धान्त', 'धर्मज्योति', 'विवेक', 'रामराज्य समाचार', 'धर्मचर्चा', 'धर्म संघ समाचार' निरावरण जैसे अनेक पत्रों का प्रकाशन करा कर धार्मिक गतिविधियों के प्रचार व प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया था। काशी के बाद १९४८ में 'सन्मार्ग' का दिल्ली तथा कलकत्ता से प्रकाशन शुरू हुआ तो मुझे दिल्ली के 'सन्मार्ग' में पत्रकारिता प्रारम्भ करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वामी करपात्री जी के सुझाव पर श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी को सम्पादक नियुक्त किया गया जो इस समय गोवर्धनपीठ (पुरी) में श्री मज्जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी निरञ्जनदेव तीर्थ जी महाराज हैं। परावर्तन पुण्य के प्रभाव से ही मुझे स्वामी करपात्री जी महाराज जैसे उद्‌भट संस्कृत विद्वान गुरु के रूप में प्राप्त हुये और लगातार तीन वर्षों तक उनके श्री चरणों में बैठकर इस शरीर ने पत्रकारिता का ज्ञान प्राप्त किया।

यह एक संयाग ही था कि दिल्ली के 'सन्मार्ग' में अनेक संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान महापुरुष थे। सम्पादक श्री चन्द्र शेखर शास्त्री और प्रबन्धक श्री नन्दलाल शर्मा शास्त्री एम० ए०, एल०, एल० बी० (जो बाद में भारत की लोक सभा में रामराज्य परिषद के सदस्य भी रहे और वर्तमान में स्वामी नन्दनन्दनानन्द सरस्वती हैं) तो संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे ही, सम्पादकीय विभाग में यह शरीर तथा कम्पोजिंग विभाग में कुछ संस्कृत-कम्पोजीटर भी थे। स्वामी करपात्री जी को जब पता चला कि सन्मार्ग में अनेक संस्कृत कार्यकर्त्ता हैं तो उन्होंने सभी से
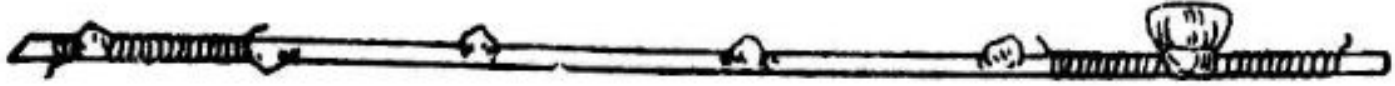
आग्रह किया कि वे आपस में संस्कृत में वार्तालाप किया करें। फलस्वरूप सन्मार्ग का वातावरण संस्कृतमय हो गया और जो कर्मचारी संस्कृत नहीं जानते थे वे भी कुछ-कुछ संस्कृत बोलने लगे। इससे स्वामी जी को अपार हर्ष हुआ और उन्होंने कहा कि 'सन्मार्ग' के प्रकाशन का उद्देश्य पूर्ण हो गया। स्वामी जी का बहु आयामी व्यक्तित्व था। उनके ब्रह्मलीन होने से जहाँ संस्कृत जगत सन्तप्त है वहाँ सनातन धर्म अपने को अनाथ समझ रहा है। वस्तुतः स्वामी जी के अभाव से हिन्दू राष्ट्र की अपूरणीय क्षति हुयी है जिसकी निकट भविष्य में प्रतिपूर्ति असम्भव है लेकिन सन्तोष की बात है कि स्वामी करपात्री जी अपने पीछे हजारों-लाखों अनुयायी छोड़ गये हैं जो जगत गुरु शंकराचार्य स्वामी निरञ्जनदेवतीर्थ जी महाराज एवं जगद्गुरु शंकराचार्य (बद्रिकाश्रम) स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज के नेतृत्व में स्वामी जी द्वारा प्रज्ज्वलित ज्वाला को अधिक प्रज्ज्वलित करने का जी भर प्रयास करेंगे। निश्चित ही स्वामी करपात्री जी अपने शेष कार्य की प्रतिपूर्ति का दायित्व पुरी एवं बद्रिकाश्रम के शंकराचार्य जी के कन्धों पर डाल गये हैं।

सनातन धर्म जगत को पूर्ण विश्वास है कि शंकराचार्य जी अपने सबल कन्धों पर इस गुरुतर दायित्व का वहन करेंगे और सनातन धर्म की नौका को पार ले जायेंगे।

— सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री जयवन्शी झा, दिल्ली।

❋ ❋ ❋ ❋

योगामृतेन सततामरतां दधानः।
स्वामी यतीन्द्र मुकुट करपात्रि प्रख्यां॥
दृष्ट्वाऽधुना विकट कलमष घोर चक्रं।
ब्रह्माख्य धाम विमलं विमलोगतः स्यात्॥

—श्री राधा कृष्ण शास्त्री।

❋ ❋ ❋ ❋

—॥ श्रीः श्रीः १००८ जयति श्री हरिहरानन्दो दिधिस्थः॥

विशुद्धो धर्मिष्ठो विपुल यशसाख्यात विभवो।
वसू रामोविशे दिनमणिदिने भारत भुवः॥
चतुर्दश्यां शुक्ले तपसि करपात्री हरिपदम्।
गतश्चामेयात्मोगम निगमवित् विश्व सुखदः॥

भावत्क :—**लक्ष्मण प्रसाद शर्मा (सा० पु० आ०)**

सनातनस्य धर्मस्यनेतारः शिरसि स्थिताः ।
विद्वांसो वेद शास्त्राणां निखिलानां चर्मामिकाः ॥
परिषद् रामराज्यस्य धर्म संघस्य चापिहि ।
श्रेष्ठां संस्थापका श्चासन् स्वामिनः करपात्रिणः ॥
भौतिकं देह मृत्युञ्जय प्रियं धर्म विहस्य च ।
माघशुक्ल चतुर्दश्यां ब्रह्मणि लीनतां गतः ॥
संस्था बह्व्यश्च देशेस्मिन् स्थापिता जीवने स्वके ।
ग्रन्थाश्चबह्व श्रेष्ठा महत्वेन युतास्तथा ॥
लिखिता जीवने स्वीये धर्म मार्ग प्रबोधकाः ।
विद्वांसस्ते यथैवासन् वक्तारश्चतथैवते ॥
सनातनस्य धर्मस्य पोषका दृढ़ता गताः ।
देशेस्मिन्निखिले भ्रान्त्वा धर्म मार्ग प्रबोध्य च ॥
स्वधर्मे चानयन् लोकानन्तान् स्वीय जीवने ।
श्रद्धाञ्जलि स्वकीयास्तु चरणेष्वर्य याम्यहम् ॥
लीनाय स्वामिने चापर ब्रह्मणि शाश्वते ।

—पं० रघुनाथ प्रसाद शास्त्री 'चतुर्वेद' ।

हाय विधाता मिला तुझे क्या सब अनाथ कर डाले ।
मर्माहित हो, हुये व्यथित हम पड़े धर्म के लाले ॥
परमसन्त उठ गये धरा से धर्म सनातन के रखवाले ।
भू-भारती करुणक्रन्दन युत पड़ी आपके पाले ॥
शतमुखयज्ञ किया दिल्ली में द्वापर युग दर्शाया था ।
भारत में हो धर्म राज्य घर-घर में सन्देश सुनाया था ॥
हिन्दू, मुसलिम अरु ईसाई, सबमें प्रेम बढ़ाया था ।
सभी जीव सन्तान हैं प्रभु के प्रिय सद्भाव बढ़ाया था ॥
थे वीतराग वे परम तपस्वी हीन जनों के हामी ।
थे गुणागार विद्यानिधान परम तत्त्व विज्ञानी ॥
गो-भू-शास्त्र वेद हत्या को सह न सके थे स्वामी ।

धर्म युद्ध का बिगुल बजाया देश में बन पदगामी ।।
धर्म संघ अरु रामराज्य परिषद का गठन बनाया था ।
मार्क्सवाद का खण्डन कर शुभ रामराज्य बताया था ।।
धर्मनियन्त्रित राजनीति को उत्तम राज्य बताया था ।
उठ गये हाय ! इस भू-मण्डल से धर्म का मार्ग सिखाया था ।।
करपात्री जग में भये, शङ्कर के अवतार ।
कठिन कुटिल कलिकाल में, कियौ धर्म विस्तार ।।
गो-ब्राह्मण प्रतिप्राण हे युग के परम प्रवीन ।
माघ सुदी चौदस तिथि भये ब्रह्म में लीन ।।
असू रामनख विक्रमहि, संवत् युत रविवार ।
धर्म सूर्य अब छिप गयौ, या जग को पतवार ।।
हे स्वामी करपात्रि जू, धर्म मूर्त्ति साकार ।
'व्यास अश्रु' श्रद्धाञ्जलि, अर्पित बारम्बार ।।

—प्रेम वल्लभ व्यास, मथुरा। (उ० प्र०)

अन्तिम प्रणाम

काषाय वस्त्र वरदन्ड हस्त, पावन त्रिपण्ड शोभित ललाट ।
जप, पूजन, अर्चन, चिन्तनरत, कृश काया में जीवन विराट् ।।
उपनिषद् वेद शास्त्रादि विज्ञ, तुम शिवस्वरूप अद्भुत अनन्य ।
तुम जैसे यति के चरणों से, हो जाती है यह धरा धन्य ।।
विद्या वरेण्य साधक अनूप, जीवन्त-मनीषी आप्त काम ।
मधुमय अनन्त श्री भूषित, स्वामी करपात्री जी को प्रणाम् ।।
सुनने को जिसकी गीर्वाणी, स्वयमेव ज्ञान था रुक जाता ।
जिसकी पाण्डित्य प्रभा छवि से, श्रद्धा से मस्तक झुक जाता ।।
माटी की कंचन काया को, कर पावन गंगा में विलीन ।
ली तुमने शिव सायुज्य हेतु, यह चिर समाधि, हम हुये दीन ।
प्रत्यक्ष सत्य है शाश्वत है, हम विधि विधान से छले गये ।
फिर भी कल्पना नहीं होती, तुम हमें छोड़ कर चले गये ।।
सन्निकट तुम्हारे मिलती थी, हमको अहरह सान्त्वना-शान्ति ।
ज्ञानार्जन होता था जिससे, क्षर हो जाते भ्रम और भ्रान्ति ।।
तुम धर्म ज्योति के संवाहक, हे काशी के गौरव ललाम ।

हे पुण्यश्लोक, स्मरणीय नित्य,
स्वीकार करो अन्तिम प्रणाम ।।

—काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर', सराय गोवर्धन, वाराणसी

हे धर्ममूर्ति तुझको प्रणाम

हे धर्मसनातन की विभूति । हे धर्म पुरातन की विभूति ।।
हे हंसवाहिनी के सुपुत्र । हे शाश्वतजीवन की विभूति ।।
अद्भुत तुम धर्म यशस्वी थे । पावन थे पूर्ण तपस्वी थे ।।
तुम मानवता से ओत प्रोत । व्यक्तित्व उदार मनस्वी थे ।।

हे वन्दनीय तुमको प्रणाम्,
हे अर्चनीय तुमको प्रणाम् ।
हे अखिल विभव की धर्म मूर्ति,
हे पूजनीय तुमको प्रणाम् ।। —दीनानाथ शुक्ल वाराणसी ।

C "पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज वर्तमान युग के ऋषि थे और उनका मंत्र है राम नाम (श्री राम जय राम जय जय राम) । जनकल्याण के लिए हम सबको इस महान सन्त के प्रति शरणागत होना ही पड़ेगा । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश में स्वच्छन्दता की जो आंधी चली उसको किसने रोकने का प्रयास किया ? किसने धार्मिक पुनर्जागरण का कार्य किया ? अखण्ड भारत की आवाज किसने बुलन्द की ? गोमाता की हत्या के अवरोध के लिए किसने अपना जीवन सर्मपित किया ? मर्यादा विरोधी कानूनों के प्रति जनता एवं सरकार को किसने सचेत किया ?—इन सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही है—'पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी—।' इसके अलावा उन्होंने देश को रामराज्य का दर्शन दिया जिससे मार्क्सवाद के सामने एक भारी अवरोध उपस्थित हो गया अन्यथा यह देश भी अब तक 'लाल' हो गया होता क्योंकि परिस्थितियाँ उसके ही अनुकूल थीं । इन्हीं शब्दों के साथ हम पूज्य चरणों के प्रति श्रद्धावनत हैं ।

पूज्य स्वामी जी के ब्रह्मीभूत होने से न केवल हिन्दू समाज बल्कि पूरे विश्व से एक शक्ति का तिरोधान हो गया जिसकी उपस्थिति मात्र से जगमङ्गल होता था । हिन्दू समाज का तो संरक्षक ही चला गया । गोमाता अनाथ हो गयी । ब्राह्मण-समाज नेत्र विहीन हो गया और भार-

तीय विद्या का एक मुखर प्रहरी सदा-सदा के लिए चला गया। धर्मसंघ शिक्षामण्डल, धर्मसंघ रामराज्य परिषद आदि संस्थाएँ अनाथ हो गयीं। हम महाराज श्री के चरणों में अपना अन्तिम प्रणाम कर रहे हैं।

—सम्पादक **दैनिक सन्मार्ग,** काशी। ३७/२२ (८१२/८२)

☼ ☼ ☼ ☼

'सनातन धर्म आधार स्तम्भ स्वामी करपात्री जी महाराज के महाप्रयाण से पूरा नगर शोकाकुल है। धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संघटनों तथा राजनीतिक दलों के नेताओं ने स्वामी जी को कालजयी विभूति की संज्ञा देते हुए अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

—**'दैनिक जागरण'**, वाराणसी (६-२-८२)

☼ ☼ ◈ ※

'धर्म सम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के निधन से हिन्दू धर्म की जो महान क्षति हुई है उसकी निकट भविष्य में पूर्ति होना सम्भव नहीं दीखता। स्वामी जी इस सदी के ऐसे सन्त थे जिन्होंने कुटिया और वन को त्याग कर समाज में रहना हितकर समझा। स्वामी जी ने जिन सिद्धांतों तथा आदर्शों के लिए अपना जीवन जिया उनकी पूर्ति उनके जीवन काल में तो निश्चित ही नहीं हो पाई। किंतु इतना निश्चित है कि उनके आदर्शों तथा सिद्धांतों की जल्दी ही आवश्यकता महसूस की जायेगी।'

—**का० भगवानदास,** सम्पादक, 'दैनिक लालसा', हाथरस।

※ ※ ※ ※

'सनातन हिन्दू धर्म के संन्यासी स्वामी करपात्री जी के निधन के शोक में नगर के सांध्य दैनिक सन्मार्ग और जय देश ने अपना प्रकाशन बन्द रखा। नगर की सभी बाजारें बन्द रहीं और सिनेमाघरों में दोपहर का शो नहीं दिखाया गया। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय तथा करपात्री जी से सम्बद्ध सभी शिक्षण संस्थाएँ बन्द रहीं। शवयात्रा से पूर्व धर्माचार्यों, राजनीतिक नेताओं, अधिकारियों, साहित्यकारों और गण्यमान्य नागरिकों ने शव पर माल्यार्पण किया और अपनी-अपनी श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित कीं।'

—**दैनिक अमृत प्रभात,** इलाहाबाद, मंगलवार, ६ फरवरी, १९८२ ई०

※ ※ ※ ※

'पूज्य स्वामी करपात्री जी अमर हैं और उनके जैसा व्यक्ति कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। भारतीय धर्म और संस्कृति के वे साक्षात प्रतिमूर्ति थे—उनकी विचारधारा का अस्तित्व तब तक बना रहेगा जब तक इस धरती पर गंगा, यमुना जैसी पावन नदियां बहती रहेंगी। स्वामी करपात्री जी की जीवन की उन ऊंचाइयों तक पहुँच थी जहाँ विरले ही लोग पहुँच पाते

हैं। भारतीय धर्म एवं संस्कृति पर लिखी गयी अनमोल कृतियाँ हमारा मार्ग-दर्शन करती रहेंगी।

—स्वामी जी द्वारा संस्थापित 'सन्मार्ग-पत्र' के समस्त कर्मचारीगण (७-२-८२)

❋ ❋ ❋ ❋

'देश की महान विभूति धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी देश के उन तेजस्वी तथा विद्वान संन्यासियों में अग्रणी थे जिन्होंने अपना सर्वस्व ही धर्म, संस्कृति, संस्कृत तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अर्पित किया हुआ था। वे १९४६ से पहले तक अंग्रेजी साम्राज्यवाद से संघर्ष करते रहे तथा देश स्वाधीन हुआ तो भारत विभाजन, हिन्दू कोड बिल तथा गो हत्या के विरोध की पताका लेकर वे सबसे आगे थे। सनातन धर्म की मान्यताओं कीं रक्षा के लिए वे पग-पग पर सतत संघर्ष करते रहे। उन्होंने अनेक बार जेल यात्राएं की। वे धर्म नियन्त्रित राज-नीति के प्रबलतम समर्थक थे। समाजवाद-साम्यवाद के विकल्प के रूप में उन्होंने परमलोक कल्याण-कारी 'रामराज्य' का दर्शन साङ्गोपाङ्ग प्रस्तुत कर राजनीति में भी प्रवेश किया। स्वामी जी एक संघर्षशील, तेजस्वी, निर्भीक संत थे। उनके ब्रह्मलोक प्रयाण से देश व धर्म की अपूरणीय क्षति हुई है। धर्मदूत परिवार उनके प्रति श्रद्धानत ये।'

—**'धर्मदूत'** पाक्षिक, पिलखुवा (गाजियाबाद)।

❋ ❋ ❋ ❋

'विश्व वन्द्य धर्मसम्राट अनन्त श्री विभूषित परमपूज्य श्री स्वामी करपात्री जी महा-का नाम आधुनिक युग में धर्म रक्षा का प्रतीक बन गया था। पूज्य स्वामी करपात्री जी अद्वितीय प्रतिभा, दृढ़ संकल्प निश्चय, शास्त्रनिष्ठा एवं अदम्य उत्साह की साक्षात मूर्ति थे। वह विगत ५०-५५ वर्षों से राष्ट्रोद्धारक कार्यों में संलग्न रहे। हिन्दू धर्म पर आये किसी भी संकट से जूझ जाना उनकी विलक्षण कर्मनिष्ठा का परिचायक है। देश विभाजन को रोकने के लिए उनके अथक प्रयासों में देशभक्ति का करुण क्रन्दन झलकता है। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। गो रक्षा आन्दोलन के तो वह सूत्रधार ही रहे हैं और गो हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध के लिये उनकी आत्मा छटपटाती रही। उनके अनमोल ग्रंथों में धर्म, संस्कृति, अध्यात्म तथा भारतीयता का मार्मिक प्रतिपादन मिलता है। 'मार्क्सवाद और रामराज्य' 'रामायण मीमाँसा', 'विचारपीयूष' और 'वेदार्थपारिजात' आदि पूज्य स्वामी जी के प्रेरणादायी ग्रंथ हैं। करपात्री जी के दिव्य ज्योति में विलीन होने के अवसर पर 'जनधर्म' दिव्यातमा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए नमन करता है।'

—साप्ताहिक 'जनधर्म' भोपाल, (म० प्र०)

❋ ❋ ❋ ❋

'स्वामी जी विश्व में हिन्दू संस्कृति के प्रतीक थे। हिन्दू धर्म का दीपक उजागर करने वाला नेता आज संसार से चल बसा। उनके निधन से हिन्दू संस्कृति की अपार क्षति हुई है। ऐसे कर्मठ, संघर्षशील, धार्मिक नेता और सन्त के प्रति सभी पत्रकारगण एवं धर्म प्रेमी अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं।'

—**श्री प्रह्लाद प्रसाद गुप्त**,पत्रकार की अध्यक्षता में सभी संस्थाओं की ओर से आयोजित जनसभा में गोरखपुर के पत्रकारों द्वारा व्यक्त उद्‌गारों से।

❋ ❋ ❋ ❋

'हिन्दू धर्म सम्राट पूज्य श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के ब्रह्मीभूत हो जाने से हिन्दू धर्म की अपूरणीय क्षति हुई है। विश्व का एक महान धर्म रक्षक नेता चला गया। उन ब्रह्म-लीन महापुरुष के श्री चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि।

—**श्री गोविन्द प्रसाद गुप्त, अध्यक्ष,**
—**श्री शिवधनी प्रसाद, महामन्त्री**
—**श्री रविन्द्र झा, मन्त्री**
—**श्री विनोद कुमार सिंह, सचिव,** तहसील पत्रकार परिषद, चकिया (वाराणसी)

❋ ❋ ❋ ❋

'धर्म सम्राट प्रातः स्मरणीय स्वामी करपात्री जी महाराज के निधन से धर्म, संस्कृत और वेदों का एक प्रकाण्ड विद्वान चल बसा। श्री स्वामी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सनातन धर्म को अर्पित कर दिया था। हमारी सच्ची श्रद्धांजलि वही होगी जबकि हम स्वामी जी के अधूरे कार्यों को पूरा करें।'

—**श्रीयुत ऋषि मामचन्द्र कौशिक,** सम्पादक, 'अजन्ता', हैदराबाद। वर्ष १६/७, १२-२-८३

❋ ❋ ❋ ❋

'धर्मशास्त्र के अद्वितीय विद्वान वर्णाश्रम धर्म के प्रबल पोषक तथा भारतीय दर्शन के प्रबुद्ध व्याख्याता श्री स्वामी जी महाराज के बिना धर्म का कोई धबाधोरी नहीं रहा।'

—**श्री राम चन्द्र शर्मा,** सम्पादक 'सनातन ज्योति', दिल्ली।

❋ ❋ ❋ ❋

'धर्म और संस्कृति के उपासक श्री स्वामी करपात्री जी महाराज का देहावसान देश

और विशेष रूप से काशी की अपूरणीय क्षति है।'

—गाण्डीवम् संस्कृत साप्ताहिक, काशी।

❋ ❋ ❋ ❋

"यदि मैं आज से प्रयास शुरु कर दूँ ता अगले दस वर्षों में साईं बाबा, पाँच वर्षों में बालयोगेश्वर तीन वर्ष में रजनीश बन सकता हूँ लेकिन सौ साल के प्रयास के बाद भी करपात्री नहीं बन सकता।"

— सुप्रसिद्ध अमेरिकी अर्थशास्त्री डा० फिलावार।
(धर्म संघ समाचार अकोला वर्ष ३२/३८८ (२२-२-८२)

❋ ❋ ❋ ❋

'श्री करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन हो जाने से राष्ट्र ने एक महान धार्मिक विद्वान् खो दिया है। वह पात्रों के स्थान पर करों पर रख ही भिक्षा करने के कारण 'करपात्री जी के नाम से जाने गये। दुर्भाग्य से वह इतने कट्टर पन्थी थे कि उन्होंने डा० अम्बेडकर जैसे हरिजन व्यक्ति द्वारा संविधान निर्माण कार्य की आलोचना की यद्यपि वह अप्रासांगिक रही। परन्तु उनकी सत्यनिष्ठा एवं विद्वत्ता के विषय में कोई संदेह नहीं था।

—आर्गनाइजर दिल्ली १४-२-८२

❋ ❋ ❋ ❋

'सनातन धर्म के मेरुदण्ड, भारतीय चिन्तन एवं दर्शन के महामनीषी, पूज्यपाद श्री करपात्री जी महाराज के आकस्मिक ब्रह्मविलीन होने पर महान शोक की अभिव्यक्ति करते हुए महाविद्यालय को उनके शोक में बन्द करते हैं तथा उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि व्यक्त करते हैं।'

—प्राचार्य एवं अध्यापकगण

श्री हरदेव दास नथमल बैरोलिया आदर्श संस्कृत महाविद्यालय टेढ़ीनीम, वाराणसी।

❋ ❋ ❋ ❋

'स्वामी जी महाराज सनातन धर्म की परम्परा को जीवित रखने के लिए सदा प्रयत्न शील रहे। उनके स्थान की पूर्ति सम्भव नहीं है।'

—प्रो० रामचन्द्र सिंह, काशी विद्यापीठ।
— श्री रामसूरत तिवारी, इं का नेता, काशी।
—श्री अनिल कुमार सिंह संजय, जिला कांग्रेस (ई) काशी।
—श्री राजेन्द्र त्रिवेदी (राजू), अध्यक्ष, निर्बल वर्ग कल्याण समिति, वाराणसी।

❋ ❋ ❋ ❋

'सनातन धर्ममार्तण्ड, धर्मसम्राट्, भारतीय संस्कृति के प्राण पूज्यपाद अनन्तश्री विभूषित श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के अकस्मात ब्रह्मलीन हो जाने से सर्वत्र शोक व्याप्त है। सभा उनके प्रति हार्दिक शोक प्रकट करती है आज सनातन धर्म के गुरु हमसे बिछुड़ गये।'

—**प० बालकृष्ण कपूरिया**, अध्यक्ष श्री सारस्वत सभा, काशी।

'स्वामी जी के निधन से हिन्दू धर्म की अपूरणीय क्षति हुई है।'

—**सर्व श्री राजेश खत्री, गंगा सहाय पाण्डेय, नीलम चतुर्वेदी, गंगा सहाय पाण्डेय ब्रजभूषण सिंह अकेला**, जिला इन्दिरा युवक कांग्रेस, वाराणसी

'स्वामी जी के ब्रह्मीभूत हो जाने से हिन्दू समाज की महती हानि हुई है।'

—**श्री बैजनाथ केसरी**, अध्यक्ष, जनकल्याणपरिषद, (राजघाट) काशी।

—**श्री लाल चंद्र प्रसाद**, प्रादेशिक अध्यक्ष, जनकष्ट निवारण महासमिति, वाराणसी।

'पूज्यपाद धर्मसम्राट् एवं भारतीय संस्कृति के प्राण स्वामी श्री करपात्री जी के आकस्मिक निधन से भारत ही नहीं विश्व ने एक सजग विद्वान, कुशलवक्ता, तपोनिष्ठ, धर्मोपदेष्टा खो दिया है तथा विश्व के एक अनुपम व्यक्तित्व की अपूरणीय क्षति हुई है।'

—**छात्रावास परिषद**, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, काशी।

'सनातन हिन्दू धर्म के प्रेरणा स्रोत—स्वामी करपात्री जी महाराज के निधन से केवल धार्मिक ही नहीं अपितु राजनीतिक और साहित्य क्षेत्र में भी अपूरणीय क्षति हुई है।'

—**डॉ० दीनानाथ सिंह**, संयुक्त मंत्री, श्री दयानन्द महाविद्यालय अध्यापकमण्डल, काशी।

'धर्मसम्राट अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के स्वर्गारोहण के दुःखद वृत्तांत से आज सभी शोकाकुल हैं। दो मिनट के मौन धारण पूर्वक उन महान आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।'

—**अध्यापक एवं छात्रगण**, श्री स्यादवाद महाविद्यालय, भदैनी, काशी।

सनातन धर्म के स्तम्भ, अनन्त श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के टूटने (ब्रह्मलीन हो जाने) से हुए वियोग को सहन करना असम्भव है, वह क्षति पूर्ति असम्भव है।'

—**संस्थापक व सदस्यगण**, श्री मिथिला शिष्ट परिषद, काशी।

□ □ □ □

ब्रह्मीभूत महाराज स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

—**बागयाग चेतना पीठम्**, स्वामी भास्करानन्द की समाधि, वाराणसी।

□ □ □ □

अनन्त श्री विभूषित पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के महाप्रयाण पर हार्दिक शोक अभिव्यक्त करते हैं।'

—**पं० बाबूराव दीक्षित**, प्राचार्य, अखाड़ा गोस्वामी तुलसीदास संस्कृत महविद्यालय, भदैनी, काशी।

□ □ □ □

स्वामी जी के ब्रह्मीभूत होने से भारतीय संस्कृति व समाज के लिए महती क्षति हुई है। स्वामी जी सनातन धर्म के मेरुदण्ड व भारतीय चिन्तन एवं दर्शन के महामनीषी थे। वे जीवन पर्यंत धर्मार्थ एवं समाज कल्याणार्थ संघर्ष करते रहे। सभा उन महापुरुष के प्रति शोक सम्वेदना प्रकट करती है।'

डॉ० रामरंग शर्मा, संयोजक, द्वितीय राजभाषा विरोधी संघर्ष समिति, तथा अन्य समस्त सदस्यगण, काशी।

□ □ □ □

'धर्म सम्राट्, सनातन धर्म के स्तम्भ, जगत के प्रकाशक, युग प्रवर्तक पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज का निधन न केवल काशी के लिए अपूरणीय क्षति है वरन् सम्पूर्ण विश्व के आध्यात्म क्षेत्र का ह्रास है सभा उस महान संत के प्रति श्रद्धाञ्जलि समर्पित करती है।'

—**श्री श्री प्रकाश चतुर्वेदी**, प्राचार्य, श्री टीकमणी संस्कृत महाविद्यालय, काशी।

□ □ □ □

'धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन हो जाने से सर्वत्र शोक व्याप्त है। पूज्य श्री चरणों में विनम्र श्रद्धासुमन समर्पित करते हैं।'

— **छात्रगण**, आयुर्वेद महाविद्यालय, वाराणसी।

□ □ □ □

'धर्म, संस्कृति के रक्षक, पोषक एवं उन्नायक पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज आज हम लोगों के बीच से चले गये। उनके अभाव की पूर्ति हम किसी भी प्रकार से नहीं कर सकते हैं।'

—**श्री हनुमान प्रसाद शर्मा,** प्रबन्धक, श्रद्धाञ्जलि सभा
श्री भागीरथी सुरेका संस्कृत महाविद्यालय, ब्रह्मनाल, वाराणसी
—**श्री श्रीपति मिश्र आचार्य,** श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, काशी।

□ □ □ □

'स्वामी जी के निधन से संस्कृत जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। भारत का संस्कृत जगत इस क्षति की पूर्ति नहीं कर सकेगा।'

—**श्री अखिलानन्द शास्त्री,** उपाध्यक्ष, प्रादेशिक संस्कृताध्यापक समिति,
तथा संस्कृत रक्षा संघर्ष समिति, वाराणसी।

□ □ □ □

'स्वामी करपात्री जी का निधन हिन्दू समाज के लिये असहनीय है।'

—**श्री विजय कुमार सिंह,** अध्यक्ष एवं
—**श्री विद्याशङ्करत्रिपाठी,** महामन्त्री,
आजाद युवा मंच, हनुमान फाटक, वाराणसी।

□ □ □ □

'पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन हो जाने से सर्वत्र शोक की लहर व्याप्त हो गयी है। सत्संग मण्डल के ऊपर तो उनकी असीम कृपा थी। वे मण्डल के कार्य-क्रमों में बड़े उत्साहपूर्वक समय-समय पर पधार कर मण्डल को अपना आशीर्वाद देते रहते थे। मण्डल पूज्यपाद के प्रति मौन श्रद्धाञ्जलि समर्पण पूर्वक भगवती जगज्जननी जगदम्बा के श्री चरणों में प्रार्थना करते हैं कि वह हमें सदा ब्रह्मरूप धर्म सम्राट् के बताये मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।

—**श्री पारसनाथ मिश्रा** प्रधान मन्त्री, श्रीकान्त दुर्गा सत्संग मण्डल, वाराणसी।

□ □ □ □

'ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज के प्रति मौन श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।'

—**श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव साहित्य-मन्त्री,—श्री श्रीकान्त पाण्डे** महामन्त्री व अन्य छात्रनेतागण उत्तरी नगर निकाय, वाराणसी।

'हिन्दू धर्म वेद वेदांग और संस्कृति के आधिकारिक व्याख्याता मार्ग दर्शक पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर सारे हिन्दू समाज अपने को अनाथ अनुभव कर रहा है। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनके भक्तों को क्षमता प्रदान करें कि वे इस पीड़ा को सहन कर उनके बताए हुये रास्ते पर चलें।'

—सर्व श्री हरवंश महामन्त्री, चौ० राज नारायण अध्यक्ष, शमीम अनवर सिद्दकी (जि० युवक कांग्रेस 'स'), जे० फरीदी, महेन्द्र सिंह, जवाहर प्रसाद जायसवाल, सुतीक्ष्ण चौबे महामन्त्री जिलारामराज्य परिषद, श्री मती नयनवाज सिंह, (धर्म संघ मुगल सराय), जावेद इकबाल खाँ कौमी मोर्चा। मुगल सराय चन्दौली पत्रकार परिषद, वाराणसी।

✲ ✲ ✲ ✲

'स्वामी जी जैसे महामनीषी के अभाव से सनातन धर्म के अनुयायियों को गहरा आघात लगा है।'

—सुश्री शीला अग्रवाल, प्रभारी श्री अग्रसेन शिशु विहार, वाराणसी।

✲ ✲ ✲ ✲

'धर्म सम्राट पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के आकस्मिक ब्रह्मीभूत होने के समाचार से सभी मर्माहत हैं तथा शोक सन्तप्त हृदय से महाराज श्री के प्रति श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।

—अधिकारी गण श्री अभिमन्यु पुस्तकालय वाराणसी।

✲ ✲ ✲ ✲

'सनातन धर्म के महान् रक्षक स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के निधन से सम्पूर्ण हिन्दु समाज शोकाकुल है। महाराज श्री के बताये मार्गों का अनुसरण करने से ही हिन्दू समाज आगे बढ़ेगा।'

—श्री विश्वनाथ शर्मा, अध्यक्ष, काशी कर्नाटक, संघ, वाराणसी।

'स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के आकस्मिक निधन से देश में गहरा शोक व्याप्त है।'

—श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी, अध्यक्ष, श्री प्रताप नारायण मिश्र, उपाध्यक्ष, श्री कलराज मिश्र महामन्त्री, श्री विपिन बिहारी तिवारी, प्रदेश मन्त्री, उत्तर प्रदेशीय जनता पार्टी।

✲ ✲ ✲ ✲

'स्वामी जी काशी की विभूति थे, उनका व्यक्तित्व विद्वत्ता, तपश्चर्या एवं धर्म परायणता बेजोड़ थी। उनके शिवसायुज्य प्राप्त होने से सर्वत्र शोक की लहर व्याप्त है। बाबा विश्वनाथ से स्वामी जी के उद्देश्यों की सफलता की कामना करते हैं।'

— सर्वेश्वरी समूह, वाराणसी।

✲ ✲ ✲ ✲

'जन सम्राट स्वामी करपात्री जी के निधन को हम राष्ट्रीय अपूरणीय क्षति मानते हैं, उनके निधन से समस्त व्यापारी समुदाय शोकाकुल है। स्वामी जी प्रकाण्ड विद्वान एवं राष्ट्र की अमूल्य निधि थे। हम इस दुखद अवसर पर अपना व्यापार दुकानें आदि बन्द कर तथा शवयात्रा में सम्मिलित होकर उस महान् आत्मा को सम्मान तथा श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।'

— सर्व श्री राजकृष्ण दास, संरक्षक, श्याम मोहन अग्रवाल, अध्यक्ष, राम प्रकाश कपूर, उपाध्यक्ष, शम्भूनाथ चौबे उपाध्यक्ष, राजेन्द्र गोयनका महामन्त्री, कपिल देव सिंह, प्रेम कपूर मन्त्री, मुरलीदास, कोषाध्यक्ष, व अन्य समस्त व्यापारी वर्ग, काशी व्यापार प्रतिनिधि मण्डल, वाराणसी।

✲ ✲ ✲ ✲

'वे धर्म तथा संस्कृति के महान् संरक्षक तथा संयोजक थे……आपकी भागवत-व्याख्यानमाला चिरस्मरणीय रहेगी। आपका जैसा अलौकिक पाण्डित्य था वैसी ही आपकी आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत वाणी पीयूषवर्षिणी थी। आप वैदिक संस्कृति तथा भागवत धर्म के अमर व्याख्याता थे।

— श्री वल्लभ वंशजा श्री शरद वल्लभ बेटी जी, अध्यक्ष,
शुद्धाद्वैत जप यज्ञ समिति, काशी।

✲ ✲ ✲ ✲

'काशी के विद्वान तपस्वी एवं सन्त स्वामी करपात्री जी महाराज के ब्रह्मीभूत हो जाने पर सभा हार्दिक शोक व्यक्त करते हुये श्रद्धाञ्जलि समर्पित करती है।'

— अधिकारी एवं कर्मचारी गण
नगर महापालिका एवं विकास प्राधिकरण, वाराणसी।

✲ ✲ ✲ ✲

'सनातन धर्म की इस अपूरणीय क्षति को निकट भविष्य में पूरा नहीं किया जा सकता। पूज्य महाराज श्री के प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।'

— समस्तविद्वतगण एवं विश्वविद्यालय परिवार
श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

✲ ✲ ✲ ✲

'श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के असामयिक तिरोधान पर यह शोक सभा अपनी श्रद्धाञ्जलि देते हुये यह विश्वास प्रगट करता है कि हिन्दू धर्म-सिद्धान्तों का ज्योतिपुंज अब विश्व मानव के मन में धर्म मात्र जागरण करने का कार्य करेंगे जिससे सम्पूर्ण विश्व का कल्याण होगा।'

—श्री विश्वनाथ डिडवानिया अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी महानगर कार्यकारिणी, वाराणसी।

ब्रह्मीभूत संत-तपस्वी पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी के प्रति श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं स्वामी जी सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति के संबल थे। उनके निधन से धर्म बलहीन और संस्कृति श्रीहीन हो गयी है।

—सन्त श्री छोटे श्री (अध्यक्ष) सिद्धाश्रम सत्संग परिवार, गढ़वाली टोला, वाराणसी।

'स्वामी जी का निधन भारत राष्ट्र एवं भारतीय संस्कृति की अपूरणीय क्षति है।'

—श्री केशव कपालते, सम्पादक, ज्ञानपुर समाचार, वाराणसी।

'वे पूज्य स्वामी करपात्री जी भारतीय संस्कृति के महान गायक एवं स्तम्भ थे। उनके श्री चरणों में हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।'

—ज्ञानपुर मानस प्रचार समिति, वाराणसी।

'पूज्य पाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज महान विद्वान् तथा उच्चकोटि के धर्माचार्य थे। उनके प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।

—मारवाड़ी युवक संघ के नेता श्री सीताराम अग्रवाल, भू० पू० अध्यक्ष, बनारस रोटरी क्लब, वाराणसी।

'पूज्य स्वामी जी के अवसान से आज सर्वत्र शोक व्याप्त है। उनके प्रति भारी मन से भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।'

—डा० महाप्रभुलाल गोस्वामी, अध्यक्ष, तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग, संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

शिष्या यस्य जगद्गुरुत्वमधुना काष्ठासु संबिभ्रति,

ग्रन्था यद्वदुदित्वरोज्ज्वलनिजाम्नायोत्तमा दीक्षिता:।

ओङ्कारेश्वर तीर्थं लब्धवसतिं तं गौड़पादं प्रभुं,

भूयो लब्धतनं नुमो हरिहरानन्दाभिधानं यतिम्॥

यद्वाणीमसृणीकृतानि विदुषां चेतांसि शास्त्राध्वर–,

ज्वालां सोढुमुपोढ दिव्यमहिमस्रोतांसि भूत्वाऽधुना।

सत्यं - ब्रह्म, मृषा - जगत्, परमं वेदः प्रमाणं परो,

लोकः कर्मजितः कथामृतमिदं बर्षन्ति हृष्यन्ति च॥

'धर्म सेवक श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन हो जाने से सर्वत्र शोक व्याप्त है। स्वामी जी महान विद्वान् और मनस्वी विभूति थे।'

— श्री हरिनारायण शर्मा, मन्त्री सनातन धर्म सभा, हैदराबाद, (आन्ध्र)।

'अध्यापक एवं छात्रों की यह सभा महान् शोक प्रगट करती है एवं उन तपोपूत देवर्षि के चरणों में श्रद्धाञ्जलि समर्पण करती हुयी प्रतिज्ञा करती है कि पूज्य पाद स्वामी जी के सिद्धान्तों का सदा प्रचार-प्रसार करती रहेगी।'

—श्री द्वारकेश संस्कृत महाविद्यालय,
राजाधिराज बाजार, मथुरा (उ० प्र०)।

'पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय महापुरुष श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के श्री चरणों में शत-शत श्रद्धाञ्जलि समर्पित हैं।'

— मानस संघ, नवीन शाहदरा, दिल्ली।

'ब्रह्मलीन धर्म सम्राट अनन्त श्री स्वामी करपात्री जी महाराज को हमारी अनेक श्रद्धाञ्जलियां अर्पित हैं।'

— देवेन्द्र स्वरूप ब्रह्मचारी, श्री जयराम आश्रम हरिद्वार, ऋषिकेश।

'हम समस्त नागरिक प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद स्वामी श्री हरिहरानन्द जी सरस्वती करपात्री स्वामी के आकस्मिक निधन पर शोक सन्तप्त हैं और हार्दिक संवेदना प्रगट करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें साथ ही उनके अनुयायियों तथा भक्तों को सान्त्वना प्रदान करें।'

— रमाकान्त पाण्डेय, जीत सिंह चौहान, राम मोहन त्रिपाठी,
कालपी (जालौन)।

'धार्मिक जगत के मेरुदण्ड, भारतीय चिन्तन-मनन के महामनीषी, यतिचक्र चूड़ा-
मणि, वेद वेदान्तवेत्ता, गोरक्षा-आन्दोलन के कर्णधार, यज्ञ-युग प्रवर्त्तक, भारतीय संस्कृति के मान
बिन्दुओं के संरक्षक, धर्म सम्राट अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री हरिहरानन्द सरस्वती, श्री कर-
पात्री जी महाराज के ब्रह्मीभूत हो जाने से न केवल हिन्दू समाज बल्कि पूरे विश्व से एक दिव्य
ज्योति का तिरोधान हो गया। गो माता के रक्षक भारतीय संस्कृति व विद्या के मुखर प्रहरी सदा-

सदा के लिये चले गये। अकोला के नागरिकों की तथा संस्थाओं की यह सभा अपने प्रकाश स्तम्भ पूज्य श्री चरणों में अपनी विनम्र भाव भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पण करती है।'

—श्री पं० डा० नारायण जी पाण्डित अध्यक्ष रामराज्य परिषद, तथा, धर्म संघ रामराज्य परिषद, सनातन धर्म सभा वाचनालय, विश्व हिन्दू परिषद, माहेश्वरी समाज, उत्तर भारतीय समाज, राजस्थान ब्राह्मण समाज, मेडिकल स्टोर्स ऐसोसियेशन, कृष्ण ज्ञान मन्दिर, भारतीय संस्कृति परिषद, गोरक्षण परिषद, आर्य समाज, कपड़ा बाजार एसोसियेशन, भारतीय सेवा सदन, दैनिक 'राज दर्पण' आदि सस्थाओं के प्रतिनिधि गण, अकोला, मध्य प्रदेश।

☼ ☼ ☼ ☼

'पूज्यपाद श्री स्वामी करपात्री जी महाराज विश्व की अनुपम आध्यात्मिक विभूति, भारतीय जीवन आदर्शों के पूर्ण प्रतीक और आर्य परम्पराओं के महान् उद्धारक थे।

—श्री राम नारायण सिद्धान्ती, कार्यवाहक महामन्त्री, धर्म संघ उरई।

☼ ☼ ☼ ☼

'पूज्य श्री के महाप्रयाण से धार्मिक जगत पर महान् आघात हुआ। एक अलौकिक असामान्य बीसवीं सदी के युगपुरुष के आदर्श मार्ग दर्शन से भारतीय प्रजा वंचित हो गयी। उनके दिव्य आदर्श एवं उपदेश को अपने जीवन में अंगीकार करना यही उन्हें सच्ची श्रद्धाञ्जलि है। उन्हें अक्षय स्थान देवे यही प्रभु चरणों में प्रार्थना है।'

—डा० डागा, अध्यक्ष, विदर्भ धर्म संघ (म० प्र०)।

☼ ☼ ☼ ☼

'अनन्त श्री विभूषित यतिचक्र चूडामणि पूज्यपाद धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के ब्रह्मीभूत होने का वृत्तान्त पढ़ते ही धर्मानुरागी जनता पर वज्रपात आ पड़ा। पूज्य श्री धर्मसापेक्षता के विग्रहस्वरूप और धर्म, संस्कृति के महान रक्षक थे वे सर्व धर्म सहिष्णु थे। स्वधर्म और अन्य धर्म के रक्षक थे। सर्व धर्म पर मनमानी खण्डन वृत्ति के महान खण्डक थे। स्वामी जी एक ही ऐसे थे जो डंके की चोट के साथ धर्म सापेक्ष राजनीति को मानव के लिये कल्याणकारी मानते थे। ईमानदार, धर्मानुयायी, धर्मानुरागी जनता के सुदृढ़ धर्म पथ प्रदर्शक थे। स्वाजी जी के ब्रह्मलीन होने पर जगत को बड़ी क्षति पहुंची है। पूज्य श्री के शेष कार्य उनके आदेशानुसार आज आगे बढ़ाने की शक्ति और सामर्थ्य और प्रेरणा, करुणा वरुणालय श्री रामचन्द्र भगवान प्रदान करें तथा ब्रह्मीभूत स्वामी जी की आत्मा को परम शान्ति प्राप्त हो—ऐसे कार्य हम करें।

—राम प्रसाद पन्नालाल पारीख, अध्यक्ष धर्म संघ, बड़ौदा।

☼ ☼ ☼ ☼

'धर्म संघ के संस्थापक और रामराज्य परिषद के निर्माता परम पूज्य प्रातः स्मरणीय वन्दनीय श्री १००८ स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के शरीर छूटने पर धर्म संघ की शाखा की ओर से श्रद्धाञ्जलि अर्पण करता हूं। परमात्मा उनको अच्छा स्थान देवे ऐसो हमारी नम्रता से प्रभुचरण में प्रार्थना है। यतिवत् जीवन धारण करके लोक कल्याणार्थ अपने देह को चन्दन सम जियाकर वह परम गति को प्राप्त हुये। वह भगवान के लाडले भक्त थे।'

—**डा० ग० म० पाटिल, अध्यक्ष धर्म संघ, वरुड।**

□ □ □ □

'महाराज श्री घोर कलिकाल में साक्षात धर्म की मूर्ति थे, उनके जैसे सन्त संसार में अत्यन्त दुर्लभ हैं। स्वामी श्री करपात्री जी वेद स्वरूप निर्लोभ एवं निर्भीक प्रवृत्ति के महात्मा थे। ऐसे महापुरुष शोक करने योग्य नहीं हैं क्योंकि वह स्वयं जीवोन्मुक्त एवं वीतराग महात्मा थे। सनातन धर्म जगत में इन महान आत्मा के ब्रह्मसायुज्य प्राप्त करने पर सम्पूर्ण विश्व में एक आत्यन्तिक कमी महसूस होने लगी है। हम सब पूर्ण ब्रह्म परमपिता से प्रार्थना करते हैं कि महाराज श्री द्वारा बोये गये धर्मबीज शीघ्र ही विकसित हों।'

—**श्री पं० अरुण कुमार शर्मा,** शास्त्राध्यक्ष, श्रीराम धर्म संघ परिषद, खेजरौली, जयपुर।

❋ ❋ ❋ ❋

'हमें पूज्यपाद ब्रह्मलीन धर्म सम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के बताये हुए मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलने का व्रत लेना चाहिए इसी में हमारा एवं हिन्दू धर्म का कल्याण है।'

—**पं जुगल किशोर शर्मा, श्री न० स० तिवारी, मन्त्री धर्म संघ,**
श्री गायकवाड़, ऐडवोकेट, यवतमाल।

❋ ❋ ❋ ❋

'धर्म सम्राट पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी के ब्रह्मीभूत होने से हम अनाथ हो गये हैं।'

'पूज्य स्वामी जी अपने आप में एक थे।'

'स्वामी जी सरीखा भारत में तो क्या विश्व में भी विद्वान नहीं मिलेगा।'

'उनके पदचिह्नों पर चलकर उनका स्वप्न साकार करने का हमें व्रत लेना चाहिए। स्वामी जी के द्वारा बताये महामन्त्र 'श्री राम जय राम जय जय राम' का अधिकाधिक जाप करने का हमें संकल्प लेना चाहिये।'

— **उमाशंकर खेतान, जयन्ती लाल पण्ड्या, कालीचरण अग्रवाल, रामकिशोर श्रीवास, कन्हैया लाल शर्मा आदि** अकोला धर्मसंघ एवं रामराज्य परिषद के अधिकारी एवं सदस्यगण, मध्य प्रदेश।

❋ ❋ ❋ ❋

'सनातन धर्म के सूर्य धर्म सम्राट पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के समाचार से सब स्तब्ध हैं परम कल्याणकारी मंगलमय श्री राम नाम स्मरण एवं संकीर्तन पूर्वक उन महापुरुष के श्री चरणों में श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।'

—**पटेल श्री मंगल भाई** की अध्यक्षता में आयोजित जनसभा माजलपुर में प्रदत्त श्रद्धांजलि सार।

☼ ☼ ☼ ☼

'वर्तमान युग के महान धार्मिक नेता, दार्शनिक, वेदवित्, गोरक्षक, रामराज्य दर्शन के साङ्गोपाङ्ग प्रस्तोता, धर्मसंघ शिक्षामण्डल के माध्यम से देववाणी संस्कृत के प्राचीन ऋषिकुल पद्धति से शिक्षण कार्य के माध्यम से प्रबल प्रतिष्ठापक, यज्ञयुग प्रवर्तक, वाचस्पति, धर्म सम्राट, श्री विद्या के अन्यतम उपासक, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य के मूर्त्तिमान स्वरूप पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय अनन्तश्री विभूषित स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के श्री चरणों में श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।'

स्वामी श्री गुणातीत आश्रम जी महाराज, दण्डी आश्रम, दिल्ली।

—**आचार्य पं० श्यामलाल जी,** धर्मसंघ विद्यालय, दिल्ली।

—**सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री महावीर प्रसाद जयपुरिया, दिल्ली।**

—**" " श्री जुगल किशोर डंग "**

—**" " श्री किशन लाल कटपीस वाले "**

—**पं० रामावतार कौशिक, डा० रघुनाथ शर्मा, श्री चन्द्रकांत देव, हरिवंश लाल प्रभाकर, रामेश्वर दास मुरारका, हीरालाल शास्त्री, ब्रजेन्द्र नाथ दीपक, स्वामी श्री एकरसानन्द जी सरस्वती, व पं० रामचंद्र शास्त्री एम. ए.।**

☼ ☼ ☼

'सनातन धर्म के सनातन, शाश्वत सिद्धांतों के अद्भुत व्याख्याता, महान राजनीति विशारद, वैदिक कर्मकाण्डों, सनातन पूजा पद्धतियों, मूर्ति पूजा, श्राद्ध, तर्पण, पंचमहायज्ञ, बलि वैश्व देव, तीर्थाटन आदि सनातन धर्म के मुख्य मुख्य अङ्गों की वर्तमान उल्वण एवं भौतिकवादी वातावरण में भी समारोह पूर्वक पूर्ण शास्त्रीय विधि विधान के साथ पुनः प्रतिष्ठा करने वाले परम तपस्वी, महान योगी, ग्रंथकार, शास्त्रार्थ महारथी पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

—**श्री प्रताप भानु शर्मा,** संसद सदस्य की अध्यक्षता में टाऊनहाल विदिशा में आयोजित सर्वदलीय जन सभा में व्यक्त भावाञ्जलियों पर

आधारित। जिसमें समस्त धार्मिक संस्थाओं न्यासों, के प्रतिनिधियों, विभिन्न कवियों, मन्दिरों के पुजारियों, राजनेताओं ने अपनी-अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

'ब्रह्मलीन पूज्यपाद स्वामी जी अलौकिक विभूति थे। राष्ट्र में उनकी उपस्थिति से ही मंगल रहता था। वे मूर्तिमान धर्म ही थे। सनातन परमात्मा के सनातन धर्म के सनातन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिए सम्पूर्ण जीवन उन्होंने लगा दिया। उन्होंने वर्तमान समय में धर्म और ब्रह्म की पताका फहराकर अवैदिक मतों के समक्ष भारी वैचारिक चुनौती प्रस्तुत कर वेदों के परम प्रमाण की पुनः स्थापना की। यावज्जीवन वेद, धर्म, गो, ब्राह्मण, यज्ञ, एवं विश्व कल्याण में रत रहे उन्होंने राजनीति में भी ईमानदारी के सिद्धान्त का दृढ़तापूर्वक समर्थन कर वर्तमान धर्म विहीन शुष्क राजनीति के स्थान पर धर्म सापेक्ष पक्षपात विहीन लोक कल्याणकारी रामराज्य दर्शन प्रस्तुत कर राजनीति को नयी दिशा देने का प्रयास किया। वे युग पुरुष थे।

—**श्री पं० श्रीधर भटेले शास्त्री**, इन्दौर की अध्यक्षता में धर्म संघ, रामराज्य परिषद, गो रक्षा समिति, आदि द्वारा आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा श्रद्धाञ्जलि अर्पणकर्त्ताओं में प्रमुख थे :—

—सर्व श्री (१) श्याम मिर्जापुरी, (२) मदनलाल शर्मा, (३) रघुराज चतुर्वेदी अध्यक्ष सनातन धर्म विद्यार्थी परिषद, (४) शंकर दयाल शर्मा अध्यक्ष धर्म संघ विदिशा, (५) गिरिधर शर्मा शास्त्री प्रधान श्री उमाशंकर संस्कृत शाखा, (६) कोमल प्रसाद एडवोकेट अध्यक्ष मध्य प्रदेश हिन्दु महासभा, (७) राम नारायण अग्रवाल, (८) नरसिंह दास गोयल भू० पू० विधायक जनता पार्टी, (९) स्वतन्त्रता सेनानी डा० जमुना प्रसाद मुखरैया, (१०) केशव शास्त्री धर्माधिकारी, (११) दीन दयालशर्मा, (१२) भानुप्रताप शर्मा सांसद आदि।

'यतिचक्र चूड़ामणि, धर्म सम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के ब्रह्मीभूत होने के समाचार से सभी लोक कल्याण कामियों को वेदना हुई है। सभी धार्मिक जनशोकाभिभूत हैं एवं भारी मन से पूज्यपाद के प्रति नतमस्तक होकर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।'

– **श्री रामानन्द जो** महाराज की अध्यक्षता में बांसवाड़ा धर्म संघ के तत्वावधान में आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में व्यक्त विचारों का सार।

'सनातन धर्म के सूर्य अनन्त श्री विभूषित पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज के सहसा इस लोक से अन्तर्धान हो जाने से आज समस्त धार्मिक जगत शोकाकुल है। महाराज श्री के श्री चरणों में शोक सम्वेदना प्रगट करते हुए अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनायक परब्रह्म परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें पूज्य स्वामी जी के द्वारा बताये मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलने का साहस और क्षमता प्रदान करें।

—**श्री महन्त दीन बन्धुदास जी** की अध्यक्षता में श्री भद्रकाली मन्दिर में नासिक धर्म संघ द्वारा आयोजित शोक सभा में प्रगट उद्‌गारों पर आधारित।

'विश्ववन्द्य, धर्म सम्राट, पूज्यपाद, अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर धार्मिक जनता हार्दिक शोक प्रगट करती है। पूज्य स्वामी जी वैदिक आर्य हिन्दू धर्म के शीर्षस्थ नेता व प्राण थे। धार्मिक क्षेत्र में विश्व की विभूतियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते थे। अचानक ब्रह्मलीन हो जाने से धार्मिक जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। प्रभु से प्रार्थना है कि वह हमें पूज्य स्वामी जी द्वारा बताए मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करें।

— **पं० कल्याण प्रसाद मिश्र** की अध्यक्षता में धर्म संघ गोंदिया द्वारा आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में प्रगट उद्‌गार।

'धर्म, गो, संस्कृति की रक्षा हेतु पूज्यपाद स्वामी जी महाराज ने महान् कार्य किया। हमारा कर्त्तव्य है कि हम गो रक्षा, धर्म रक्षा एवं शास्त्र रक्षा पूर्वक उनके कार्यों को अमरत्व प्रदान करें। यही सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

—गो आश्रम, नृसिंहपुरी में आयोजित सभा के प्रस्ताव का सार। (म० प्र०)

'पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी के धर्म जागरण कार्यों से प्रेरणा लेकर उनके मार्ग पर दृढ़तापूर्वक अनुसरण करने का आज हमें व्रत लेकर सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनी चाहिये।

—श्रीयुत डॉ० तिवारी, अध्यक्ष धर्म संघ, आर्णि। (म० प्र०)

'साक्षात् सच्चिदानन्द स्वरूप पूज्यपाद ब्रह्मलीन स्वामी श्री हरि-हरा-नन्द सरस्वती (श्री करपात्री जी महाराज) ब्रह्मानन्द में आनन्दित रहें और हम लौकिक व्यक्तियों को सदा धर्म कार्यों में निरत रहने के लिये अन्तः प्रेरणा देते रहें यही उस परब्रह्म परमात्मा से निवेदन करते हैं।'

—धर्म संघ, रामराज्य परिषद एवं अधिवक्ता संघ, सतना (म० प्र०) द्वारा आयोजित शोक सभा में पठित प्रस्ताव से।

'विश्ववन्द्य धर्म सम्राट, सनातन धर्म मार्तण्ड पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन हो जाने पर उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।

—**धर्म संघ, पंचपिडादेवी समिति**, अभिभाषक संघ, संस्कृत परिषद कालपी द्वारा कालपी कालेज प्रांगण में आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा के प्रस्ताव से।

❋ ❋ ❋ ❋

''जो सदा धर्म की जय करते, करते अधर्म का नाश सदा।
सद्भाव जगाते जन मन में, करते जग का कल्याण मुदा।।
गोवध बन्दी कानून बने, सरकार से यह अनुरोध किया।
जब मिले नकारात्मक उत्तर, तब स्वयं धर्मरण रोप दिया।।
उद्घोष किया गो रक्षा का, आन्दोलन करके बार बार।
वे अतिथि बने नटवर गृहके, जब सुन न सके गो-चीत्कार।।
जो धर्म सूर्य थे पृथ्वी के, डरती जिनसे अधर्म रात्री।
शतकोटि नमन स्वीकार करें वे विश्ववन्द्य स्वामी करपात्री।।

—खटोआ भागवत सम्मेलन, भूदान (म० प्र०) के अवसर पर पाठशाला के अध्यापक एवं छात्रगणों की सभा में पठित श्रद्धाञ्जलि।

❋ ❋ ❋ ❋

'वेदों के प्रकाण्ड विद्वान, अनेक ग्रंथों के प्रणेता, धर्म एवं गोरक्षा के लिए प्राणपण से सदा प्रयासरत महापुरुष पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के श्री चरणों में श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

—सनातन धर्म महासम्मेलन, अर्द्धकुम्भ, प्रयाग में आयोजित सभा में व्यक्त उद्‌गार।

❋ ❋ ❋ ❋

महाराज श्री तप-तितिक्षा की मूर्त्ति, लोक कल्याणरत वीतराग महापुरुष, गोरक्षा आन्दोलन के सूत्रधार, वेदोद्धारक, यज्ञ युग प्रवर्त्तक, धर्म रक्षक संन्यासी कारक पुरुष थे। वे अनेक गुणों से मण्डित अनन्त श्री विभूषित सन्त थे। उनके गुण गौरवगान के व्याज से उनके ही श्री चरणों में

यह श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं कि वह हमें धर्म कार्यों के लिये प्रेरित करें।

—**श्री पाद मराठे शास्त्री जी**, डोबीवली की अध्यक्षता में ज्ञानेश्वर मन्दिर कल्याण, (बम्बई) में पारित शोक प्रस्ताव से।

❋ ❋ ❋ ❋

'विश्ववन्द्य धर्म सम्राट् पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज सनातन वैदिक हिन्दू धर्म के सर्वोच्च सिंहासन पर विराजमान थे। आज प्रातः लगभग ९ १/४ बजे काशी विश्वनाथ की नगरी में उनके ब्रह्मलीन होने का समाचार सुनकर सनातनी जगत में शोक व्याप्त हो गया है। स्वामी जी ने यावज्जीवन धर्म विरोधी कार्यों का डटकर सक्रिय विरोध किया और धार्मिक, वैदिक मर्यादाओं की प्राण-पण से रक्षा की। यज्ञ युग प्रवर्त्तक, महान तपस्वी, देश भक्त, अखण्ड भारत के उपासक, सरस्वती के वरदपुत्र स्वामी जी को खोकर आज हिन्दू जगत असहाय हो गया है। यह सभा उनके श्री चरणों में श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुये भगवान शंकर से प्रार्थना करती है कि वह हमें स्वामी जी द्वारा बताये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें।'

—भगवान औघड़नाथ शिव मन्दिर समिति, काली पल्टन, मेरठ की श्रद्धाञ्जलि सभा में पारित प्रस्ताव। श्रद्धाञ्जलि सभा में, 'करपात्री एक अध्ययन' के लेखक श्री कृष्ण प्रसाद शर्मा, डा० भीष्मदत्त शर्मा, मन्त्री धर्म संघ मेरठ, डा० रामप्रकाश अग्रवाल मेरठ कालेज, श्री जयगोपाल सिंहल प्रधान औघड़नाथ मन्दिर समिति डा० राजेन्द्र कुमार गर्ग, श्री जयप्रकाश गर्ग, श्री गिरिजा शंकर प्राचार्य, श्री नारायणदत्त शर्मा आदि थे।

❋ ❋ ❋ ❋

'आध्यात्मिक जगत की महान विभूति, संघर्षशील तपस्वी, महान विचारक, उद्भट् विद्वान्, वीतराग संन्यासी, कारक-पुरुष, महात्मा जिन्होंने आजीवन हिन्दू धर्म की मान्यताओं हेतु संघर्ष किया, साहित्य स्रजन किया, धर्म युद्ध छेड़कर अखण्ड भारत एवं गो रक्षा हेतु जेल यात्राएं कीं, धर्म परिवर्तन का प्रबल सैद्धान्तिक विरोध किया, यज्ञ युग का प्रवर्त्तन किया। जो अनेक अलौकिक गुण गण सम्पन्न थे। यतिचक्र चूड़ामणि के सिंहासन पर विराजते थे, धर्म के सम्राट थे। कठिन से कठिनतर कृच्छ्र व्रतों के धारण करने वाले तितिक्षु थे—ऐसे योगी राज, परिव्राट्, श्री विद्योपासक, परमशैव, परम वैष्णव, परम शाक्त, तपस्वी, मनस्वी, ब्रह्म वर्चस्वी, अनन्त श्री विभूषित अभिनव शङ्कर के श्री चरणों में कोटिशः नमनपूर्वक श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं और अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें उनके बताये

मार्ग पर चलने की शक्ति-सामर्थ्य प्रदान करे। मेरठ धर्म संघ की ओर से आयोजित सर्व दलीय सभा में व्यक्त निम्नलिखित व्यक्तियों के। विचारों पर आधारित —

—**ज्योतिष्पीठाधीश्वर** जगद्गुरु शंकराचार्य पूज्य स्वामी **स्वरूपानन्द** सरस्वती जी महाराज (अध्यक्ष)

—पूज्यपाद स्वामी **माधवाश्रम जी** महाराज कण्डा घाट, पंजाब।

—डा० **दीपचन्द शास्त्री**, भू० पू० उपकुलपति मेरठ विश्वविद्यालय।

—**श्री मोहनलाल कपूर**, भू० पू० विधायक भा० ज० पा० मेरठ।

— **श्रीमती शकुन्तला कौशिक**, शिक्षाविद्।

- श्री मास्टर **सुन्दरलाल जी,** सर्वोदय समाज मेरठ।

— **पं० किशनचन्द्र शर्मा,** वैद्य अध्यक्ष कांग्रेस (इ०) मेरठ शिविर।

— **ला० रामेश्वर दयाल** नगर संचालक रा० स्व० से० संघ मेरठ।

— आचार्य पं० **रामनाथ 'सुमन'** धौलाना।

—**पं० कालीचरण पौराणिक**, अध्यक्ष रामराज्य परिषद मेरठ।

—**श्री गजाधर तिवारी,** वैद्य मन्त्री सनातन धर्म सभा मेरठ।

—**श्री कृष्ण प्रसाद शर्मा,** लेखक 'करपात्री एक अध्ययन' मेरठ।

—**प्रो० शिवानन्द शर्मा,** प्राचार्य देवनागरी कालेज मेरठ।

—**श्री श्याम सुन्दर वाजपेयी**, अध्यक्ष धर्म संघ प्रकाशन, मेरठ।

—**श्री डा० भीष्मदत्त शर्मा,** (एम० ए० पी-एच० डी०) नानकचन्द कालेज मेरठ।

❋ ❋ ❋ ❋

'सनातन धर्म के महान नेता, गो हत्या बन्दी आन्दोलन के प्रेरक, हिन्दू धर्म की मान्यताओं के संरक्षक, परम विद्वान, महामनीषी धर्म, सम्राट, वाचस्पति, यति, वाग्मी, वेदवित् पूज्यपाद स्वामी करपात्री जी महाराज के श्री चरणों पर कोटिशः श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं। आज हिन्दुत्व की रक्षा का संकल्प लेकर ही हम उनके कार्य को पूरा कर सकते हैं' —

— सर्व श्री पं० देवशास्त्री की अध्यक्षता में, आनन्द प्रकाश सिंहल भा० ज० पार्टी, राधे श्याम शर्मा, सम्पादन विभाग 'धर्म दूत', सुखवीर जैन, जैन समाज, शिव कुमार गोयल 'पत्रकार', अनिरुद्ध गोयल 'धर्म दूत परिवार', आदि महानुभावों द्वारा भक्त रामशरणदास जी पिलखुवा के स्थान पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में व्यक्त विचारों का सारांश।

'स्वामी जी ने सनातन धर्म की रक्षा हेतु जो कुछ किया है वह स्तुत्य है। वे शास्त्रीय सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ निश्चयी थे। उनके द्वारा बताए गये मार्ग पर चलकर उनके द्वारा छोड़ गये कार्यों को पूर्ण करने का हमें संकल्प लेना चाहिये।'

– सर्व श्री राम बाबू शुक्ल, राम मोहन त्रिपाठी एडवोकेट, विन्देदीन पाठक, व्रजेन्द्र कुमार निगम, पं० कैलाशनाथ द्विवेदी, सरयूदत्त तिवारी, भुल्लन स्वामी, राधाकान्त पाण्डेय, धर्म संघ, कालपी, (उ० प्र०)

'सनातन धर्म के मूर्धन्य नेता धर्म सम्राट पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज एक अलौकिक युग पुरुष थे। उनके सभी कार्य अलौकिक थे। देश की जनता ने उन्हें पहचाना नहीं। आज सनातन जगत का सूर्य अस्त हो गया। वर्णाश्रम धर्म की नीव ढह गयी। उनके श्री चरणों में मौन श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।'

विश्रामघाट, मथुरा में आयोजित श्रद्धाञ्जलि जन सभा में—

—श्री दीनानाथ मंगलेश, श्री प्रेम वल्लभ व्यास, रामानुजाचार्य, श्री राधाकृष्ण शास्त्री, श्री घनश्याम लाल जी चतुर्वेदी निर्भीक, विष्णुदत्त जी वैद्य, श्री हरचरणलाल जी, श्री श्याम सुन्दर जी, सा० आ० जगन्नाथ जी शास्त्री, श्री बालमुकुन्द जी बाबा, श्री रघुनाथ प्रसाद जी शास्त्री, श्री दाऊदयाल ब्रजेश, श्री रामनारायण अग्रवाल, श्री जोशी राधेश्याम जी द्विवेदी, श्री नटवरलाल 'पेटेन्ट' आदि महानुभावों ने अपने-अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किये।

'परम पूज्य श्री स्वामी करपात्री जी महाराज का सनातन धर्म के सूर्य के रूप में स्मरण किया गया। उनके ब्रह्मलीन हो जाने से धर्म-संस्कृति के क्षेत्रों को अब मार्ग दर्शन की अभावता विचलित करती रहेगी। धर्म सम्राट पूज्य स्वामी जी की विद्यमानता से ही सारा सनातनी संसार उनके अलौकिक वैदिक ज्ञानालोक से आलोकित रहता था। आज उनके बिना सूना-सूना सा लग रहा है। हृदयस्थ भावों को बाहर प्रगट करने के लिए शब्द नहीं मिल रहे हैं। उन महापुरुष का अभाव हमें आज ही नहीं चिरकाल तक अनुभव होता रहेगा। वे ब्रह्मरूप से हमें सदा शुभ कार्यों के लिये प्रेरित करते रहें यही प्रार्थना है।'

—हाथरस धर्म संघ द्वारा आयोजित शोक सभा में निम्नलिखित महानुभावों द्वारा प्रगट उद्गारों पर आधारित—

– सर्व श्री पं० गोवरधननाथ जी मिश्र, धर्म संघ एवं रामराज्य परिषद, पं० बनवारीलाल शास्त्री पण्डित परिषद्, डा० राजेन्द्र मोहन कटारा, रा० रा० प० व 'निरावरण', शिव कुमार गौड़ कामेश्वर संस्कृत विद्यालय, मदनलाल आजाद, आजाद कमेटी, रमेशचन्द दीक्षित सत्संग मण्डल, वैद्य श्री ओमप्रकाश उपाध्याय, जनपद आयुर्वेद सम्मेलन, डा० राम निवास शर्मा, वेद भगवान, पं० श्रीकान्त गांगेय, सनातन धर्म सभा, खजान सिंह वैद्य, भा० ज० पार्टी, प्राचार्य जी कामेश्वर संस्कृत विद्यालय, शिक्षक संघ राम बाग विद्यालय, गौतम चाचा, चन्द्रपाल गौतम जनता पार्टी, सुरेश मिश्र प्रतिनिधि सन्मार्ग, वाराणसी, दौलतराम बारह सैनी मेघश्याम शास्त्री, शिवकुमार समाजवादी लोक दल, मनोहरलाल गर्ग नागरिक कल्याण समिति, शंकरलाल वर्मा राष्ट्रीय स्व० से० संघ, आचार्य पं० पुरुषोत्तमदेव मिश्र मन्दिर बिहारी जी कमला बाजार, अशोक कुमार गुप्ता, समाज कल्याण समिति, रमेशचन्द्र आर्य, आर्य समाज, पं० गंगाशरण रामायणी, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा के महोपदेशक, डा० टी० एन० विमल, हिन्दुस्तानी आन्दोलन एवं विश्व हिन्दु परिषद, कुंवर जीतेन्द्र सिंह, गो हत्या बन्दी अभियान समिति अलीगढ़, पं० रामकिशोर मिश्र 'स्वदेश' ग्वालियर, जयप्रकाश शर्मा हाथरस।

'स्वामी श्री करपात्री जी महाराज अत्यन्त श्रेष्ठ विद्वान्, त्यागी, कट्टर सनातन धर्मनिष्ठ एवं उच्च कोटि के वक्ता थे। उनको खोकर हम सभी भारतीय अत्यन्त शोक मग्न हुये हैं। उनके ध्येय और नीति को आगे चलाने के लिये हम सब भारतीयों को उत्साह एवं निष्ठापूर्वक प्रयत्न करना ही चाहिये।'

– महाराष्ट्र प्रान्तीय धर्म संघ श्री ज्ञानेश्वर ज्ञान मन्दिर, जि० ठाणे, महाराष्ट्र कल्याण।

'केवल सनातन धर्म की ही नहीं सम्पूर्ण धर्मों के लिये अपार क्षति है उन देव तुल्य परम तपस्वी महात्मा स्वामी श्री करपात्री जी का तिरोधान। जिनके स्थान की पूर्त्ति भविष्य में चिरकाल तक सम्भव नहीं हैं। वे अलौकिक महापुरुष थे।'

—श्री राधे श्याम शर्मा शास्त्री, राजाराम संस्कृत महाविद्यालय, मण्डी डबवाली, जि० सिरसा, हरियाणा।

'धर्म सम्राट पूज्य स्वामी जी महाराज के आकस्मिक निधन पर हिन्दू सम्प्रदाय को एक भारी आघात पहुँचा है और इसकी क्षति पूर्ति नहीं की जा सकती। आपने दिल्ली, काशी, कलकत्ता से हिन्दी दैनिक 'सन्मार्ग' का प्रकाशन किया। धर्म संघ शिक्षामण्डल, रामराज्य परिषद एवं धर्म संघ आदि अनेक संस्थाओं के पूज्य स्वामी जी संस्थापक थे।' ......वे वेदों शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान थे। धारा प्रवाह घण्टों तर्क पूर्ण, बोधगम्य, प्रौढ़ प्राञ्जल भाषा में व्याख्यान देने में अनुपम वक्ता थे स्वामी जी द्वारा दर्शाया हुआ भक्ति का मार्ग मनुष्य मात्र को चिरकाल तक प्रेरणा देता रहेगा पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज में अनेक दैवी गुण विद्यमान थे, वे एक साथ वीतराग, लोक कल्याणरत, धर्म सम्राट, राजनीतिज्ञ तपस्वी, ज्ञानी, योगी एवं भक्त थे - विलक्षण प्रतिभा के धनी उन महापुरुष के अलौकिक व्यक्तित्व की छवि भारतवासियों के मानस में चिरकाल तक बसी रहेगी - उनके चरणों में शत-शत प्रणामांजलियाँ अर्पित हैं।

—श्री प्रभातीलाल गौड़ ऐडवोकेट, श्री ओमप्रकाश त्रिपाठी,
श्री रवि गौड़ इत्यादि द्वारा व्यक्त मनोभावों का सार संक्षिप्त-
श्रद्धाञ्जलि सभा, कानपुर। (उ० प्र०)

✲ ✲ ✲ ✲

'पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज ने अपनी ओजस्वी लेखनी द्वारा हम सबके लिये अनेक ग्रंथों का निर्माण किया, जिसमें 'मार्क्सवाद और रामराज्य', 'रामायण-मीमांसा', 'वेदार्थ-पारिजात', 'भक्ति-सुधा', 'विचार पीयूष' आदि प्रमुख हैं। अ० भा० रामराज्य परिषद, अ० भा० धर्म संघ, एवं धर्मवीर दल आदि का समस्त भारत में प्रचार-प्रसार करके व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व कल्याण का मार्ग परिष्कृत कर दिया है जो हम सबके लिये अनुकरणीय है। आज हम उनके वात्सल्यमय श्री अंग से बिछुड़ गये। उनके बतलाये मार्ग पर चलने का साहस सदैव उनके साहित्य द्वारा मिलता रहेगा। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि सनातन धर्म का आधार स्तम्भ धार्मिक-अद्वितीय विद्वान, युगावतार, तितिक्षु यति हम सबको असहाय अवस्था में छोड़कर आज विलग हो गया। उनके स्मरण मात्र से सतोगुण की अभिवृद्धि होती थी।

—उन्नाव धर्म संघ द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि सभा में पूज्यपाद स्वामी
श्री विशुद्धानन्द परिव्राजक।

✲ ✲ ✲ ✲

'सनातन धर्म मार्तण्ड, 'सन्मार्ग' संस्थापक, धर्म सम्राट, भारतीय-संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म की साक्षात् मूर्ति पूज्यपाद अनन्त श्री समलंकृत, परम वीतराग, परम हंस परिव्राजकाचार्य महाराज स्वामी श्री करपात्री जी के निधन से आज सभी आस्तिक जन सन्तप्त हैं। उनकी क्षति

पूर्ति असम्भव है। ऐसे अलौकिक महापुरुष के चरणों में भारी मन से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं।

– सर्व श्री डा० बैजनाथ पाण्डेय, प्रवक्ता के० बी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मिर्जापुर, कृपा शंकर चतुर्वेदी जिला प्रतिनिधि, सन्मार्ग, काशी, प्यारे लाल गुप्ता, प्रतिनिधि अमृत प्रभात, दयाशंकर चतुर्वेदी, श्री दिलीप श्रीवास्तव, विश्वनाथ अग्रवाल अध्यक्ष, आनन्देश्वर महादेव मन्दिर, राजेश गोयल दूधनाथ, व जगदीश केसरी आदि वक्ताओं द्वारा पंसारी टोला, मिर्जापुर (उ० प्र०) में प्रगट भावनाञ्जलियों पर आधृत।

□ □ □ □

'वेद-शास्त्र तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों के पूज्य स्वामी जी सर्वाधिक विद्वान थे। धर्मशास्त्रों में उनकी पैठ बड़ी गहरी थी। धार्मिक जगत में पूज्यपाद का निर्णय अन्तिम निर्णय माना जाता था। वर्तमान समय में वह एक अद्वितीय महापुरुष थे। उनके स्थान की पूर्ति नितान्त असम्भव है।

—श्री पं० गोपाल पाण्डेय, तुलसी मन्दिर, काशी।

□ □ □ □

'पूज्य स्वामी जी सनातन धर्म के रक्षक, संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य विद्वान होने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मूर्तरूप थे'। धर्म सम्राट, यति चक्र चूड़ामणि, उन वीतराग महापुरुष के श्री चरणों में श्रद्धांजलि प्रदान करते हैं। उनके स्थान की पूर्ति सम्भव नहीं है।

—इंका युवा नेता, राजेश नारायण सिंह, वाराणसी।

—सर्व श्री माता फेर पाण्डेय, श्री प्रकाश नारायण सिंह, हीरासिंह, रमेश चन्द्र उपाध्याय, भारत भूषण, शीतल प्रसाद उपाध्याय, लाल जी मिश्रा, भैया लाल पटेल, गयासिंह यादव, आदि युवाजन, इन्दिरा कांग्रेस, मुर्दहां बाजार, सिन्धोरा रोड, बालरूप हनुमान मन्दिर जनसभा हनुमान फाटक, वाराणसी, पं० लक्ष्मीकान्त रामाचार्य पुराणिक, श्री वल्लभराम शालिगराम सांगवेद विद्यालय, पंच द्रविड़ तीर्थ पुरोहित संस्था, नूतन बालक गणेशोत्सव समाज सेवा मण्डल, काशी, श्री गणेश विद्या मन्दिर कन्या उ० मा० विद्यालय, काशी, श्री गणेश आरोग्य मन्दिर, वाराणसी, श्री काशी गंगोत्सव मण्डल, काशी।

□ □ □ □

'पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज साक्षात् विश्वनाथ ही थे। जिन लोगों ने इस तथ्य को पहचान कर उनकी भक्ति की उन्हें वैसा ही फल प्राप्त हुआ। ... भगवान शंकर की इस पवित्र नगरी काशी में उन यतिचक्र चूड़ामणि, महानयोगी, धर्मसम्राट का पूर्ण वैदिक विधि विधान से अभिषेक एवं षोडशोपचार पूजन यहाँ के वैदिक पण्डितों ने अनेक बार सम्पन्न कर आत्म लाभ एवं आनन्दानुभूति प्राप्तकी है। शंकर स्वरूप स्वामी जी भगवान शंकर की नगरी में शिव नामोच्चारण पूर्वक सानन्द पुनः शिव स्वरूप को प्राप्त हो गये। हमें उनके द्वारा उपदिष्ट धर्म मार्ग का अनुसरण कर कृत्य कृत्य होना ही चाहिये।'

—सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य **श्री पं० लाल बिहारी द्विवेदी, काशी।**
—वाराणसी के शिवायत महन्त श्रीयुत भवानीशङ्कर जी।
—पं० श्री प्रकाश मिश्र, धर्म संघ दुर्गा कुण्ड।
—श्री पंडित भागवत जी —पंडित गणेश शंकर जी।
—श्री आनन्द बहादुर सिंह, सम्पादक, सन्मार्ग, वाराणसी।
—श्रीयुत पण्डित शिव प्रसाद पाण्डेय, काशी।

स्वामी जी के निधन से भारत माता के कण्ठहार से एक बहुमूल्य लाल लुप्त हो गया। इस क्षति की पूर्ति अत्यन्त ही कठिन दिखाई देती है। उनके जैसा, राष्ट्र-भक्त, धर्म-प्रेमी, कर्मनिष्ठ विद्वान देश में यदाकदा ही अवतरित होता है।'

—सन्त नागपाल, संरक्षक, आद्या कात्यायनी शक्तिपीठ, छतरपुर।

धर्म भानु का उदय

भयो जब उदय धर्म को भानु।
वर्णाश्रमि निशिवीति देखि उठ, दिया तुरत जलदान ॥
विकसे सन्तजलज सरवर में, मुंदे कुमुद अज्ञान।
तारागण कुतर्क सब छिप गये, अघतम मिट्यो महान ॥१॥

कृष्ण-बोध रवि के प्रतापवश, कपट उलूक लुकान।
भये विशोक कोक सज्जनगण, चौर भगे लै प्रान ॥२॥

सुमर प्रात उठ स्वरूप निरञ्जन, सद्‌विद्या की खान।
संस्रति क्लेश मिटावन हारे, सदा करें कल्यान ॥३॥
करपात्री था उदय धर्म का, सुखप्रद सकल निदान।
वेद-अर्थ पारिजात प्रकट कर, "शर्मा" दिया सद्ज्ञान ॥४॥

—श्री नारायण स्वरूप शर्मा, वैद्य शास्त्री, मेरठ।

❋ ❋ ❋ ❋

वेदोपनिषद् पञ्चामृतमय ज्ञानोदय के थे शुभ्रधाम।
प्राणों की राघवमय माला अविरल जपते थे अष्टयाम॥
उज्झितभोगी सात्विक योगी नैसर्गिक भस्मीभूत काम।
शत् शत् कण्ठों से करवाया अमृत घोषण जय राम राम ॥१॥

उन्नत ललाट भस्मी त्रिपुण्ड मध्यस्थ तिलक कुंकुम ललाम।
पावन रुद्राक्ष सुमाला भी हो गई सुफल पा कण्ठधाम॥
सुस्वांत विचारों का आलय मस्तिष्क अलौकिक चिन्तनमय।
तप की ज्वाला में तप तपकर हो गया कलेवर कुन्दनमय ॥२॥

वह तन कुन्दन निष्कल्मष था बरसाता पावनता अनन्त।
वह आर्य धर्म का विजय तूर्य घोषित करता था दिग् दिगन्त॥
सच्चिदानन्द घन ब्रह्मवाद मङ्गलमय शुभ आस्तिक दर्शन।
जिसके समक्ष पा पूर्ण हार नत मस्तक था नास्तिक दर्शन ॥३॥

वाणी में वाणी का विलास वचनों में षड्दर्शन दर्शन।
श्रुतियों में श्रुतियों का निवास मन करता था नित नीराजन॥
शिवनगरी के केदारघाट आश्रमस्थ सन्त की शिव वाणी।
मानवगण सद्भावनामयी, हो सकल विश्व सुख कल्याणी ॥४॥

श्रद्धा विश्वासमयी वाणी उनकी शिवभक्तिमयी वाणी।
नास्तिकता की विध्वंसमयी रुद्राणी सी तुमुला वाणी॥
साकार सनातन विश्वरूप प्रस्तुतकर्त्री अमरा वाणी।
परिपूत विचारों की वाणी अमृत निर्झरिणी सी वाणी ॥५॥

अब हम न सुन सकेंगे मुदिता शुचिता वाली रसमय वाणी।
वेदांत केसरी सी वाणी घन गर्जन सी वह कल्याणी॥

तपते तपते पञ्चाग्नि तपी जपते जपते शिव धाम गये।
साकार भक्ति के मानव को देते देते छवि धाम नये ॥६॥

धार्मिक जनता पर यह कैसा सहसा विधि वज्र निपात हुआ।
धार्मिक कैसे सह पायेंगे जो क्रूर दैव का घात हुआ॥
दे जन्म जिसे हो गयी सफल यह रसोदरी भारत धात्री।
हो गये अमर, हो ब्रह्मलीन यतिचक्र शिरोमणि करपात्री ॥७॥

—**श्री जगन्नाथ व्यास** शास्त्री, मानसरोवर, मेरठ।

❖ ❖ ❖ ❖

कंचन कमनीय कलेवर पर, शोभित शुचि गैरिक वस्त्र खण्ड!
उन्नत ललाट राजत त्रिपुण्ड, कर कमल विराजत ब्रह्मदण्ड ॥१॥
रुद्राक्ष रूप में बने स्वयं, शिव जिनके उर कण्ठ हार।
काशी पवित्र केदार खण्ड, निर्मल गंगा की धवलधार ॥२॥
हे विश्व वन्द्य, यति वृन्द श्रेष्ठ, अभिनव शंकर हे विश्वनाथ।
'राम राम' 'शिव-शिव' कहते, तुम कहाँ चले कर जग अनाथ ॥३॥
क्या पुण्य धरा का हुआ क्षीण, ले ली तुमने शाश्वत समाधि।
हो गए निरञ्जन ब्रह्म-रूप, तज करके मायिक घटोपाधि ॥४॥
हो गई धरा सूनी सूनी, हो गई दिशाएं तेज हीन।
सागर भरता व्याकुल उसांस, उत्तुंगश्रृंग हिमगिरि मलीन ॥५॥
कंप गई धरा कंप गया व्योम, रवि की किरणें हो गईं मन्द।
रुक गया पवन का उच्छ्वास, कण-कण करता है करुण क्रन्द ॥६॥
खोया धरती ने वेद पुरुष, खोया जगती ने शास्त्र ज्ञान।
संस्कृति ने खोया उद्धारक, हो गई धर्म की क्षति महान ॥७॥
हो गया आज भारत उदास, गैया मैया निर्बल निराश।
हो गया धर्म का सूर्य अस्त, मर्यादा का कुण्ठित विकास ॥८॥
वेदों की व्याख्या अभिभाषण, अव्याहत लेखन शास्त्रार्थ।
आसेतु हिमाचल धर्मघोष कर, कौन करेगा जग कृतार्थ ॥९॥
श्रुति सम्मत पथ का उद्घाटन, वर्णाश्रम का शुचि कीर्तिमान।
अब कौन करेगा स्थापित, शुचि रामराज्य का संविधान ॥१०॥

वेदान्त वेद्य रस निर्विशेष, सच्चिदानन्द भुवनाभिराम।
सौन्दर्य सार सर्वस्व श्याम, माधुर्य मूर्ति श्यामा ललाम ॥११॥
वृन्दावन नित्य निकुन्जों की, रसमयी कथा का सुधा दान।
हो मगन ध्यान शुकदेव सदृश, अब कौन करेगा भक्तिमान ॥१२॥
श्री चक्र समर्चा योग मार्ग, तन्त्रागम कुण्डलिनी प्रबोध।
ब्रह्मात्मैक्य साक्षात्कार, शिष्यों को देगा कौन शोध ॥१३॥
हे रामचरित के उद्गाता, हे महा - महिम ! हे धर्म राष्ट्र।
हे युग द्रष्टा हे युग सृष्टा, हे वाणी के वैभव विराट् ॥१४॥
हे अनन्त - गुण - गण - निधान, तुम शब्द तुला पर अतुलनीय।
चिन्मय चरित्र के चारु चित्र, अभिनन्दनीय अभिवन्दनीय ॥१५॥
श्रद्धाञ्जलि शब्द सुमन अर्पित, हे अन्तर्यामी पूर्ण काम।
योगीन्द्र वन्द्य गुरुदेव पूज्य, स्वीकार करो शत-शत प्रणाम ॥१६॥

श्री राम नारायण सिद्धांती, रिनिया, उरई।

धर्मसम्राट को श्रद्धांजलि

छोड़ जगत का ठाट-बाट, घूम-घूम घर घाट-घाट।
चल बसे हैं अग-जग से, श्री करपात्री जी धर्म सम्राट।
शोकित विश्व का कोना-कोना लिए अन्तर में कसक वेदना।
पूछ रहा है काल-गति से — धर्म जगत का बाट।
चल बसे हैं अग-जग से — श्री स्वामी धर्म सम्राट्।
हाड़ मास की पार्थिव काया — पंचभूत हुआ है।
आलोकित है सदा जगत में — जो स्तम्भ छुआ है।
पर उस मार्तण्ड का अस्त नहीं - प्रशस्त किया धर्म-पथ को।
घोर तिमिर में घेर लिया है — जिसने रश्मि रथ को।
मान चुका है लोहा विश्व ने—युक्ति तर्क अकाट्।
चल बसे हैं अग-जग से, श्री करपात्री जी धर्म सम्राट।

—श्री रामाश्रय यादवेन्दु

स्वामी जी के प्रति

यहाँ से कहाँ गये तुम छोड़ हम सभी शिष्यों को असहाय ।
चलेंगे अब कैसे श्रीनाथ — साधना के सब अध्यवसाय ॥१॥

हुआ क्या पुण्य स्वर्ग का क्षीण किया जा जिसे स्वयं परिपूर्ण ।
हाय, अब दर्शन देकर कौन—करेगा पाप धरा का चूर्ण ॥२॥

अरे, उस सुर दुर्लभ कमनीय देह पर लगी सुरों की दृष्टि ।
ले गये भूषित करने स्वर्ग— और सूनी कर दी यह सृष्टि ॥३॥

आज वह नहीं रहा नर व्याघ्र करे जो पाप पुण्य में भेद ।
हुआ था 'कर' जिसका 'पात्र' समाहित थे उसमें सब वेद ॥४॥

गुरो, अब तुम हो निष्कल ब्रह्म तुम्हारी छाया तले जहान ।
वत्स सब तेरे निपट अबोध सदा इन पर बरसाना ज्ञान ॥५॥

—डॉ॰ दामोदर दत्त मिश्र, बगेन (भोजपुर)

✲ ✲ ✲ ✲

जन-जन का तुम्हें नमन-वन्दन

हे धर्मराट श्री स्वामीचरण जन-जन का तुम्हें विपुल वन्दन ।
प्रति संस्कृति व्यूह अभेद्य भेद निज संस्कृति का कर दिया त्राण
पुनः सनातन धर्म ध्वजा फहरी कर घोषित धर्माह्वान
अवरुद्ध युगों से यज्ञ क्रिया का किया आपने सम्पादन
जन-जन का तुम्हें नमन-वन्दन ।

हो धर्म नियन्त्रित राजनीति सबकी स्वकर्म में बढ़े प्रीति
दया - धर्म - मानवता की जन - जन में विकसित हो सुनीति
भारत को स्वर्ग बनाने को था रामराज्य का संस्थापन
जन जन का तुम्हें नमन वन्दन

देवों ऋषियों की धरती पर फिर वेदों का हो समुद्घोष
भारत को विश्वगुरुत्व मिले हो सत्य सनातन धर्म घोष
सबमें देवत्व जगाने को था किया धर्म का प्रतिपादन
जन जन का तुम्हें नमन वन्दन

सर्वत्र धर्म की जय होवे होवे अधर्म का सदा नाश
हों प्राणि मात्र सद्भावपूर्ण सम्पूर्ण विश्व का हो विकास
'भारत अखण्ड हो' का नारा बन गया आप का संकीर्तन
जन जन का तुम्हें नमन वन्दन

युग पुरुष धर्म के संस्थापक इस युग के नव शङ्करावतार
भारत की धरती का कण कण है यशोगान करता उदार
भारत समस्त श्रद्धानत हो करता चरणों में सुमनअर्पण
जन जन का तुम्हें नमन वन्दन

—भालचन्द्र पाण्डेय, स० वि० अ० श्री नन्दलाल बाजोरिया संस्कृत महाविद्यालय अस्सी – वाराणसी।

卐 तुम चले गये 卐

ओ धर्म सनातन के प्रहरी तुम चले गये, ओ वर्णाश्रम के संरक्षक तुम चले गये।
हम भटक गये हैं कोई नहीं पथ दिखलाता, वैदिक शिक्षा को आज न कोई सिखलाता ॥
सन्मार्ग किधर है आज न कोई बतलाता, सत्कार्य न कोई आज यहाँ है चल पाता।
नाना पंथों के बीच आज हम भटक गये ॥ओ १॥

मन्दिर मर्यादा भंग हुई अब जाती है, गोवें हजार पैंतीस यहाँ कट जाती हैं।
चोटी चन्दन बन गये आज उपहास चिह्न, यज्ञोपवीत की लीक निभाई जाती है।
विप्र - धेनु अरु सन्त सहें नित क्लेश नये ॥ओ २॥

रक्षित था धर्म कभी चौबीस अवतारों से, मिट रहा आज यह धर्म कथित अवतारों से।
ऋषियों की भूमि आज त्रस्त महर्षियों से, पूजित है धर्म हमारा अब धनवानों से।
चहुँ ओर भोग के बादल हैं सर्वत्र छए ॥ओ ३॥

त्रेता में लख मुनियों का वह अस्थि समूह, फड़की थीं बाँह धनुर्धारी पुरुषोत्तम की।
आश्वस्त किया था तब कुटिया कुटिया जाकर, फिर गई दुहाई थी पुराणपुरुषोत्तम की।
मठ-मन्दिर-शिखा-सूत्र आज भयभीत भए ॥ओ ४॥

अभिशाप बना है जातिवाद अब भारत में, वर्णाश्रम है अब नष्ट प्राय: इस भारत में।
सज्जन हैं सन्त्रस्त, यहाँ इस भारत में, आचार हुआ है भ्रष्ट यहाँ इस भारत में।
बन रहे यहाँ सर्वत्र वादों के वाद नये ॥ओ ५॥

आतुर है भौतिकवाद हमारे भक्षण को, व्याकुल मुट्ठी भर लोग धर्म के रक्षण को।
सूखे मुख आँखें धसीं आज कृशकाय लिए, यह तकते थे तव ओर स्वत्व संरक्षण को।
निश्चिन्त सदा तुम पर थे सब, हे ज्ञानमये ॥ओ ६॥

आधि-व्याधि और शोक मोह से त्रस्त लोग, हम दीन-हीन अरु रोग-भोग-सन्तप्त लोग।
नाना पन्थों और वादों से हैं ग्रस्त लोग, षडरिपुओं के बन गये आज अभ्यस्त लोग।
भवसागर की मझधार सभी हम डूब गये ॥ओ ७॥

डरता था वेद विरोधी तव हुंकारों से, वैदिक विद्वज्जन हेतु सदा अभयंकर थे।
सन्मार्ग सत्य अरु धर्म सदा रक्षित तुम से, जड़वाद दम्भ पाखण्ड हेतु प्रलयंकर थे।
करने अधर्म का नाश रहे तत्पर, मुनये ॥ओ ८॥

उपदेशक तुम निगमागम के अरु श्रुतियों के, सिद्धांत तुम्हें थे प्रिय सदा स्मृतियों के।
कोई प्रहार करता जब सत्य सनातन पर, राहुल, बुल्के, रजनीश न फिर बच पाते थे।
तुमने जर्जर भारत को वैदिक ग्रंथ दिये ॥ओ ९॥

ओ ब्रह्मनिष्ठ ओ ज्ञाननिष्ठ, ओ वर्तमान युग के वसिष्ठ।
हैं आज अधर्मी जन बलिष्ठ, हैं दीन बने जो धर्म-निष्ठ।
हैं सम्मानित जो हैं अशिष्ट, हैं आज उपेक्षित सभ्यशिष्ट।
ऐसे भीषण-युग में थे, अवतीर्ण हुए ॥ओ १०॥

एक बार तुम और आ चुके हो भारत में, था मचा हुआ संघर्ष यहाँ भारत में।
थे मत-मतांतर स्वयं लड़े भारत में, निर्गुण-सगुण, शैव-वैष्णव थे शत्रु बने आपस में।
तब तुलसी बन सुप्त राष्ट्र में थे फूंके प्राण नये ॥ओ ११॥

हे देव रूप, हे अनासक्त, हे पूर्णकाम, हे पुण्य पुरुष, हे विश्वबन्धु, अभिनव शङ्कर।
हे शुद्ध चित्त, हे विश्ववन्द्य, हे आप्तकाम, हे दिग्विजयी, हे वेद पुरुष, हे योगेश्वर।
उठते थे तव अन्तः में शिवसंकल्प नये ॥ओ ...१२॥

समाजवाद की ऊबड़-खाबड़ धरती पर, रामराज्य का भव्य-भवन निर्माण किया।
सभी आधुनिक वादों को पुनि बाधित कर, स्थापित फिर वेदों का परम प्रमाण किया।
उल्वण राजनीति को भी दिये आयाम नये ॥ओ...१३॥

थे जीवन्मुक्त दण्डधारी हरिहरानन्द, थे ब्रह्मरूप, साकार-रूप, सच्चिदानन्द।
थे परमसिद्ध, आचार्य चरण, सत्पथ के यात्री, गो-द्विज-श्रुति-रक्षण हेतु बने 'स्वामी करपात्री'।
'कृष्णकृत' वाङ्मयी पूजा तुभ्यमेव समर्पये ॥ओ...१४॥

— कृष्ण प्रसाद

द्वितीय खण्ड

कृतित्व एवं वक्तृत्व

श्रुति स्मृत्युदितं धर्म मनुतिष्ठन्हि मानवः।
इहकीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् ॥
श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।
ते सर्वार्थेष्वं मीमांस्ये ताभ्यां धर्मो ह निर्बभौ ॥

मनु २/६, १०

वेदों की शास्त्रता का मूल

[आजकल आधुनिक विचारकों द्वारा बड़े समारोहपूर्वक यह उद्घोषित एवं उपस्थापित किया जाता है कि 'सब बराबर, सबके अधिकार बराबर, विशेषतः ईश्वरीय स्थान, धर्म, धर्म-शास्त्र, धर्मस्थान, धर्माचरण, धर्मानुष्ठानादि में ईश्वर के बनाये सभी मनुष्यों का समानाधिकार है'—प्रत्यक्षतः यह वाक्य आपात रमणीय प्रतीत होता है। परन्तु मनीषियों द्वारा जरा गहराई से विवेचन करते ही मान्यता की यह प्राचीर बालू की दीवार की तरह ढह जाती है। स्वामी जी ने वेदों में सबके अधिकार-औचित्य की चर्चा बड़े मौलिक, तात्विक एवं अकाट्य ढंग से प्रस्तुत की है जिसे पढ़कर बुद्धिमानों की बुद्धि एवं मनीषियों की मनीषा चमत्कृत हो उठती है; विचारकों की बुद्धि को तात्विक भोजन प्राप्त होता है। मननशील पाठक प्रस्तुत लेख पढ़ कर स्वयं मनन करें, अनुभव करें।]

सर्वस्रष्टा, सर्वशास्ता के वचन शास्त्र हैं, जो भी ऐसे वचन हों, वे ही प्रमाण हैं। जो ऐसे नहीं हैं, उनका प्रमाण्य दुर्घट ही है। यद्यपि सभी देशों तथा सम्प्रदायों का अभिमान ऐसा ही है कि हमारा धर्मग्रंथ परमेश्वर का ही वाक्य है और परमेश्वर के ही किसी अधिकारी द्वारा हमें प्राप्त हुआ है, तथापि थोड़ा सा ही विवेचन करने पर यह विदित होगा कि जहाँ अधिकार की चर्चा न हो, वह परमेश्वर-वचन कैसे कहा जा सकता है ? अधिकारी के भेद से शास्त्रोपदेश में भेद होना चाहिए। एक कर्म या एक ही ज्ञान में सभी अधिकारी नहीं हो सकते। मनुष्यों में, पशुओं में सर्वत्र योग्यता और अधिकार के भेद से कर्म के भेद देखे जाते हैं। अश्व, महिष, गौ, गर्दभ इन सभी के कर्मों में पार्थक्य देखा जाता है। भोजन, पान आदि तो पशु साधारण ही कर्म हैं, परन्तु मनुष्यता के कर्म और मनुष्यता में भी विशिष्ट विशिष्ट समाजों की विशेषता के मूलभूत कर्म और ज्ञान कुछ और ही होते हैं। शास्त्र-च्युतों का जहाँ अधिकार है, उसे शास्त्र कैसे कहा जा सकता है ? जहाँ दूसरों को बलात्कार या छद्म से दूसरे शास्त्रों या धर्मों से हटाकर अपने शास्त्रों या मतों में मिला लेना धर्म बतलाया गया है, वह शास्त्र नहीं कहा जा सकता। एक दूसरे की निंदा, अपनी प्रशंसा करके किसी तरह लोगों को फँसाना ही अपना लक्ष्य रहता है। अपने शास्त्रों और मतों में सभी यही कहते हैं कि "परलोक या परमात्माप्राप्ति का हमारा ही निर्दिष्ट मार्ग है, अन्य मार्गों में बड़े हो विघ्न एवं बाधाएं हैं। कोई किसी देश, किसी

"धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्म्मो धारयते प्रजाः।
यस्याद्धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः॥" —'वेदव्यास'

सभी का प्रवेश हो सकता है। जो भी कोई
मत, किसी जाति का क्यों न हो, इन मतों और शास्त्रों में स्वीकृति मिल जाती है। अधिकार-
इन मतों में प्रवेश करने को तैयार हो, उसे उसी क्षण इनके यहाँ तो अधिकार की पदे-पदे चर्चा देखी
अनधिकार की चर्चा तो इनके यहाँ है ही नहीं, परन्तु वैदिकों में
जाती है।

ब्राह्मण के बाजपेयादि कर्म क्षत्रिय के लिए अग्राह्य हैं और क्षत्रिय के राजसूयादि कर्मों में
ब्राह्मणों का अधिकार नहीं है। यज्ञानधिकारी के कानों में भी वेद-शब्द नहीं पड़ना चाहिए, ऐसा वैदिकों
का आदेश है, फिर किसी को बलात्कार या छद्म से अपने सम्प्रदाय में मिलाना कैसे सम्भव है? वैदिकता
परमेश्वरदत्त है, मनुष्यकृत नहीं। ब्राह्मण-क्षत्रियादि द्विजाति वेदाधिकारियों से भिन्न कोई भी, किसी
तरह भी द्विजाति या वेदाधिकारी नहीं बनाया जा सकता। शैव भरसक वैष्णवों को शैव बना लेते हैं,
वैष्णव भी भरसक शैवों को वैष्णव बना लेते हैं। अतः यहाँ भी शैवत्व, वैष्णवत्व मनुष्याधीन है, परन्तु
वैदिकता या द्विजातित्व कथमपि मनुष्य के अधीन नहीं हो सकता। त्रैदिक-धर्म में ब्राह्मण, क्षत्रिय और
क्षत्रिय ब्राह्मण नहीं बन सकता। फिर बाह्य ब्राह्मणादि बन जायें और वैदिक हो जायें इसकी तो चर्चा
ही क्या? अतः जैसे पशुता, मनुष्यता परमेश्वरदत्त है, वैसे ही द्विजातित्व और वेदाधिकार भी भगवद्दत्त
ही है। हाँ वेद और वेदानुयायी शास्त्रों ने द्विजातियों, एकजातियों (शूद्रों) तथा मनुष्य मात्र के कल्या-
णार्थ जिन उपायों तथा धर्मों का उपदेश किया है, उन्हें अपनी अपनी योग्यता तथा अधिकार के अनुसार
जानकर चलने से मनुष्यमात्र का कल्याण हो सकता है। यही वेदों की उदारता है। अधिकार-अनधिकार
का विवेचन न करके सबका सर्वत्र अधिकार मानना उदारता नहीं, अपितु उच्छृङ्खलता का
पोषण है।

कुछ लोगों का कहना है कि परमेश्वर-निर्मित वस्तु में सबका अधिकार होता है, इसलिए वेद
यदि परमेश्वर-निर्मित हैं, तब तो इनमें सभी का समानाधिकार होना चाहिए। यदि वेद में सबका
अधिकार नहीं है, तो वेद शास्ता का वचन कैसे हो सकता है? यदि भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों में सर्वाधिकार
मान्य हैं, तब तो वे ही शास्ता के वचन समझे जाने चाहिए। परन्तु यह कथन असङ्गत है। यदि परमे-
श्वर-निर्मित वस्तु में सभी का समान अधिकार हो, तो फिर संसार से दायभाग का विचार ही उठ जाना
चाहिए। तब तो हर एक स्त्री हर एक की पत्नी और हर एक पुरुष पत्नी का पति होना भी सम्भव है।
परस्वापहरण नाम की भी कोई वस्तु नहीं रह सकेगी। जब सभी में सबका स्वत्व है, तब या तो सभी
परस्वापहारी हों या सभी इस दोष से रहित ही समझे जायेंगे। परमेश्वर निर्मित भी मुक्ताफल में क्या
काक अधिकारी हो सकता है? इसलिए अधिकार-चर्चा मिटाना उच्छृङ्खलता का ही पोषण है। विश्व-
शास्ता के वेद वचन श्रोता वक्ता का जो धर्म बतलाते हैं, उन धर्मों का उल्लङ्घन करने से दोनों को
ही दण्ड मिलना अनिवार्य है। अतः वेदों में अधिकार की चर्चा उनकी शास्त्रता अर्थात शास्ता के वचन
होने का मूल है।

"पुराण-न्यायमीमांसा-धर्मशास्त्राङ्ग-मिश्रिताः।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश॥ —याज्ञवल्क्य स्मृति उपोद्घात-३

वेद पदार्थ

[स्वतन्त्र भारत में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ लोगों में किन्हीं अंशों में यह जिज्ञासा भी जागृत हुई है कि आखिर 'वेद क्या है ? अथवा वेदों में क्या है ? अनेक वैदिक, अवैदिक, देशी, विदेशी लेखकों ने अपने-अपने ढंग से इस पर विचार भी प्रकट किये हैं जो एकांगी हैं, संकुचित हैं अपूर्ण हैं। वेद पुरुष, धर्म सम्राट् स्वामी श्री करपात्री जी ने यों तो इस विषय पर अनेक वृहद् ग्रंथों का प्रणयन किया है जिनके गहन-गम्भीर अध्ययन करने से ही वेद सम्बन्धी ज्ञान प्राप्ति सम्भव है। परन्तु ग्रंथ के कलेवर को दृष्टि में रखते हुए यहाँ स्वामी जी द्वारा लिखित यह अत्यन्त लघुकाय लेख जिज्ञासुओं की जिज्ञासा निवृत्ति हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।– स०]

यह प्रश्न उठता है कि आखिर वेद है क्या? कुछ लोग ईश्वरीय ज्ञान को ही वेद बतलाते हैं। परन्तु यह ईश्वरीय ज्ञान यदि प्रसिद्ध ऋग्वेदादि से भिन्न है, तो कौन है ? यदि वह अप्रत्यक्ष है, तो वह अस्मदादिकों के किस काम का है और उनकी मान्यता का क्या अर्थ है ? कुछ लोग ज्ञान को ही वेद कहते हैं। परन्तु साधारण ज्ञान से तो समस्त संसार के ही व्यवहार होते हैं। इसमें भी वेद और उसकी मान्यता का कोई प्रश्न नहीं होता। यदि यथार्थ ज्ञान को वेद कहें, तो यथार्थ ज्ञान कौन और कैसे उत्पन्न होता है ? इसी प्रसङ्ग में तो वेद प्रामाण्य पर विचार ही चलता है। कुछ अर्वाचीनों की राय में "विद सत्तायां", "विद ज्ञाने", "विद लाभे" इन तीन धातुओं से 'वेद' शब्द की सिद्धि होती है, इसलिए सत्ता, ज्ञान और लाभ को ही वेद कहना चाहिए। उनका कहना है कि ये ही तीनों पदार्थ सम्पूर्ण विश्व के मूल हैं, अतएव वेदत्रयी से ही विश्व की उत्पत्ति होती है। इनके सिद्धांतों के अनुसार प्राचीन-अर्वाचीन दार्शनिकों ने आचार्य-परम्परा से जिस वेद-राशि को वेद नाम रखा है, वेद-तत्व तो उस से पृथक् ही है।

कुछ लोगों का कहना है कि "हम आश्चर्यचकित होकर देख रहे हैं हिमालय से लेकर कन्या-कुमारी पर्यंत, अटक से कटक तक के सभी विद्वान उपलब्ध ऋग्वेदादि संहिता ग्रंथों को वेद समझ रहे हैं। यही शब्द संग्रह उनकी विशाल दृष्टि में वेद पदार्थ है। उनकी दृष्टि में पुस्तकोपात्त शब्दात्मक मंत्रों से अतिरिक्त ऐसा कोई वेद पदार्थ नहीं है, जो विश्व का उपादान बन सकता हो।" उनके मत में ऋग्यजुःसाम तथा अथर्व के बिना किसी तत्त्व की सृष्टि ही नहीं होती। यही "अनन्ता वै वेदाः" का रहस्य है। "विद्यते-वेत्ति-विन्दति" इस व्युत्पत्ति के अनुसार सत्ता, चेतना और आनन्द ही वेद शब्द से सूचित होते हैं। सत्तोपलब्धि ऋक्, चेतनोपलब्धि यजु, आनन्दोपलब्धि साम है। उनकी राय में प्रसिद्ध

"जगतः स्थिति-कारणं प्राणिनां साक्षात् अभ्युदय-निःश्रेयस-हेतुर्यः।
स धर्मो ब्राह्मणाद्यैर्वर्णिभिराश्रमिभिरनुष्ठीयमानः॥"— आद्य श्री शंकराचार्य जी

वेद में उपपत्ति (विज्ञान)—प्रधान वचन ही श्रुति या वेद है। वही परम प्रमाण हैं। विधायक, निषेधक वेदभाग वेद या श्रुति नहीं, प्रत्युत धर्म-पुस्तक या स्मृति है। इसलिए विधि प्रतिषेधात्मक "अहरहः सन्ध्यामुपासीत" इत्यादि वचन स्मृति के ठहरते हैं। उपपत्ति प्रधान वाक्यों का संग्रह विद्या पुस्तक है, यही वेदशास्त्र कहलाता है। "वेदशास्त्रार्थतत्वज्ञो यत्रतत्राश्रमे वसन्" इस मनु के वेदशास्त्र से विज्ञान शास्त्र ही अभिप्रेत है, "श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयः", "प्रमाणं परमं श्रुतिः" इत्यादि स्थानों में श्रुति शब्द से उपपत्ति वाक्य विज्ञान शास्त्र ही गृहीत है।

परन्तु "शास्त्रगम्य धर्मं है", "कार्य्य-अकार्य्य की व्यवस्था में एकमात्र शास्त्र ही प्रमाण है" इत्यादिवचनों से तो विदित होता है कि शब्दराशि ही शास्त्र है। 'वेदशब्देभ्यः एवादौ', 'शब्द इति चेन्नातः प्रभवात्', 'शास्त्रयोनित्वात्' इत्यादि श्रुतिसूत्रों से भी आचार्य परम्परा से अधीयमान शब्दराशि ही वेद कहा जाता है। 'आपस्तम्ब' भी मन्त्र और ब्राह्मण को ही वेद कहते हैं—'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्।' उदयनाचार्य्य प्रभृति शिष्ट पुरुषों ने भी वेद के यही लक्षण किये हैं—'अनुपलभ्यमानमूलान्तरत्वे सति महाजनपरिगृहीतवाक्यत्वं वेदत्वम्' अर्थात् मूल कोई प्रमाणांतर न मिलता हो और जो शिष्टपरिगृहीत हो, वही वाक्य समूह वेद है। अन्य विद्वानों ने भी कहा है कि शब्द एवं शब्दमूलक अर्थापत्ति आदि प्रमाणों के द्वारा ही जिस का अर्थ अवगत हो, जिसके पढ़ने से पारलौकिक सुख उत्पन्न हो एवं जो जीवों से बना हुआ न हो, वह प्रमाणरूप शब्दराशि ही वेद है। प्रत्यक्षादिसिद्ध अर्थ को प्रतिपादन करने वाले अर्थवाद आदि का भी परमतात्पर्य विध्यर्थ की स्तुति में ही है। अतः विधिवाक्य के बिना उन का यह अर्थ अवगत नहीं हो सकता—"शब्दातिरिक्तं शब्दोपज्जीविप्रमाणातिरिक्तञ्च यत्प्रमाण, तज्जन्यप्रमितिविषयानतिरिक्तार्थको यो यस्तदन्यत्वे सति आमुष्मिकसुखजनकोच्चारणकत्वे सति जन्यज्ञानाजन्यो यः प्रमाणशब्दस्तत्त्वं वेदत्वम्।"

आदित्य वेद हों या सत्, चित्, रस वेद हों, तो उनका प्रमाणकोटि में प्रवेश कैसे हो सकता है, क्यों कि प्रमाणके कारण को ही प्रमाण कहा जा सकता है। अन्यथा अपरिगणित प्रमाण हो जाते हैं। वैसे तो उपासना के लिए शब्द-अर्थ का अभेद सिद्धांत में मान्य है। आदित्यादि में त्रयीदृष्टि भी उपासनार्थ संगत है। जैसे योषित् में अग्नि-बुद्धि, पृथिवी में ऋक्-बुद्धि, अग्नि में सामबुद्धि, वैसे ही वाक्-प्राण में भी ऋक्-साम की बुद्धि उपासनार्थ मान्य है। यदि प्रमाणभूत ऋगादि शब्दराशि से भिन्न चाहे जो कुछ भी वेद है, तो फिर प्रत्यक्षादि से न सिद्ध होने वाले धर्म, ब्रह्म तथा नाना प्रकार के पदार्थ किंवा आदित्यादि का वेद होना आदि ही किस प्रमाण से सिद्ध हो सकता है? जिस शब्दराशि के आधार पर इन सब बातों को सिद्ध किया जाता है, उनका ही प्रामाण्य क्यों और कैसे होगा? क्या यह तर्कशास्त्र की तरह यौक्तिक अर्थ प्रतिपादन करता है? यदि यह मान्य है, तो याग विशेष एवं फल विशेष का कार्यकारणभाव किस युक्ति से सिद्ध होगा? अतएव यही कहना पड़ता है कि आचार्य परम्परा से अधीयमान, शिष्टपरिगृहीत, अनादि, अपौरुषेय मन्त्रब्राह्मणात्मक ऋगादि शब्दराशि ही वेद है।

"धर्मं यो बाधते धर्मो न स धर्मः कुधर्मतत्।
अविरोधी तु यो धर्मः स धर्मो मुनिपुंगव॥" —'वेदव्यास'

सर्व कल्याणकारी वेद

[वेद जैसे गम्भीर विषय पर लिखित अपने इस लेख में स्वामी करपात्री जी महाराज ने बड़े ही मौलिक रूप से वेदों की सर्व-कल्याणकारिता का अत्यन्त प्रभावशाली शब्दों में विवेचन किया है। वैदिक भाषा और सामान्य संस्कृत भाषा के भेद को प्रकट करते हुए संस्कृत भाषा को देवभाषा एवं सामान्य-सर्वसाधारण द्वारा प्रयुक्त संस्कृत भाषा को मानुषी भाषा के रूप में प्रस्तुत किया है। स्वामी जी का कथन है कि—वेदों के उच्चारण श्रवण और अग्निहोत्रादि कर्मों में शुद्ध द्विजाति-पुरुषों को ही अधिकार है, अशौचग्रस्त तथा पतित त्रैवर्णिकों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों) या व्रात्यों का उक्त कार्यों में अधिकार नहीं है। अन्त में स्वामी जी ने सुस्थापित किया है कि 'देश-जाति-पक्षपात के बिना यथाधिकार वेद सर्व कल्याणकारी हैं, वे किसी के पक्षपाती नहीं।'—पाठक स्वयं देखें]

वेदाध्ययन आचार्य्यपूर्वक ही है। जैसे गुरुओं ने अध्ययन किया है, वैसे ही अध्येता अध्ययन करना चाहते हैं। स्वतन्त्र पहला कोई भी वेदों का अध्येता नहीं है। कोई भी वेदों का कर्त्ता निश्चित नहीं है, प्रत्युत वेदों की नित्यता सिद्ध होती है। इस प्रकार वेदों की ही शास्त्रता एवं मान्यता सिद्ध है।

वेद ही सार्वदेशिक कहे जा सकते हैं, क्योंकि वे किसी देश विशेष की भाषा में नहीं हैं। जैसे परमेश्वर सर्वसाधारण है, वैसे ही उसका वेद भी सर्वसाधारण की भाषा में ही है। अन्यान्य धर्मग्रंथ भिन्न-भिन्न देशों की भाषाओं में है। कहा जा सकता है कि वेद भी तो आर्यों की संस्कृत मातृभाषा में ही है, फिर वे ही कैसे सार्वदेशिक हो सकते हैं ? परन्तु यह कहना संगत नहीं है, क्योंकि संस्कृत भाषा देवभाषा है, मानुषी भाषा नहीं। इसीलिए वाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड में संस्कृता वाक् का मानुषी वाक् से पृथक् उल्लेख है। श्री हनुमानजी सोचते हैं कि मुझे अवश्य ही मानुषी वाक् बोलनी चाहिए, दूसरी तरह से महाभागा श्री जानकी को समझाया नहीं जा सकता "अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत् । मया सान्त्वयितुं मनिन्दिता ॥" यदि मैं ब्राह्मण की तरह संस्कृता वाक् बोलूंगा, तो मुझे रावण समझकर श्रीसीतामाता भयभीत होंगी —"यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम् । रावणं मन्य माना मां सीता भीता भविष्यति ॥" द्विजातियों की भी संस्कृत निजी भाषा नहीं किन्तु देवभाषा ही है। ब्राह्मण शब्दशास्त्राभ्यासी होने के कारण ही संस्कृता वाक् बोलते थे। इसीलिए 'नैषध' में यह लिखा है कि भिन्नदेशीय राजाओं के संस्कृत भाषा बोलने के कारण देव-

"उन्नतिं निखिला जीवा धर्मेणैव क्रमादिह ।
विद्धानाः सावधाना लभन्तेऽन्ते परं पदम् ॥" —'तन्त्रशास्त्र'

ताओं की पहिचान नहीं हुई—"सौवर्गवर्गो न नरैरचिह्नि।"

इसके अतिरिक्त वेद देवभाषा संस्कृता वाक् में भी नहीं है, इसीलिए शब्दों के लौकिक तथा वैदिक दो प्रकार के संस्कार होते हैं। लौकिक संस्कार लोक तथा वेद दोनों में ही बराबर हैं। वे व्याकरणादि-सूत्रों के ही अनुसार होते हैं। इसीलिए शाब्दिकों का कहना है—"छन्दसि दृष्टानुविधिः" छन्द में दृष्ट लक्ष्य के अनुसार ही संस्कार मान्य हैं। व्याकरण में वैदिकी प्रक्रिया पृथक् है, अतः वहाँ लक्ष्य का ही प्राधान्य है, संस्कार का नहीं। वैदिक मन्त्र शब्द, स्वर और छन्दों से नियन्त्रित होते हैं, लौकिक नहीं। वैदिक वाक्यों का स्वरूप और अर्थ निरुक्त एवं प्रातिशाख्य से ही नियमित है, संस्कृत वैसी नहीं है अतः वेदभाषा संस्कृतभाषा से भी विलक्षण है। यह दूसरी बात है कि उसके साथ कुछ तुल्यता अधिक मिल जाय। इसीलिए वेद किसी के पक्षपाती नहीं है।

जैसे भगवान् सर्वत्र समान हैं, वैसे ही उनका वैदिक धर्म भी साक्षात् या परम्परया प्राणि-मात्र का परम उपकारी है। परन्तु पूर्वकर्मानुसार अधिकारविशेष निर्णय इनका असाधारण गुण है। जैसे कोई औषधि का किन्हीं यन्त्रों तथा पात्रों में सुपरिणाम और उन्हीं का दूसरे यन्त्रों तथा पात्रों में दुष्परिणाम होता है, वैसे ही उन विचित्रशक्तिसम्पन्न वैदिक शब्दों तथा कुछ कर्मों का कहीं सुपरिणाम और कहीं दुष्परिणाम भी हो जाता है। उसी स्थिति के आधार पर ही वेदों के उच्चारण, श्रवण और अग्निहोत्रादि कर्मों में शुद्ध द्विजाति पुरुषों को ही अधिकार है। अशौचग्रस्त तथा पतित त्रैवर्णिकों या व्रात्यों का उक्त कार्यों में अधिकार नहीं है। अधिकार-विवेचन में पक्षपातशून्य केवल हितकामना से ही नियम हैं। राजसूय यज्ञ में केवल क्षत्रिय का अधिकार है, ब्राह्मण-वैश्य का नहीं। वैसे ही वैश्यस्तोम में केवल वैश्य का ही अधिकार है। इसी तरह किसी में रथकार का ही और किसी में स्थपति का ही अधिकार है। ब्राह्मण को मद्यबिन्दुपान में ही मरणांत प्रायश्चित है, औरों को वैसा नहीं। ब्राह्मण को सर्वत्याग, क्षत्रिय को साम्राज्य, गृहस्थ को द्रव्यदान में पुण्य, सर्वमान्य सन्यासी को द्रव्यदान में पाप, स्वधर्मबहिर्मुख ब्राह्मण को भी नरक, स्वधर्मनिष्ठ अन्त्यज को भी दिव्यलोक प्राप्ति, यह सब केवल वस्तुस्थिति का अनुसरण है। माता शिशु के हाथ से ईख छीन लेती है, परन्तु मिसरी दे देती है। क्या यहाँ द्वेष है ?

कहा जा सकता है कि श्रवणादि के अनधिकारियों को श्रवणादि द्वारा वेद अनुपकारक होने से वेदों में विषमता आ जायेगी। परन्तु यह ठीक नहीं है क्योंकि धनुष आदि के धारण करने में असमर्थों के लिये धनुष-धारण का निषेध और कटु औषधि से भीरु लोगों के लिए उन औषधों का निषेध जैसे विषमता का मूल नहीं होता, वैसे ही अनधिकारियों के लिए वेद तथा तदुक्त कर्मों का निषेध अनुचित नहीं है। कहा जा सकता है कि जैसे योग्यता-सम्पादन के अनन्तर बालकों का भी अधिकार है, तो वैसे

"एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति ॥ —'मनुस्मृति'

ही स्वधर्मानुष्ठान द्वारा जन्मान्तर में द्विजत्व-सम्पादन से यहाँ भी अधिकार हो ही जाता है। परन्तु जैसे जड़, अन्ध, षण्ढ, बधिर, उन्मत्त, मूक आदिकों में श्रवणादि का लौकिक सामर्थ्य नहीं है, वैसे ही कुछ असामर्थ्य शास्त्र से ही गम्य है। जैसे लौकिक सामर्थ्य सबको नहीं है, वैसे ही अलौकिक सामर्थ्य भी सबको नहीं है। पुराणों द्वारा वेदार्थ-ज्ञान, शम-दमादि मानव सामान्य धर्मों तथा सर्वशास्त्रफल भगवद्भक्ति और ज्ञान में मनुष्यमात्र का अधिकार है और उसी के द्वारा सबका परमकल्याण भी होता है। भगवन्नामादि वैदिक धर्म से मनुष्यों की तो कौन चलाये, गृध्र, बन्दर, भल्लूक तक को परम सद्गति हुई और होती है "पाई न केहि गति पतित-पावन राम भज सुनु शठ मना।" अतः स्पष्ट है कि देश-जातिपक्षपात के बिना यथाधिकार वेद सर्वकल्याणकारी है।

[सन्ध्या, सूर्यार्घ्य, गायत्रीजप, श्राद्ध-तर्पण आदि वर्णाश्रमानुसार कर्म-धर्मों का पालन करते हुए, भगवान के नाम का जप या कीर्तन करने वाला प्राणी परमकृतार्थ होता है। नाम या मन्त्र का जप, भगवान का ध्यान, उनके नाम-स्वरूप व गुणों का महात्म्य वर्णन करते हुए वेद-उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि सद्ग्रन्थों का अधिकारानुसार अध्ययन करना—यही प्राणियों के परमकल्याण का मार्ग है।]

—'स्वामी करपात्री जी'

"वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ॥ —'मनुस्मृति'

संस्कृति

[आजकल संस्कृति शब्द के साथ बड़ा खिलवाड़ हो रहा है। विभिन्न विचारकों ने पृथक्-पृथक् परिभाषाएं की हैं संस्कृति की, परन्तु विश्लेषण करने से प्रायः सभी एकांगी ठहरती हैं, स्वामी श्री करपात्री जी ने वैदिक शास्त्रीय आधार पर संस्कृति की बड़ी सुन्दर सर्व ग्राह्य रूप सर्वमान्य, तर्कयुक्त एवं मौलिक व्याख्या करते हुये निरूपण किया है कि भारतीय संस्कृति सनातन है, अनादि है, अनन्त है। अनादि अपौरूषेय वेद एवं तदाधारित शास्त्रों के अनुसार आचार, विचार, परम्परा को संस्कृति, सभ्यता मानना ही संगत है।]

कहा जाता है कि सारे संसार में आजकल सांस्कृतिक संघर्ष चल रहा है। सभी अपनी संस्कृति की रक्षा तथा उसके प्रचार और दूसरे की संस्कृति का नाश करने पर तुले हैं। संस्कृति के नाम पर भीषण जनसंहार हो रहा है। पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में संस्कृति की चर्चा बराबर चलती रहती है। विचारशील विद्वान् भारतीय संस्कृति को ही सर्वोच्च बतलाते हैं। पर कहीं यह नहीं बतलाया जाता कि उस संस्कृति का आधार क्या है और उसका स्वरूप किससे जाना जा सकता है। इस पर विचार करने के पहले एक बात ध्यान में रखना आवश्यक है। आजकल की पद्धति के अनुसार शब्दों के अर्थ समय-समय पर कई कारणों से बदलते रहते हैं। यदि यही बात है तो फिर मतभेद भी अनिवार्य है। परन्तु अपने यहाँ दूसरा ही सिद्धांत है। वैदिकों के मत में शब्द नित्य हैं। और उनका अर्थ के साथ सम्बन्ध भी नित्य है। अतएव, उनमें अनिश्चियता सन्देह तथा विवाद के लिए कोई स्थान ही नहीं है इस तरह 'संस्कृति' और 'सभ्यता' भी दोनों ही निश्चित शब्द हैं और उनका अर्थ भी निश्चित है। 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'कृञ्' धातु से क्तिन्' प्रत्यय होने पर 'संस्कृति' शब्द निष्पन्न होता है जिसका अर्थ होता है, 'सम्यक् शोभन कृति' और इसी संस्कृति के भीतर 'सभ्यता' भी आ जाती है। खान में उत्पन्न होने वाले हीरक और माणिक्य में संस्कार द्वारा उनकी दिव्य शोभा बढ़ायी जाती है, वैसे ही अविद्या तत्का-र्यात्मक प्रपञ्चनिमग्न स्वभावशुद्ध अन्तरात्मा की शोभा संस्कार द्वारा व्यक्त की जाती है। तथाच आत्मा को प्रकृति के निम्न स्तरों से मुक्त करके क्रमेण ऊपर के स्तरों से सम्बन्धित करने या प्रकृति के सब स्तरों से मुक्त करके उसे स्वाभाविक अनन्त आनन्द साम्राज्य सिंहासन पर समासीन कराने में उपयुक्त जो कृतियाँ, वही 'संस्कृति' शब्द से कही जा सकती हैं अर्थात् सांसारिक निम्न स्तर की सीमाओं

"धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति
धर्मेण पापमपनुदति धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद् धर्मं परमं वदन्ति।"—'नारायणोपनिषद'

में आबद्ध आत्मा के उत्थानानुकूल जो कृति है, वही 'संस्कृति' है। व्यापक दृष्टि से कह सकते हैं कि लौकिक, पारलौकिक, नैतिक, धार्मिक, वैयक्तिक, सामूहिक अभ्युत्थान के अनुकूल देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहङ्कारों की शोभन हलचल या रहन सहन ही 'संस्कृति' है। अतः सभ्यता भी संस्कृति का एक देश होने के कारण उसी में अन्तर्भूत समझी जानी चाहिए, क्योंकि सभा में वही साधु – अच्छा समझा जा सकता है, जिसके संयत और शोभन व्यवहार होंगे। किनके सन्निधान में, कहाँ, किससे कैसे बोलें, कैसे बैठें इस विषय में जो कुशल है, वही 'सभ्य' है। अब यह प्रश्न उठता है कि सब प्रकार की कृतियों (कर्मों) का सम्यक्त्व, असम्यक्त्व और सौष्ठव असौष्ठव कैसे जाना जाय और किस कसौटी पर उनकी भलाई बुराई की परख की जाय, जिससे कि उन उन कर्मों या रहन सहन, आचार विचारों को आत्मोत्थान के अनुकूल मानकर उन्हें संस्कृति कहा जाय ?

इसका मोटा एवं अविप्रतिपन्न उत्तर यही है कि जिस राष्ट्र, जाति या सम्प्रदाय में जो महापुरुष या ग्रन्थ प्रायेण सर्वमान्य हुए हों, उन्हीं के आधार और उपदेश को ही कसौटी मानना चाहिए। वैदिकों में सब प्रकार के कर्मों का सम्यक्त्व वेद शास्त्र की कसौटी पर परखा जाता है। अतएव, वेद शास्त्रपरीक्षित तदनुसारी रहन सहन, आचार विचार ही वैदिक संस्कृति है। ईसाई, मुसलमानों के यहाँ भी उनके महापुरुष या धर्म ग्रंथों के आधार पर ही उनके रहन सहन, आचार विचार का सौष्ठव, सम्यक्त्व निश्चित किया जाता है। उनके कर्मों और कृतियों की भी भलाई बुराई की कसौटी उनके धर्मग्रंथ में ही हैं। यह अवश्य है कि भिन्न भिन्न जातियों एवं समाजों की कुछ रूढ़ियों का भी संस्कृति के ही भीतर समावेश समझा जाने लगता है। इसीलिए कहा जाता है कि आज कोई भी संस्कृति अछूती नहीं बची है, संस्कृतियों में साङ्कर्य्य फैल गया है, बहुत से आचार-विचार, रहन-सहन हिन्दुओं के मुसलमानों में और उनके हिन्दुओं में आ गये हैं। भाषा, साहित्य और व्यवहारों के सङ्घर्षों से कुछ दिन संस्कृतियों का सङ्घर्ष और फिर किसी का किसी में साङ्कर्य्य एवं किसी संस्कृति का नाश तक हो जाता है। अतएव, 'हमारी संस्कृति खतरे में है' इस प्रकार की आवाजें आ रही हैं। ऐसी दशा में संस्कृति का शुद्ध स्वरूप उन उन जातियों एवं सम्प्रदायों के निश्चित धर्मग्रंथों के ही आधार पर निश्चित किया जा सकता है। यद्यपि सभी जाति और देश के महापुरुषों ने देश, काल, अवस्था और प्रकृतियों को सोच समझ कर उनके आत्मोत्थान के लिए उपयुक्त ही रहन सहन, आचार विचार नियुक्त किया है, तथापि सूक्ष्मता के साथ देखें तो मालूम होता है कि प्राकृत पाशविक रहन सहन को नियमों से परिष्कृत कर देने पर ही संस्कृति स्थिति होती है। देश, काल, व्यक्ति और उनकी प्रकृतियाँ विचित्र हैं। उनको जानकर प्राकृत स्वाभाविक चेष्टाओं में कितना नियमन करना युक्त है, यह अल्पज्ञ जीवों को निर्णीत होना दुःशक ही है। यद्यपि चित्तसत्त्व सर्वार्थ प्रकाशन में समर्थ है, तथापि राजस, तामस

प्राप्नुवन्ति यतः स्वर्गो मोक्षौ धर्मपरायणाः।
मानवा मुनिभिर्नूनं स धर्म इति कथ्यते ॥'' –'तन्त्र शास्त्र'

भावों के उद्भव से ज्ञान शक्ति कुण्ठित रहती है। तपस्या, योगादि सद्धर्मों के अनुष्ठान से राजस तामस भावों के दूर होने से निरावरण विशुद्ध सत्त्व होने से ज्ञान शक्ति विकसित होती है। फिर भी जबकि अविशुद्धसत्वप्रधान अविद्या जीव की उपाधि है अथवा तमःप्रकृति समुद्भूत पञ्चभूतों में ही अन्तकरण का उद्भव है, तब पूर्ण ज्ञानशक्ति का विकास जीव में होना कठिन है। यदि कोई अपने प्रधान ग्रंथ के रचयिता और संस्कृति के निर्णायक को ईश्वर कहे, तो दूसरे भी अपने ग्रंथकार या संस्कृति संस्थापक को वही कह सकते हैं। फिर जो अभी प्रयोगशाला में किसी प्रयोग का अनुभव कर रहे हैं, उनके निर्धारित नियमों से संस्कृति सभ्यता का निर्णय कैसे हो सकता है? यदि सभी संस्कृतियाँ ईश्वर से प्रतिष्ठापित हों, तो फिर उनमें आकाश पाताल का अन्तर क्यों देखा जाता है? देश काल अधिकारी के भेद से यदि संस्कृतियों की व्यवस्था हो, तब तो बात दूसरी है। फिर जहाँ एक सिद्धांत दूसरे सिद्धांत को मूल से खोद फेंकना चाहता है, उसे देश का सर्वनाशक समझता है, वहाँ समन्वय की आशा को दुराशा के अतिरिक्त क्या कहा जा सकता है? अतः अनादि वेद शास्त्र एवं तदनुयायी धारणा ध्यान समाधिसम्पन्न महर्षियों के सिद्धांत पर ही शुद्ध सर्वोपकारक संस्कृति स्थिति होती है। अतएव बहुत सी संस्कृतियां और सभ्यताएं उत्पन्न होकर नष्ट हो गयीं और बहुत सी उत्पन्न हो रही हैं। परन्तु अपने यहां परमेश्वर और जीव के समान ही अनादिसिद्धि वेद शास्त्र के अनुसार लोक परलोक के नैतिक तथा धार्मिक अभ्युदय के अनुकूल सामूहिक, वैयक्तिक देहादि के रहन सहन, आचार विचार ही संस्कृति हैं। इसीलिए वह इतनी व्यापक है कि उसमें सब प्रकार की सभी हलचलों पर नियन्त्रण किया है। अतएव यहाँ सामाजिक, वैयक्तिक, नैतिक और धार्मिक आचारों के क्षेत्र अत्यन्त भिन्न नहीं हैं, किंतु सब का ही सब के साथ सम्बन्ध है, क्योंकि सभी व्यापारों में पद पद पर पुण्य पाप, आचार विचार की व्यवस्था है। वस्तुतः मानव जातिमात्र के लिए वैदिक संस्कृति कल्याणकारिणी है, क्योंकि इसमें अधिकार की चर्चा बहुत है। सभी प्राणियों को सुविधापूर्वक लौकिक, पारलौकिक अभ्युदय एवं निःश्रेयस के लिए अवकाश रखा गया है।

विचार करने से मालूम होगा कि संस्कृति या सभ्यता के भिन्न-भिन्न अर्थ उपर्युक्त अर्थ में अन्तर्भूत हो जाते हैं। यदि ज्ञानवृद्धि सभ्यता है या नागरिकता सभ्यता है, तो यहाँ भी तात्पर्य यथार्थ ज्ञान और योग्य शिक्षा से ही है। परन्तु ज्ञान की यथार्थता और शिक्षा की योग्यता जानने के लिए यदि कसौटी की अपेक्षा पड़ेगी, तो प्रथम भिन्न भिन्न देश के महापुरुषों के ग्रंथ और फिर अन्त में वेद की ही शरण लेनी होगी। लौकिक उन्नति ही यदि सभ्यता या संस्कृति मानी जाय, तो भी यह अवश्य ध्यान रखना होगा कि ऐसी लौकिक उन्नति परिणाम में सर्वसंहारिणी न हो। जो आगन्तुक उन्नति रही सही पुरानी उन्नति का भी नाश कर डाले, वह उन्नति नहीं अर्थात अनर्था-

धर्मेण धार्यते पृथ्वी धर्मेण तपते रविः।
धर्मेण वहति वायुः सर्वं धर्मे प्रतिष्ठितम् ॥ —महाभारत

नुबन्ध, अधर्मानुबन्ध, निरनुबन्ध अर्थ 'अर्थ' नहीं, किन्तु वह तो 'अर्थाभास' ही है। धर्मानुबन्ध, अर्थानुबन्ध अर्थ ही यथार्थ अर्थ है, वही स्थिर तात्विक उन्नति है। देश, काल, परिस्थितियों का प्रभाव अवश्य संस्कृति पर पड़ता है, परन्तु भिन्न भिन्न कृतियों के सम्यक्त्व असम्यक्त्व का निर्णय इतने ही से नहीं होता। किसी परिस्थिति में कितने ही प्रमादी पुरुष अपनी दृष्टि से आत्मसंयम न कर सकने के कारण अनुचित कृतियों को भी उचित मान लेते हैं। अतः किसी भी देश के काल, जाति, परिस्थिति में वही कृति आचार विचार, रहन सहन संस्कृति हो सकती है, जो सम्यक् समीचीन, शोभन या साध्वी है और जिसका लोक परलोक दृष्टि से दुष्परिणाम नहीं है। अभ्युदय और निःश्रेयस के प्रतिकूल न होकर जो अनुकूल ही हो, वही कृति 'संस्कृति' है। देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहङ्कार की समस्त चेष्टाओं, कृतियों की भलाई बुराई तथा उनके तात्कालिक या कालांतरभावी सुपरिणाम या दुष्परिणाम का बोध जीवों के लिए दुष्कर है, क्योंकि उनमें कुछ न कुछ भ्रम, प्रमाद, विप्रलिप्सा, करणापाटव आदि दोष होते ही हैं। इसलिए उनसे निर्णय नहीं हो सकता। रही ईश्वर की बात, तो वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान अवश्य है, उसको किसी भी कृति के सुपरिणाम दुष्परिणाम, सम्यक्त्व असम्यक्त्व के निर्णय में सन्देह नहीं। परन्तु किस शास्त्र या संस्कृति के निर्माता या द्रष्टा परमेश्वर हैं इसका निर्णय पूर्वकथनानुसार अत्यन्त कठिन है। अतः ईश्वर के समान ही अनादि, अपौरुषेय वेदों से ही किसी भी देश, काल परिस्थिति में किन्हीं भी कर्मों की भलाई बुराई, सुपरिणाम दुष्परिणाम का निर्णय करना युक्त है।

दूसरी दृष्टि से भी देखें, तो विदित होगा कि यदि शासक या माता पिता अपनी प्रजा और पुत्र को असत्कर्मों या कृतियों का निषेध करके सम्यक् सत्कर्मों या सत्कृतियों में प्रवृत्त न करें, तो यह उनका दोष अवश्य समझा जायेगा। ऐसी स्थिति में जब यह जगत् केवल अनियन्त्रित स्वतन्त्र जड़ प्रकृति का विकास नहीं है, किन्तु सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्वनियन्ता एवं सब के माता पिता भगवान के नियन्त्रण में ही है, तब उनको अवश्य ही सृष्टि के जीवों के लिए ऐहिक, आमुष्मिक अभ्युदय और निःश्रेयस के उपयुक्त सम्यक् सत्कर्मों या कृतियों का उपदेश करना चाहिये। जितनी अनेक संस्कृतियाँ प्रसिद्ध हैं, सबका काल और इतिवृत्त है। कोई डेढ़ हजार वर्ष की, कोई दो हजार वर्ष की मानी जाती है। यदि उन्हीं को परमेश्वर निर्दिष्ट संस्कृति मानें, तो यह सन्देह अवश्य होगा कि उससे पहले के जीवों के उद्धार का ध्यान परमेश्वर ने क्यों नहीं रखा ? यह तो विषमता होगी कि डेढ़ दो हजार वर्ष के जीवों के कल्याण का मार्ग बतलाया गया, पुराने लोगों के लिए नहीं। जब सभी संस्कृतियों के पीछे एक धर्मग्रंथ मानना पड़ता है, जैसे इस्लाम संस्कृति के पीछे कुरान, ईसाई संस्कृति के पीछे बाइबिल, तथा वैदिक संस्कृति के पीछे वेद को मानना ही चाहिए। जब आधु-

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मं न त्यजामि मा नो धर्मो हतोऽवधीत्॥ — महाभारत

निक भी वेद को सबसे प्रचीन ग्रंथ मानते हैं और उसकी सादिता में कोई प्रमाण और युक्ति नहीं है तथा अनादिता में कोई बाधक प्रमाण नहीं है, तब उसको अनादि एवं अपौरुषेय मानने में क्या आपत्ति है ? अतः भगवान के निःश्वास और विज्ञानभूत, नित्य, निर्दोष वेदों के अनुसार ऐहिक आमुष्मिक अभ्युदय और निःश्रेयस में अनुकूल, देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहङ्कार के सम्यक् सुपरिणामवाले सत्कर्म ही 'संस्कृति' हैं। इन्हीं से आत्मा का संस्कार होता है। और वह उपद्रवों, अनर्थों से उन्मुक्त होकर स्वस्वरूपभूत परमानन्द साम्राज्य सिंहासन पर समासीन होता है। आर्थिक, नैतिक व्यवसायिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, वैयक्तिक, आचार विचार, रहन सहन वेदादिशास्त्र के अनुकूल या अविरुद्ध होकर संस्कृति के भीतर संगृहीत हो जाता है। ऐसी दशा में वेद और उनके आधार पर निर्मित शास्त्र ही हिन्दू संस्कृति के आधार समझे जा सकते हैं और उन्हीं से उसके स्वरूप का निर्णय हो सकता है।

कई लोग कहते हैं 'कि संस्कृति वह दृष्टि है जिस से समुदाय विशेष जीवन-समस्याओं पर दृष्टिनिक्षेप करता है। समुदाय की वर्तमान और पुरातन अनुभूतियों के संस्कारों के अनुरूप उसका दृष्टिकोण होता है। जो आज की अनुभूति है, वह कल संस्कार के रूप में अवशिष्ट रह जायेगी। कल की अनुभूति सम्भवतः दूसरे ढङ्ग की होगी। इसलिए दृष्टिकोण बदल भी जायेगा। लकड़ी पत्थर के समान संस्कृति निश्चल, एकरस नहीं, वह तो बदलती रहती है। अतएव राष्ट्र की संस्कृति का नाम लेते समय-काल की भी चर्चा आवश्यक है। परन्तु आज से ६०० वर्ष पहले की संस्कृति और आज की संस्कृति एक दूसरे से भिन्न है।' इन उक्तियों पर विचार करने से विदित होगा कि संस्कृति की यह कितनी अपूर्ण परिभाषा है। अनुभूतियाँ भ्रम और प्रमा द्विविध होती हैं और दोनों से ही संस्कार भी उत्पन्न होते हैं, फिर सबको ही संस्कृति क्यों न कहा जाये ? देश, काल, परिस्थिति के अनुसार धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक घटनाओं से तदनुकूल सुख-दुःख की विविध अवस्थाएँ हो सकती हैं। उन-उन परिस्थितियों के भी सम्यक्-असम्यक् दूषणभूत, भूषणभूत, प्रमारूप, भ्रमरूप अनुभूतियाँ तदनुसारिणी ही संस्कृतियाँ भी होती रहेंगी। ऐसी स्थिति में संस्कृति की रक्षा आदि का प्रश्न ही नहीं उठता। अतः कोई सम्यक्ता, असम्यक्ता, दूषणता, भूषणता, भ्रम-प्रमा की कसौटी तो होनी चाहिये। वह प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम को छोड़कर और व्यावहारिक नहीं हो सकती।

कुछ लोग 'प्राकृतिक विधान के अनुरूप संस्कार की हुई पद्धति को संस्कृति' कहते हैं। परन्तु यहाँ प्रश्न होता है कि प्राकृतिक विधान क्या है ? यदि वेदादि शास्त्र को प्राकृतिक विधान कहें, तो यद्यपि वह सिद्धान्ततः अभिमत हो सकता है, तथापि प्रतिपन्नों के लिये ये शब्द अवश्य भ्रामक हैं। प्रकृति द्वारा निर्दिष्ट विधान प्रयत्न के बिना ही सब पर लागू होते हैं। पर वेद-शास्त्रों पर विश्वास, उनका अध्ययन, तदनुसार आचरण आदि तो दृढ़प्रयत्नसाध्य होते हैं। भोजन, पान व्यवायादि स्वाभा-

धर्मः श्रेयः समुद्दिष्टं श्रेयोऽभ्युदयलक्षणम्।
स तु पञ्चविधः प्रोक्तो वेदमूलः सनातनः ॥

विक प्राकृतिक विधान समझे जाते हैं, वे ही सर्वत्र सुलभ भी हैं। इसी तरह संस्कार की हुई पद्धति 'संस्कृति है' यह अंश भी अस्पष्ट है। संस्कार की हुई पद्धति संस्कृत कही जा सकती है, स्वयं संस्कृति कैसे बन सकती है? संस्कार और संस्कृति में एकार्थता स्पष्ट प्रतीत होती है। 'संस्कृति अनुभवजन्य ज्ञान के और सभ्यता बुद्धिजन्य ज्ञान के आधार पर निर्भर है' यह भी बात असङ्गत है, कारण अनुभव, बुद्धि और ज्ञान ये पर्यायवाचक शब्द हैं। इनके आधार पर विभेद-सिद्धि अशक्य है।

कुछ लोगों ने 'परम्परागत अनुस्यूत संस्कार को संस्कृति कहा है।' यदि यह प्रामाणिक वैदिक परम्परा है, तो ठीक है, अन्यथा फिर तो 'परम्परा' विशेषण की ही क्या आवश्यकता? इसी तरह कुछ लोग 'वस्तुतः विभिन्न संस्कृतियों की खिचड़ी को ही भारतीय संस्कृति कहते हैं और उसको 'हिन्दू-संस्कृति' नाम से बोधित करना चाहते हैं।' जैसे भारतीय दर्शन से सांख्य, योग, वेदान्त आदि दर्शन ही अभिप्रेत होते हैं, वैसे ही विशेषता भारतीय संस्कृति से हिन्दू-संस्कृति ही परिलक्षित होती है। आध्यात्मिकता, धार्मिकता, त्यागभावना, पुनर्जन्म-विश्वास आदि हिन्दू-संस्कृति की विशेषताएँ हैं। वस्तुतः मिश्रित या दूषित संस्कृति ही यदि भारतीय संस्कृति मान ली जाये, तब उपर्युक्त बातें अवश्य ठीक हो सकती हैं। प्रमाण कसौटी पर कसी जाने पर तो दूषण-भूषण संस्कृति-विकृति का स्पष्ट भेद व्यक्त होना ही गुण है। इस तरह की और भी परिभाषाएँ हैं।

संस्कृति के सम्बन्ध में कुछ सज्जन कहते हैं कि "बहुसंख्यक जनता या जाति एक प्रकार के ही संस्कारों से परिप्लुत रहती है। एक जैसे संस्कारों के मूर्तरूप को ही संस्कृति कहते हैं, जिसकी व्यञ्जना वेश, भाषा, आचार, व्यवहार तथा रीति-रिवाज आदि से होती है। यह संस्कार परम्परा रूप से आते हैं।" उनका यह पक्ष यहाँ तक ठीक हो सकता है, परन्तु आगे यह जो कहा जाता है कि "धर्म, मजहब और मत अनेक हो सकते हैं, पर संस्कृति एक देश की एक ही हो सकती है।" इस मत में केवल पुरुषों के नाम, भाषा और साधारण बाह्य व्यवहार ही संस्कृतिपदवाच्य हो सकते हैं। परन्तु यह अप्रामाणिक है। स्पष्ट कहा जा चुका है कि सभी आचार या संस्कार संस्कृति पद का अर्थ नहीं हो सकते, किन्तु प्रामाणिक, सम्यक् भूषणभूत आचार या संस्कार ही संस्कृतिपदवाच्य हैं। विद्या और आचार की शिथि-लता से होने वाले अपव्यवहार या अपसंस्कार संस्कृतिपदव्यपदेश्य नहीं हो सकते। "यस्मिन् देशे य आचारो व्यवहारः कुलस्थिति। तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः॥" इस वचन के अनुसार देशाचार, देशव्यवहार, कुलाचार की रक्षा की व्यवस्था है। इन आचार, व्यवहारों में भी जो शास्त्रानुसारी हैं, वे धर्म हैं, जो विरुद्ध हैं व अधर्म ही हैं। एक देश में रहते हुये भी यदि लोगों के धर्म विभिन्न हैं, धर्मग्रंथ विभिन्न हैं तथा मूल धर्मग्रंथ की भाषाएँ भिन्न हैं, उनके देवताओं के नाम भिन्न हैं, तब तो अवश्य उनके नामों, व्यवहारों, भाषाओं पर उनका प्रभाव पड़ेगा ही। अफ्रीका, अमेरिका के रहने

अस्य सम्यगनुष्ठानात् स्वर्गोमोक्षश्च जायते।
इहलोके सुखैश्वर्यमतुलं च खगाधिप॥ —भविष्यपुराण

वाले हिन्दू को भी अपने धर्म, अवतारों, देवताओं तथा ग्रंथों से स्नेह होगा, वह तदनुसार ही व्यवहार करेगा, नाम रखेगा, तदनुसारिणी भाषा को महत्त्व देगा। भले ही व्यवहार के लिये वह वहाँ की भाषा बोले, परन्तु घर में अपनी ही भाषा बोलेगा। फिर यदि उन लोगों से उपर्युक्त व्यवहार छोड़ने को कहा जायेगा, तो क्या यह उन्हें अच्छा लगेगा? **"आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्"** अर्थात् जो अपने को प्रतिकूल हो, वैसा दूसरों के साथ भी नहीं वर्तना चाहिए। अन्ताराष्ट्रिय नियम है कि किसी भी राष्ट्र में अल्पसंख्यकों को अपनी संस्कृति और धर्मरक्षा की स्वतन्त्रता होती है। फिर कोई भी देश अपने यहाँ के अल्पसंख्यकों पर धर्म, संस्कृति लादने का प्रयत्न कैसे करेगा?

कुछ सज्जन कहते हैं कि "जिस से मनुष्य का जीवन सुधरे, यह शिक्षा-दीक्षा संस्कृति है। किसी देश एवं जाति के पुरातन अभ्यासों, स्वभावों (आदतों), प्रथाओं, रहन-सहन आदि को उस देश की संस्कृति कहा जाता है। उसी से उस देश का चरित्र निर्माण होता है। मानवात्मा को उन्नत करना सभी संस्कृतियों का लक्ष्य है। बहुत संस्कृतियाँ सदृश भी होती हैं, परन्तु देश, काल, पात्र की परिस्थितियों एवं संस्कृतियों के प्रेरकों, आदर्श की विभिन्न अपेक्षाओं के कारण उनमें विभिन्नताएँ भी रहती हैं।" इस पक्ष में भी प्रमाणों के आधार पर यदि यह विभिन्नताएं सङ्गत हैं, तब तो ठीक ही है, अन्यथा उतने अंशों में उन्हें विकृति ही समझना चाहिये। **"गार्भैर्होमैर्जातकर्म चौडामौञ्जीनिबन्धनैः। बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते॥ स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः। महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः॥"** अर्थात् गर्भ को पवित्र करने वाले होम, जातकर्म, चूड़ाकर्म, मौञ्जी-बन्धन आदि संस्कारों से द्विजों के बैजिक और गार्भिक दोष नष्ट हो जाते हैं। स्वाध्याय, व्रत, होम, वेदत्रयी का अध्ययन एवं तदनुकूल कर्म, देव, ऋषि, पितृतर्पण, प्रजोत्पादन, पञ्चमहायज्ञ तथा ज्योतिष्टोमादि यज्ञों के द्वारा शरीर ब्रह्मप्राप्ति के योग्य बनाया जाता है। इन वचनों से सिद्ध होता है कि जिन कर्मों से दोषों का दूरीकरण और गुणों का आधान हो, वही संस्कार या संस्कृति है। **"संस्कारो संस्कार्यस्य गुणाधानेन वा स्याद्दोषापनयनेन वा"** (शां० भा०) इस दृष्टि से भी देह इन्द्रिय, प्राण, मन, बुद्धि, अहंकार, अन्तरात्मा को निर्दोष बनाकर भूषित, अलङ्कृत एवं गुणवान् बनाना संस्कार है। प्रकृतिबद्ध आत्मा को निम्न स्तरों से उठाकर मुक्त, अनन्त चिदात्मपद पर प्रतिष्ठित करना संस्कृति है।

कई लोग वेष-भूषा, बोलचाल को सभ्यता कहते हैं। अन्तःकरण, अन्तरात्मा के दोषों को दूर कर भूषित करने को संस्कृति कहते हैं और वह संस्कृति एक ही हो सकती है, वह है मानव संस्कृति। देश, जाति, सम्प्रदाय तथा धर्म के भेद से उसका भेद नहीं हो सकता। यहाँ भी यदि दोष और भूषण का स्वरूपज्ञान और दोष दूरीकरण, भूषणाधान के प्रकार को किसी मुख्य प्रमाण के आधार पर समझें, तो अवश्य निर्णय ठीक हो सकता है। यदि प्रत्यक्षानुमान से अतिरिक्त अपौरुषेय वेद ही उक्त प्रमाण

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम्॥

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥ —महाभारत

है, तब तो अवश्य ही वैदिक संस्कृति को ही मानव संस्कृति भी कह लिया जाये तो कोई आपत्ति नहीं। यदि प्रमाण पृथक् पृथक् होंगे और उनके द्वारा भूषण, भूषण की परिभाषा और निराकरण, आधान के प्रकार भिन्न भिन्न होंगे, तब तो अवश्य ही संस्कृतियाँ भिन्न भिन्न सिद्ध होंगी। अतः वस्तुतः वैदिक संस्कृति के ही मुख्य संस्कृति होने पर भी जब तक विभिन्न धर्म, दर्शन और प्रमाणग्रंथ विद्यमान हैं, तब तक विभिन्न वेष-भूषा, विभिन्न संस्कार आदि का होना अनिवार्य ही है।

कुछ लोगों के सिद्धान्तानुसार आचार, विचार मुख्यरूप से यही दो वस्तुएँ संस्कृति हैं। विचार के बिना आचार निष्प्राण रहता है, आचार के बिना विचार मनोराज्यमात्र अकिञ्चित्कर होता है। वस्तुतः संक्षेप तथा विस्तार इन दो प्रकारों से वस्तुतत्त्व का वर्णन किया जाता है। यदि संक्षेप से कहें, तब तो सम्यक् भूषणभूत शास्त्रोक्त कृति (हलचल) संस्कृति है। लौकिक, पारलौकिक अभ्युदय एवं निःश्रेयस की हेतुभूत देहेन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहंकार की शास्त्रप्रोक्त, शास्त्राविरुद्ध सम्यक् भूषणभूत कृति, चेष्टा, व्यापार हलचल संस्कृति है। शास्त्रोक्त आचार, विचार भी फलतः उपर्युक्त वस्तु ही ठहरता है। उसी को अधिक विस्तार से कहना पड़े तो कह सकते हैं कि धर्म, दर्शन इतिहास, वेष-भाषा, भूषा, कला तथा सदाचार (रीति-रिवाज) इन विभिन्न स्वरूपों में संस्कृति का वर्णन किया जा सकता है। परन्तु सभी में सम्यक्ता-असम्यक्ता भूषणता-दूषणता की कसौटी प्रमाण ही है। जो प्रत्यक्षानुमानगम्य है, उसकी सम्यकता, प्रत्यक्षानुमानगम्य हो सकती हैं। परन्तु प्रत्यक्षानुमानगम्य विषयों की सम्यक्ता, दूषणता आदि अपौरुषेय वेद एवं तन्मूलक आप्त शास्त्रों से गम्य होती है। यद्यपि अनेक देशों और जातियों में अपने अपने ढङ्ग के प्रत्यक्षानुमान तथा पौरुषेय ग्रन्थ प्रमाण माने जाते हैं, तदनुसार ही उनके धर्म आदि का निर्णय होता है, फिर भी भारतीयों, हिन्दुओं में पौरुषेय ग्रन्थों में पुरुषाश्रित भ्रम, प्रमाद, विप्रलिप्सा करणापाटवादि दूषणों की सम्भावना होने से वे स्वतंत्र प्रमाण नहीं माने जाते। अतः ईश्वर का निःश्वास-भूत अपौरुषेय, अकृत्रिम मन्त्र-ब्राह्मणात्मक वेद ही रूपविषय में चक्षु के समान धर्म-ब्रह्मविषय में स्वतन्त्र प्रमाण माना जाता है। पौरुषेय आर्ष ग्रन्थ प्रत्यक्षानुमानमूलक अथवा अपौरुषेय वेदमूलक होने से ही प्रमाण माने जाते हैं। सम्प्रदायाविच्छेद एवं अस्मर्यमाणकर्तृक होने से वेदों की अपौरुषेयता व्यक्त होती है। इस दृष्टि से धर्म, दर्शन, इतिवृत्त आदि सभी को वेदोक्त या वेदाविरुद्ध अवश्य होना चाहिये। तभी वे सब संस्कृतिपदवाच्य हो सकेंगे। प्रत्यक्षानुमान तथा उपर्युक्त शास्त्रविरुद्ध धर्म, दर्शन, इतिवृत्त वेष भूषा, भाषा, कला, सदाचार (रीति रिवाज) सभी कुसंस्कार या कुसंस्कृति ही हैं और दोषवत् त्याज्य हैं। अतएव चैत्यवन्दन, तप्तशिलारोहणादि धर्म, देहादि अहङ्कारान्तात्मवादबोधक दर्शन, पाश्चात्यों द्वारा वर्णित आधुनिक इतिवृत्त, म्लेच्छीय भाषा, भूषा कला, रीतिरिवाज आदि वैदिकों की संस्कृति नहीं हैं। धर्म के भीतर निषेकादि श्मशानान्त ४८ संस्कार आ जाते हैं। गर्भाधान, सीमन्तो-

आर्षं धर्मोपदेशञ्च धर्मशास्त्राविरोधिना।
यः तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः।

न्नयन, जातकर्म नामकरण, चूड़ाकर्म, अन्नप्राशन, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्श, पूर्णमास, चातुर्मास्य, ज्योतिष्टोमादि श्रुति, स्मृति, पुराण, तन्त्रादिप्रोक्त विविध कर्म-कलाप, विविध उपासनाएँ ज्ञान, ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, संन्यास आदि सभी आश्रम तथा तदुचित ज्ञान, कर्मोपासनादि सभी धर्म हैं। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वोत्तर मीमांसा आदि दर्शनों, रामायण, भारत, पुराण, तन्त्रागमादि विविध धर्मग्रन्थों द्वारा कर्म, उपासना (योगाभ्यास), तत्त्वज्ञान के विविध सोपान वर्णित हैं। चतुर्दश विद्या, चतुःषष्ठि कलादि सब उसी के उपोद्बलक हैं। काव्य, सङ्गीत, शिल्प, चित्रादि तथा विभिन्न वेषभूषा, भाषा आदि भी परम्परया धर्म उपासना एवं तत्त्व-ज्ञान में ही पर्यवसित हैं। सर्वात्मदर्शन अनेक भेद भिन्न भगवद्भक्ति, योगाभ्यास ऋतम्भरा प्रज्ञा, निर्विकल्प समाधि, पातिव्रत्य, वैधव्य, सतीत्व धर्म, पितृभक्ति, मातृस्नेह, पुनर्जन्मवाद, अवतारवाद, निष्कामकर्मयोग, त्यागनिष्ठा, पतिसहगमन आदि भारतवर्ष की अपनी निजी विशेषताएँ हैं। भारत के धर्म, दर्शन, व्याकरण, साहित्य, शिल्प आदि भी अनुपम हैं। एक एक की व्याख्या में बड़े बड़े ग्रन्थ हैं। संक्षेप में प्रत्यक्षानुमान तथा आगमगम्य सभी सम्यक् कृति, आधार, विचार तथा तदुपयोगी तत्फल-भूत वस्तुएँ संस्कृतिशब्दार्थनिविष्ट हैं।

यद्यपि वस्तु स्थिति यही है कि सत्य में भेद नहीं, सत्य सबके लिये समान ही होता है, गणित के नियम सब के ही लिये समान हैं। जैसे रज्जु में रज्जुरूप एक ही ज्ञान यथार्थ होता है, उसमें सर्प, धारा, माला आदि अनेक ज्ञान अयथार्थ ही होते हैं, वैसे ही धर्म, संस्कृति तथा आत्मयाथात्म्य एक ही ढङ्ग का हो सकता है, उसमें विशेषण अनावश्यक है। इसी दृष्टि से जैमिनि की धर्ममीमांसा में केवल 'अथातो धर्मजिज्ञासा' कहा गया है। जैसे हिन्दू सत्य, मुस्लिम सत्य यह भेद नहीं किया जा सकता, वैसे ही हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म आदि भेद नहीं किया जा सकता। परन्तु फिर भी जैसे सत्य मानने की कोई कसौटी होती है, वैसे ही धर्म और ब्रह्मात्मादि जानने की भी कोई कसौटी होनी ही चाहिये। यदि कुछ लोग अनादि अपौरुषेय वेद को कसौटी मानते हैं तो कुछ लोग अपने अपने अन्य धर्मग्रन्थों को कसौटी मानते हैं। इसीलिए उनमें भेदकल्पना भी अनिवार्य हो जाती है। वैसे तो यदि अनादि, अनन्त प्रपंच का परमेश्वर एक है, तो उस का विधान भी एक ही सा होना ठीक है। फिर भले ही देश काल परि-स्थिति भेद से उसमें अवान्तर भेद हो। अतः उस वैदिक विधान के अनुसार धर्म, संस्कृति तथा आत्मा की एकरूपता होनी ठीक ही है। तथापि जब किसी भी तरह अनेक धर्मग्रन्थों, धर्मों, संस्कृतियों के भेद चल पड़े हैं, तब वैदिक संस्कृति में भी विशेषण लगाना चल पड़ा। इस रीति से धर्म, संस्कृति आदि सत्य की भाँति अविभाज्य रहने पर भी जब तक उनका सर्वमान्य एक आधार सिद्ध न हो जाए, तब तक अनुभव सिद्ध भेद का अपलाप करना अनुचित है। सर्वमान्य आधार निश्चित होने के पहले भले ही

धर्मेणैव जगत् सुरक्षितमिदं धर्मोधराधारकः।
धर्माद् वस्तु न किञ्चिदस्ति भुवने धर्माय तस्मै नमः॥

स्वाभिमत आधार के अनुसार किन्हीं विशिष्ट विचारों, आचारों तथा सत्य तत्त्वों को संस्कृति कहें, परन्तु वह अन्य को मान्य नहीं हो सकती।

प्रत्यक्षानुमानगम्य पदार्थों में भी यद्यपि मतभेद रहता है, फिर भी उनमें बहुत अंशों में एकता हो सकती है। परन्तु आगमगम्य अर्थों में अधिक कठिनाई पड़ती है, क्योंकि चक्षुरादि प्रमाणों के समान आगम अविप्रतिपन्न और एकरूप नहीं हैं। कुछ लोग आगम को मानते ही नहीं, कुछ लोग आप्तवचन आगम को मानते हुये भी आप्त अनाप्त के सम्बन्ध में विप्रतिपन्न होते हैं। जो लोग ईश्वरीय वेदादि शास्त्रों के विश्वासी और तदर्थ निर्णय की समान पद्धति के विश्वासी हैं, उनके लिये अवश्य ही संस्कृति एक ही और सर्वदा, सर्वथा, सर्वत्र एक ही है। देश काल परिस्थिति भेद से उसकी भिन्नता भी एकता के अन्तर्गत ही होती है। फिर वहाँ प्राचीन, अर्वाचीन, भारतीय, चीनी, ईरानी, सोवियट या हिन्दू, मुस्लिम आदि विशेषण उपयुक्त नहीं हैं।

कुछ लोग देश के आधार पर संस्कृति का भेद मानते हैं, परन्तु आधुनिक राजनीतिक दृष्टि-कोण से सीमाएँ बदलती रहती हैं। परन्तु उनकी अपेक्षा धर्मादिमूलक जातिव्यवस्था कुछ स्थिर होती ही है। यदि भारत में रहने वाले सब लोगों को हिन्दु संस्कृति या भारतीय संस्कृति मानने को बाध्य किया जाए, तब तो पाकिस्तान में रहने वालों को इस्लामी संस्कृति या पाकिस्तानी संस्कृति मानने को बाध्य किया जा सकता है। इस तरह हिन्दू पाकिस्तान या इङ्गलैण्ड आदि में रहकर अपनी संस्कृति का पालन न कर सकेगा।

कुछ लोग 'विश्वसंस्कृति' का नाम लेते हैं, परन्तु उसका आकार, लक्षण, प्रमाण वे नहीं बतला सकते। विश्व में मानव, अमानव सबकी संस्कृति का नाम लेना है, तो भी अनुगत लक्षण होना ही चाहिये। 'विश्वमानव संस्कृति' कहना हो तो भी अर्वाचीन प्राचीन सर्वत्र शास्त्रों ने तो आहार निद्रा, भय, मैथुन नर, वानर, मानव, दानव सबका बराबर कहा है, धर्म ही मानव की विशेषता बतलायी है। फिर तो धार्मिकता ही 'मानवी संस्कृति' है और उस धार्मिकता का एक आधार हो, तो एक ढंग की धार्मिकता होगी। आधार भिन्न हो। तो धार्मिकता भी भिन्न होगी और इसी भेदाभेद मे संस्कृति का भी भेदाभेद होगा।

बहुत से लोग प्राचीन संस्कृति का आदर करते हैं, बहुत से नवीन संस्कृति का ही सम्मान करना चाहते हैं बहुत से दोनों का समन्वय करना चाहते हैं, बहुत से केवल वैज्ञानिक संस्कृति को ही महत्त्व देना चाहते हैं। इन सब लोगों की दृष्टि में लौकिक उन्नति, विविध साधन-सम्पन्नता, संघटन, साम-ञ्जस्य एवं शान्तिप्रियता ही संस्कृति है। इसी विशेषता को वे जिस देश, जिस काल या जिन साधनों से समझते हैं, उन उन देश, काल, साधनों के नाम से संस्कृति को विशेषित करते हैं। जिस से चिढ़ है,

---

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥ —मनुस्मृति